समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र
मार्च २००४ • वर्ष ५४ • अंक ३ • एक प्रति १० रुपए • वार्षिक १०० रुपए

इक्कीसवीं सदी की नई लोकसभा में प्रौढ़ व युवाओं का समावेश

देश की अविस्मरणीय आवश्यकता

२०२० तक भारत दुनिया का उच्चतम राष्ट्र बने

चुनावी राजनीति के अखाड़े में जो देश को समर्थ कर सकें उन्हें अपने वोट से सहयोग दें

राष्ट्रीय पदाधिकारियों का सार्वजनिक अभिनंदन

होली के उल्लास और उमंग भरे बासंती वातावरण की ५ मार्च की संध्या को फाल्गुनी फुहारों से अभिसिंचित करने हेतु हैपी क्लब, कोलकाता द्वारा स्थानीय विद्या मंदिर सभागार में दो कार्यक्रम आयोजित किए गए। कार्यक्रम के प्रथम पर्व में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का सार्वजनिक अभिनंदन किया गया। अभिनंदन किए गए पदाधिकारियों में थे सर्वश्री मोहनलाल तुलस्यान (राष्ट्रीय अध्यक्ष), नन्द किशोर जालान (निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष), सीताराम शर्मा (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष), भानीराम सुरेका (राष्ट्रीय महामंत्री), रामअवतार पोद्दार (राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री)। समारोह में अनुपस्थित रहे राष्ट्रीय पदाधिकारियों में थे सर्वश्री जयप्रकाश मूंदड़ा (महाराष्ट्र), ओंकारमल अग्रवाल (पूर्वोत्तर), नन्दलाल रूंगटा (झारखंड), जगदीश प्रसाद अग्रवाल (उत्कल) एवं बालकृष्ण गोयनका (चेन्नई)- उपाध्यक्षगण, संयुक्त महामंत्री श्री राज के. पुरोहित एवं कोषाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया।

सम्मान संवर्द्धना के दृश्य में सम्मेलन अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान का स्वागत करते हुए श्री हरिप्रसाद बुधिया एवं सम्मेलन के महामंत्री श्री भानीराम सुरेका को शॉल ओढ़ाकर अभिनंदन करते हुए विधायक श्री सत्यनारायण बजाज

कार्यक्रम का शुभारंभ सुश्री अनुष्का सुरेका द्वारा प्रस्तुत गणेश वंदना से किया गया। तत्पश्चात प्रसिद्ध उद्योगपति व पैटन के अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद बुधिया ने सभी अतिथियों को माल्य विभूषित कर व विधायक श्री सत्यनारायण बजाज ने उन्हें शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेका द्वारा अभिनंदन हेतु उपस्थित विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों से निवेदनोपरांत सभी नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का अभिनंदन मात्र अध्यक्ष श्री तुलस्यान को माल्याभिषेक कर ही किया गया। इन संस्थाओं में मुख्यत: थे तिरूपति बालाजी फाउंडेशन, पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, काशी विश्वनाथ सेवा समिति, नागरिक स्वास्थ्य संघ, कोलकाता मारवाड़ी सम्मेलन, श्री शिव शक्ति सेवा समिति, श्री हनुमान परिषद, मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, विशुद्धानन्द हास्पिटल एंड रिसर्च इंस्टिट्यूट, बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय, कुम्हारटोली सेवा समिति, वेस्ट बंगाल फेडरेशन आफ यूनाइटेड नेशन्स एसोसिएशन, डायलग सोसायटी, हावड़ा जिला मारवाड़ी सम्मेलन, श्री अग्रसेन स्मृति भवन, हार्टिकल्चर मार्निंग वाकर्स एसोसियेशन, लायन्स क्लब इंटरनेशनल, जिला ३२२बी, परचम (अलीपुर) आदि-आदि।

समारोह को सम्बोधित करते हुए सम्मेलन के अध्यक्ष श्री तुलस्यान ने कहा कि मारवाड़ी समाज न खाता न बही, मारवाड़ी जो कहे सो सही' वाली पुरानी मर्यादा कायम रखें। जहां रहते हैं जरूरतमंदों की सेवा करते रहते है ताकि वहां के लोगों की घृणा के पात्र न बनें बल्कि समरसता के अच्छे निर्वाहक बनें। मारवाड़ी समाज द्वारा विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से किए जा रहे सेवा कार्यों ने इतर समाज के सम्मुख महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है। अत: हम सभी को मारवाड़ी होने का गर्व बोध होना चाहिए। तेजी से बदल रहे समय में मारवाड़ी समुदाय एकजुट हों। एक होकर ही हम राजनीति की दशा और दिशा बदलने में कामयाब हो सकते हैं। समाज के लोग एकजुट हों यह समय की मांग है।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री बजाज ने समाज के कुछ वाकयों का उल्लेख किया जब कुछ प्रदेशों पर आक्रमणात्मक स्थिति बनी तो मात्र सम्मेलन द्वारा अविलम्ब काफी सकारात्मक कार्यवाई की गई। मुख्य अतिथि श्री बुधिया ने नये पदाधिकारियों की बड़ी जिम्मेदारी का उल्लेख करते हुए मारवाड़ी समाज की विशेषताओं से अवगत कराया।

कार्यक्रम के संयोजक हैपी क्लब के चेयरमैन श्री सुशील पोद्दार ने स्वागत भाषण दिया व श्री सुभाष मुरारका ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया। श्री राजीव पोद्दार द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया।

इस अवसर पर सम्मेलन के पूर्व महामंत्री वयोवृद्ध श्री दीपचंदजी नाहटा के अतिरिक्त ओमप्रकाश पोद्दार, राजाराम शर्मा, सांवरमल अग्रवाल, किशोरी जोशी, बालूराम सुरेका, श्यामलाल जालान, शशि देवी आदि गणमान्यों की विराट उपस्थिति रही।

कार्यक्रम के दूसरे पर्व में विराट हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जो कि देर रात तक चला। इस हास्य कवि सम्मेलन में डॉ. विष्णु सक्सेना, जानी बैरागी, बुद्धि प्रकाश दाधीचि, मोनिका हठीला, लाजपतराय विकट ने अपनी अपनी रचनाओं से श्रोताओं को हास्य सराबोर कर दिया। हास्य कवि सम्मेलन का संचालन श्री जयकुमार रूसवा ने किया।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए सम्मेलन अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान। मंचासीन दायें से महामंत्री सर्वश्री भानीराम सुरेका, उपाध्यक्ष सीताराम शर्मा, विधायक सत्यनारायण बजाज, उद्योगपति हरि प्रसाद बुधिया, संयुक्त महामंत्री रामअवतार पोद्दार एवं निवर्तमान अध्यक्ष नंदकिशोर जालान

इस अंक में

अनुक्रमणिका	३
जनवाणी	४-५
श्री सीताराम शर्मा एवं श्री भानीराम सुरेका को प्राप्त बधाइयां	६
सम्पादकीय	७
अध्यक्ष की कलम से / *श्री मोहनलाल तुलस्यान*	८
दिलीप गांधी को टिकट न मिलने का विरोध	९-१०
दहेज दिखावा पर नहीं लगा अंकुश / *श्री सीताराम शर्मा*	११
यह क्षण है आत्मनिरीक्षण का / *श्री भानीराम सुरेका*	१२
राजनीति में युवा आयें / *श्री रामअवतार पोद्दार*	१३
आत्मसमर्पित स्वयंसेवा / *पंडित रमेश मोड़ोलिया*	१४
व्यावहारिकता एवं आत्मीयता / श्री राम अग्रवाल	१४
परिचय सम्मेलन की सामाजिक उपादेयता / *श्री मुकुन्ददास माहेश्वरी*	१५
मारवाड़ी समाज : प्राथमिकताएं / श्री हनुमान प्रसाद सरावगी	१६-१७
राजस्थान और राजस्थानी समाज / *श्री रामनिरंजन शर्मा*	१८
कविता / समाज की कश्ती के मांझी / *श्री राधेश्याम शर्मा*	१८
आवश्यकता है सीएटी / एमबीए के लिए दक्षतापूर्ण तैयारी / *श्री एस.के. गुप्ता*	१९
राजस्थानी समाज में नारी / *श्री महावीर प्रसाद सुरेका*	२०
प्रशिक्षण शिविर / *श्री शिवचरण मंत्री*	२०
गुरुभाई स्वामी अखण्डानंद / श्री विवेकानंद	२१
केशव का आत्ममंथन (कविता) / डा. विष्णुकांत शास्त्री	२१
रश्मि संदेश (कविता) / श्री नरेन्द्र कुमार बगड़िया	२१

युग पथ चरण

★ बिहार, उत्कल, पूर्वोत्तर, पश्चिमबंग, उत्तर प्रदेश से प्राप्त रिपोर्टें।

★ अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन एवं मारवाड़ी युवा मंच की महत्वपूर्ण रिपोर्टें।

२२-३३

समाज विकास

वर्ष ५४ ● अंक ३

एक प्रति- १० रु.

वार्षिक- १०० रु.

समाज विकास

१. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच।
२. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक।
३. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम।
४. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम।
५. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित।
६. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक।
७. भारत के कोने-कोने में फैले हुए ९ करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।
८. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु

ग्राहक बनिये / बनाइये
लिखिये / लिखाइये

स्वत्वाधिकारी : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, १५२-बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७, फोन : २२६८-०३११ के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा इलस्ट्रेटेड इंडिया प्रेस, ७४, लेनिन सरणी, कोलकाता-७०००१३ में मुद्रित।

संपादक-नंदकिशोर जालान

ज न वा णी

इस स्तम्भ के अंतर्गत सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विषयों पर पाठकों के मतों का स्वागत है। साथ ही समाज के आंतरिक एवं गहन विषयों तथा समाज विकास में प्रकाशित सामग्री पर आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव भी आमंत्रित है। *- सम्पादक*

'समाज विकास' श्री नन्दकिशोर जालान के सम्पादन में बहुत ही सुन्दर निकल रहा है। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति का आकांक्षी हूं।

- श्री युगलकिशोर चौधरी, धनपटिया
सदस्य, बिहार प्रा.मा. सम्मेलन

जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों के सम्मान हेतु हैपी क्लब की ओर से रंग बिरंगी फुहारों से भीगा हुआ कार्यक्रम अभिनंदन समारोह एवं विराट हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया है। उक्त कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो सका, इसका हमें खेद है। होली के पावन पर्व पर हमारी ओर से आपको, श्री सुशील पोद्दार एवं नवनिर्वाचित सभी सदस्यों को हार्दिक बधाइयां।

- श्री सोम गोयनका, प्रदेश अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश. मा. सम्मेलन, कानपुर

समाज विकास निरंतर समय से मिल रहा है इसके लिए विशेष धन्यवाद। जनवरी २००४ अंक से जानकारी प्राप्त हुई कि दीपचंद नाहटा का अभिनंदन समारोह दिनांक २५ दिसम्बर २००३ को खूब धूमधाम से सम्पन्न किया गया। अभिनंदन के सफल आयोजन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं। समाज को श्री नाहटाजी जैसे कर्मठ और सेवाभावी लोगों की सशक्त जरूरत है। उनके दीर्घायु जीवन की कामना।

- श्री लक्ष्मीनारायण शाह,
राउरकेला, उड़ीसा

महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर बाबा विश्वनाथ के दर्शन लाभ हेतु वाराणसी प्रवास का मौका मिला। कोलकाता से रवानगी के दिन ही आपका (श्री सीताराम शर्मा) पत्र मिला, यह सोचकर साथ में रख लिया कि इसे पुनः पढ़कर, समझकर पत्र लिखने के लिए आपको धन्यवाद लिखूंगा।

अपने कार्यकाल में मित्रों व शुभचिन्तकों से मिले सहयोग व सद्व्यवहार को कार्यकाल की पूंजी मानना अवश्य ही खुले व बेबाक विचारों वाला दूरदर्शी व कार्यकुशल व्यक्ति ही कह सकता है। आपकी ये बातें मेरे मन को बहुत भायी और मेरे चिन्तन में भी आपके प्रति जो विचार पैदा हुए वह कलमबद्ध करने का प्रयास भर कर रहा हूं।

मैं अपनी पहचान व पहुंच के क्षेत्रों में निजी तौर पर बहुत ही कम लोगों को जानता हूं, जिन्होंने बिना किसी विरासत के केवल अपनी शक्ति, समझ और परिश्रम के बल पर मुकाम हासिल किया हो। मुकाम भी ऐसा जिस पर सभी गर्व कर सकें और जो प्रेरणादायक भी हों। अपने परिवार को सभी तरह से सेक्युर्ड कर देना ही सफलता का पैमाना नहीं है। कोलकाता में हमारे समाज के बहुत से उद्योगपति व बड़े व्यापारी मानद कॉंसल नियुक्त किये गये हैं, इनमें से कइयों को नाम व सफलता बिरासत में मिली है। मुझे जहां तक जानकारी है, आप न तो किसी बड़े औद्योगिक घराने के सदस्य हैं और ना ही कोई बहुत बड़े नामी गिरामी व्यापारी, फिर भी आज आपके पास अपने बूते से वे सभी हक और साधन मौजूद हैं जिनको लेकर ही कोई ऐसी ऐरीस्टोक्रेट जमात में अपनी पहचान और जगह बना सकता है।

मैंने निजी तौर पर भी आत्मीयता, स्नेह, आत्म सम्मान और व्यवहार कुशलता का पाठ आपसे आपके अनजाने में ही पढ़ने की कोशिश की है। विदेशी देशी राजनयिकों, बड़े अफसरों और प्लानर, साहित्यकार, लेखक, बड़ी लाइन के राजनीतिज्ञ, नामी गिरामी उद्योगपति आदि के साथ घुल मिलकर रहने वाला, विचारों का आदान-प्रदान करने वाला और इस ब्लू गलियारे में विचरण करने वाला, मैं केवल निजी तौर पर दो को जानता हूं। एक श्री अमर सिंह जिस पर केवल मैं नहीं, बल्कि कोलकाता का प्रत्येक हिन्दी भाषी युवक गर्व कर सकता है और दूसरे व्यक्ति मेरी पहुंच के दायरे में आप हैं। मैं अपनी नजर से आपके पास के दायरे को देखता हूं तो मुझे लगता है कि आपकी सफलता की राह में किये संघर्ष में इनमें से संभवतः कोई भी भागीदार नहीं रहा। आपको जिनका साथ मिला या आपने जिनसे प्रेरणा या सहयोग लिया उनको जानना मेरे वश में नहीं है। आपका एक और क्षेत्र है जिसे मैं ब्लू गलियारा कहता हूं, जो मेरी कल्पना में तो आ सकता है, लेकिन वास्तविक चिन्तन में मुझे किसी भी आकार-प्रकार का ज्ञान नहीं है। इसलिए जितने क्षण भी मुझे आपके निकट रहने का मौका मिला मैंने हमेशा अपने लिए कुछ न कुछ पाया है। कभी पाया कैसे विशिष्ट व्यक्तियों से अपनी गर्दन ऊंची करके आत्म-सम्मान के साथ बात की जाती है, कभी देखा अपने मिलने जुलने वाले लोगों से कैसे आत्मीयता से व्यवहार करके उनके मन को छूआ जाता है तो कभी जाना कि कैसे किसी संस्था की पुरानी सोच को यत्न के साथ बिना किसी को ठेस पहुंचाये नई सोच की दिशा में डाला जाता है तो कभी परखा कि कैसे प्रतिकूल परिस्थितियों में सावधानी व धैर्यपूर्वक स्थिति पर नियंत्रण रखा जा सकता है। आपके ही सौजन्य से मिले एक कार्यकाल के दौरान

जनवाणी

आपसे जो कुछ भी मैं ले सका उससे मेरे ज्ञान-कोश में बढ़ोत्तरी हुई है, भूख तो नहीं मिटी, लेकिन मैं बहुत ही खुश हूं और आपका आभारी भी हूं।

आपके जीवन का प्रत्येक लक्ष्य इसी प्रकार पूर्ण हो और मेरे जैसे और भी साधारण जन आपसे इसी प्रकार सीख पाकर लाभान्वित होते रहें यही बाबा विश्वनाथ से प्रार्थना है।

- सांवरमल अग्रवाल
राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य

जनवरी २००४ अंक मिला। सम्पादकीय पढ़ा। २१वीं सदी की परिस्थितियां निस्संदेह २०वीं सदी से अलग-थलग है। आज राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक, व्यावसायिक, स्थितियों में भयंकर बदलाव आ रहा है, इस चुनौती का सामना करने के लिए मारवाड़ी समाज को कमर कस कर सफलता के साथ सामना करना होगा। इस अंक में मुम्बई में आयोजित अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की गतिविधियों की व्यापक जानकारी मिलीं, श्री सीताराम जी शर्मा का आलेख समाज की असली तस्वीर एवं दिशा निर्देश देने वाला है। श्री मोहनलाल जी तुलस्यान का पुन: अध्यक्ष निर्वाचित होना खुशी की बात है।

अंक में श्री दीपचंद जी नाहटा के जीवन के कृतित्व, व्यक्तित्व एवं कर्मशैली के संबंध में व्यापक जानकारी मिली, यह पढ़कर खुशी हुई कि गांधीवादी विचार धारा से ओतप्रोत नाहटा जी की जीवन शैली हरेक को प्रभावित करने वाली है। यह पढ़कर भी खुशी हुई कि डा. बेंकट शर्मा को राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार से मुंबई में नवाजा गया। राजस्थानी भाषा की मान्यता के लिए भी पुरजोर प्रयास करने होंगे। अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन का विस्तार तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक में पूर्णरूप से नहीं हुआ है आशा है इसके लिए समारात्मक कदम उठाकर देश के दक्षिणी क्षेत्र में बसे प्रवासी राजस्थानी बंधुओं को भी इस संगठन से जोड़ा जायेगा।

- लक्ष्मण दान कविया,
अखिल भारतीय राजस्थानी भाषा
मान्यता संघर्ष समिति, नागौर

फरवरी २००४ अंक प्राप्त हुआ। समाज विकास के माध्यम से आपने जो जन-जन में एक नया जागरण लाने का प्रयास किया है, इसके लिए साधुवाद देते हैं। सम्मेलन के अनुरोध पर कविवर कन्हैयालाल जी सेठिया को भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से विभूषित करना एक उपलब्धि है। बसुंधरा राजे सिंधिया द्वारा समाज में आशा की किरण जगाना, समाज को गौरवान्वित करता है। महाराजा गजसिंह तथा श्री दिलीप गांधी द्वारा अधिवेशन को सम्बोधित करना समाज के लिए वरदान साबित होता है। वक्त की यह आवाज कि हमें राजनीति में अपनी पैठ जमानी चाहिए हमारी समझ से सही कदम है।

- जगदीश प्रसाद तुलस्यान
मुजफ्फरपुर (बिहार)

प्रेरक विचारों से ओतप्रोत 'समाज विकास' का फरवरी २००४ का अंक प्राप्त हुआ। प्रकाशित सामग्री पठनीय, मननीय और प्रशंसनीय है। धन्यवाद। यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई कि आप अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री पद पर निर्वाचित हुए हैं, यह आपकी बहुआयामी प्रतिभा और समाज सेवा का सम्मान है जो आपको मिलना चाहिए था। लगभग १० करोड़ मारवाड़ी भारत के विभिन्न प्रदेशों व अंचलों में बसे हुए हैं। विदेशों में भी उनकी उपस्थिति कम नहीं है। मारवाड़ी समाज की पहचान, भाषा, संस्कृति, परम्परा और आदर्शों को सुरक्षित रखने तथा समाज के सुधार और विकास के लिए परिस्थितियों के अनुसार किये गये सम्मेलन के प्रयत्न और दिशा-निर्देशन सचमुच सराहनीय है।

- गोकुलचंद शर्मा, राजगढ़, राजस्थान

भारत सरकार ने श्री कन्हैयालाल सेठिया को राजस्थानी साहित्य एवं भाषा की सेवाओं के लिए पद्मश्री से अलंकृत किया है। यह पूरे राजस्थानी समाज के लिए गौरव की बात है। अब हमारे समाज को राजस्थानी भाषा को आठवीं अनुसूची में सम्मिलित करने का प्रयास करना चाहिए। उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह जी से मेरा अनुरोध है कि राजस्थानी भाषा का गौरव बढ़ाने के लिए आठवीं अनुसूची में सम्मिलित करने की पूरी-पूरी चेष्टा जरूर करें।

- परशुराम तोदी 'पारस'
सलकिया

श्री सीताराम शर्मा का सफल बाईपास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष एवं बेलारूस के कांसल जनरल श्री सीताराम शर्मा का मुंबई के बीज कैन्डी अस्पताल में ९ मार्च को बाईपास सफल आपरेशन हुआ। उनको देखने के लिए सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान, उपाध्यक्ष डॉ. जयप्रकाश मूंदड़ा, विधायक सम्मेलन के सलाहकार श्री दिलीप गांधी, वीरेन्द्र धोका, कलकत्ता से छपते-छपते के सम्पादक श्री विश्वम्भर नेवर, ओमप्रकाश चौधरी एवं श्रवण कुमार सुरेका अस्पताल पहुंचकर स्वास्थ लाभ का हालचाल पूछा।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने उपरोक्त जानकारी दी।

श्री शर्मा स्वास्थ्य लाभ के लिए अपने घर जयपुर में अप्रैल तक रहेंगे इसकी जानकारी सम्मेलन के महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने एक प्रेस विज्ञप्ति में दी।

उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा को प्राप्त बधाई

आपके कार्यकाल में निश्चित रूप से अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विस्तार हुआ है और आपने सतत् प्रयास से सम्मेलन के लिए कोलकाता नगर के प्रमुख स्थल पर भवन निर्माणार्थ जमीन का क्रय कर एक कीर्तिमान स्थापित किया है। अपने कार्यकाल में सम्मेलन को ऊंचाइयों तक पहुंचाने का श्रेय भी आपको है जो अत्यंत सराहनीय है।

हनुमान सरावगी, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष,
राष्ट्रीय महामंत्री : अखिल भारतीय राजस्थानी मान्यता संघर्ष समिति

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष निर्वाचित होने पर हार्दिक बधाई एवं कोटिशः शुभकामनाएं। अपनी ध्येय, निष्ठा, कार्यकुशलता, सांगठनिक क्षमता एवं सुदीर्घ सामाजिक अनुभव के फलस्वरूप सम्मेलन निश्चित ही बहुआयामी प्रगति के नवीन कीर्तिमान स्थापित करेगा।

रमेश कुमार बंग, महामंत्री, आंध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन को आपने जो सेवा प्रदान की है, वह वास्तव में सराहनीय है। ये संस्था आप जैसे कर्मठ व सेवाधर्मियों की बदौलत ही अपने मुख्य उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए निरंतर अग्रसर है। मैं आशा करता हूं कि यह संस्था सफलता की नयी-नयी ऊंचाइयों को प्राप्त करती रहे व समाज में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त करने में अपनी अहम् भूमिका निभाये।

प्रह्लाद राय अग्रवाल,
राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य

सम्मेलन से मुझे जोड़ने एवं महत्वपूर्ण समितियों में मनोनीत करने में आपकी कृपादृष्टि रही है। आपके व्यक्तित्व की सादगी, सोच की विविधता एवं दूरदर्शिता, सबको साथ लेकर चलने की मानसिकता सम्मेलन की उपलब्धि रही है। आपने जिस समर्पण से सम्मेलन की गतिविधियों को आगे बढ़ाया क्या वह भूलने योग्य है।

सूर्यकरण सारस्वा,
राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य

महामंत्री श्री भानीराम सुरेका को प्राप्त बधाई

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन में महामंत्री निर्वाचित होने पर श्री भानीराम सुरेका को हमारी हार्दिक बधाई एवं कोटिशः शुभकामनाएं।

आपकी ध्येय, निष्ठा, कार्य कुशलता, सांगठनिक क्षमता एवं सुदीर्घ सामाजिक अनुभव के फलस्वरूप सम्मेलन निश्चित ही बहु आयामी प्रगति के नवीन कीर्तिमान स्थापित करेगा।

रमेश कुमार बंग, महामंत्री,
आंध्र प्रदेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के मानद महामंत्री के पद पर श्री भानीराम सुरेका को पाकर हार्दिक खुशी हुई, एतदर्थ मेरीओर से तथा बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन परिवार की ओर से बधाई स्वीकार करें।

आप द्वारा प्रेषित हास्य कवि सम्मेलन एवं अभिनंदन समारोह का दो आमंत्रण कार्ड प्राप्त हुआ। उक्त तिथि को पटना में भी हास्य कवि सम्मेलन का कार्यक्रम आयोजित है, जिसके कारण भाग लेना संभव नहीं हो पा रहा है। परस्पर सहयोग की भावना सहित,

रामावतार पोद्दार, महामंत्री,
बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

आप अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री मनोनीत हुए यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। मेरी शुभकामनाएं आपके साथ है।

विनोद अग्रवाल, राजमहल, झारखंड

जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि श्री भानीराम जी सुरेका अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन के सम्मान्नीय 'राष्ट्रीय महामंत्री' पद पर निर्वाचित हुए हैं। इस सम्मान पर सम्मेलन परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं मंगलमय शुभकामनाएं। आप जैसे समर्पित और निष्ठावान कार्यकर्त्ता को इस पद पर आसीन होना, निस्संदेह सम्मेलन की सफलता और प्रगति का सूचक है। आपका सम्मेलन के साथ न केवल बरसों का लगाव है, बल्कि साथ ही आपका अनुभव और आपकी कार्यशैली भी प्रशंसनीय है।

पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन आपके इस चयन पर हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त करते हुए आपके कार्यों में सदैव साथ चलने और सहयोग प्रदान करने का आश्वासन देता है।

ओमप्रकाश खण्डेलवाल,
महामंत्री, पूर्वोत्तर प्रा.मा. सम्मेलन

सम्पादकीय

२१वीं शताब्दी की हमारे देश की आगत नई सांसद

आगत नई सांसद के लिए वोट-पेटियों में वोट भरने की प्रक्रिया २० अप्रैल से प्रारंभ हो जायेगी लेकिन अपनी सांस रोके ता. १३-१४ मई तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी कि देश की जनता ने किस-किस नेता को उसमें बैठने का अधिकार प्रदान किया है।

चुनाव एक ऐसी प्रक्रिया होती है जिसके लिए ज्योतिसियों के अलावा अन्य कोई शत-प्रतिशत भविष्यवाणी नहीं कर सकता। लेकिन इनमें भी दो पक्ष दो तरह की बात बताया करते हैं, यानी दोनों में से एक के सिर तो सच्चाई का सेहरा चढ़ेगा ही।

सबसे बजे की बात इस बार यह है कि जैसे विवाह-शादियों के बाद तलाक व नये गठजोड़ का रिवाज आजकल चल निकला है, उसी प्रकार आज देश की राजनीतिक पार्टियां भी उस रिवाज को शोरगुल के साथ अपनाने लगी है। पुराने गठजोड़ टूट रहे हैं, नये गठजोड़ पनप रहे हैं। मनपसंद गठजोड़ नहीं मिलने पर नेताओं की बातें आती है वे सुनने लायक होती हैं जैसे उत्तर प्रदेश में एक ने कहा- 'हम उसके (कांग्रेस) पीछे भागते रहे और वह (बीएसपी) के पीछे भागती रही। आज राजनीतिक अखाड़ों में प्रेम व विरह की बातों के नगाड़े फिर मनमुताबिक साथी न मिलने पर कड़ी धमकियों की भरमार चारों ओर गूंज रही है जैसे कि पीछे भागने वाली (कांग्रेस) अब पहले उसके पीछे भागने वाले को सत्ताच्युत कर देने की धमकी देनी शुरू कर दी है।

खैर ! अपने इन तमाशों को नजर अंदाज करें। प्रमुख मुद्दा है कि अपने भारत को उन्नति के सशक्त कदमों पर कदम-कदम बढ़ाने में और देश के अन्दर की आज भी जो विकट समस्यायें हैं, उनको हल करने की दृष्टि से कौन सर्वाधिक सबल दिखाता है।

एक बृहद दृष्टि के अनुसार आज देश में दो प्रमुख राजनैतिक पार्टियां है- भाजपा एवं उनके सहयोगी (एनडीए)एवं कांग्रेस एवं उनके अनिश्चित सहयोगी। भाजपा एवं उनके सहयोगियों की यह निरंतर घोषणा कि उन्होंने देश को लगातार पांच वर्षों तक एक स्थायी सरकार दी है एवं आर्थिक वैश्वीकरण के बावजूद देश के अनेक अंचलों में प्रगति हुई तथा देश की आंतरिक आर्थिक व्यवस्था भी प्रगति की ओर निरंतर बढ़ रही है, जबकि उसके पहले लगभग ८ वर्षों में तीन प्रधानमंत्री आए और एक के बाद एक हटाये जाते रहे। दूसरी ओर उन वर्षों में श्री नरसिंह राव के हटने के बाद से कांग्रेस की जनता पर राजनैतिक पकड़ निरन्तर ढीली होती गई और प्राय: स्थिर स्तर न होने के कारण देश की जनता को इसका खामियाजा भुगतना पड़ा।

उपर्युक्त स्थिति को पलटने में कांग्रेस शासन में लीडरशिप (नेतृत्व) की जो कमी थी उसे श्रीमती सोनिया गांधी ने समझा और इस बार के संसद चुनावी दंगल में कांग्रेस के सर्वोच्च लीडर के रूप में अपने आपको उभारकर लाने में समर्थ हुई। विदेशी मूल के प्रश्न को भी हर कोशिश द्वारा नकारते हुए शेष में सोनिया जी ने राहुल गांधी को राजीव गांधी के उत्तराधिकारी के रूप में जनता के सामने एक इक्के के रूप में पेश कर डाला। यह भी प्राय: सुनिश्चित है कि राहुल की बहन प्रियंका यदि चुनाव में प्रत्याशी न भी हो तो भी वह कांग्रेस के लिए देश के कोने-कोने में प्रचार कार्य में जुटेंगी। श्री लालकृष्ण आडवाणी की 'भारत उदय यात्रा' की तरह ही सोनिया जी 'रोड शो' के रूप में देश के कोने-कोने में घूमकर कांग्रेस का प्रचार कर रही हैं। लेकिन इसमें शक नहीं कि युवा राहुल को संसद के चुनाव के लिए खड़ा कर सोनिया जी ने एक बड़ा प्वाइंट जीता है। लेकिन साथ ही यह भी प्रश्न जुड़ा हुआ है कि कांग्रेस के जो कुछ दिग्गज नेता रह गए हैं वे सोनिया जी के बदले राहुल को इस समय अपना सर्वोच्च नेता मानने को तैयार होंगे क्या? अखबार वालों ने तो कांग्रेस के बारे में यहां तक लिख दिया है- 'कांग्रेस तेरी यही कहानी, हाथों में झुनझुना और आंखों में पानी।

भारतीय जनता पार्टी ने पिछले पांच वर्षों में जो उपलब्धियां प्राप्त की है उन अनेकों में कुछ हैं जैसे- अनाज का काफी बड़ा भंडार, किसानों के लिए एक ऐसी योजना जो अकाल में भी उन्हें राहत पहुंचा सके, प्रधानमंत्री सड़क योजना, विश्व में भारत की शाख में अविश्वसनीय बढ़ोत्तरी, पड़ोसी देश पाकिस्तान को फिर एक छोटे से युद्ध में पराजित करने के बाद धीरे-धीरे उसे भारत से मित्रता की ओर बढ़ने तथा आंतकवादियों को शह न देते रहने के लिए विवश करना, देश की आर्थिक प्रगति का आंकड़ा इस वर्ष ८ प्रतिशत तक पहुंचाना, आर्थिक घाटा लगभग साढ़े चार अंक तक ले आना, नेशनलाइज्ड उद्योग समूहों में से अनेक जो वर्षों वर्षो घाटा देते रहे और आम आदमी को उसकी पूर्ति विविध टैक्सो द्वारा पूरी करते रहनी पड़ी, उन्हें सफलता के साथ बेच डालने तथा इस माइथ (Myth) को देश को स्वीकार कराने में सफलता हासिल करने कि में राज का काम उद्योग-व्यवसाय चलाना नहीं, बल्कि सुराज्य व आधुनिक युग के अनुकूल सशक्त सैन्य शक्ति प्रदान करना है, एवं संसार व्यापी ऐसी हवा चलाने में सफलता प्राप्त करना कि आज विदेशी औद्योगिक सम्राट भारत में उद्योग लगाने में उत्सुकतापूर्वक कार्यरत है, आदि-आदि।

इस सत्य को नकारा नहीं जा सकता कि इन्दिरा जी मात्र पण्डित जवाहरलाल नेहरू की पुत्री ही नहीं थीं, बल्कि उनके पी.ए. के रूप में अनेक वर्षों तक राजनीति के गुणों में पूर्ण माहिर हो गई थी जिसका अनेकों में से एक सटीक उदाहरण पाकिस्तान को युद्ध में हर तरह से मात देना और बंगलादेश को पाकिस्तान से तोड़कर अलग देश बनवा देना भी था। देश का सर्वोच्च राजनेता देश और दुनिया की राजनीति के दांव पेंच समझने में माहिर हो और देश की आन्तरिक स्थिति को सुधारने के दृष्टिकोण का धनी हो। इस युक्ति के अनुरूप नये संसद में नये सांसदों को जनता चुन कर भेज सके, यह आगत चुनाव का सबसे बड़ा मुद्दा है।

चुनाव एक ऐसा प्रकरण है जहां थैलियों का महत्व भी कम नहीं है- कब और कहां से, यह प्रश्न गौण है। इस बार तो 'इलेक्शन कमीश्नर' से कई राजनेताओं से सरकारी बकाया लाखों रुपयों का हिसाब भी मांग डाला। यह भी देखने समझने योग्य वाकया रहेगा कि इनमें कितना कैसे चुकता है एवं चुनाव के प्रत्याशियों की निजी संपत्ति एवं अन्य विषयों बावत 'आफिडेविट' कोई रंग लाती है क्या?

ज्योतिषियों की भविष्यवाणी की बात करे तो असम के जिन ज्योतिषाचार्यों ने राजीव गांधी की हत्या की भविष्यवाणी की थी एवं अनेक अन्य ज्योतिषियों के वाक्य 'इंडिया टुडे' में छपे थे, उन सब के अनुसार तो भाजपा का पलड़ा काफी भारी है। लेकिन जैसा कि ऊपर लिखा गया है कुछ ऐसे भी ज्योतिषी है, जो इसके विपरीत बात कहते हैं। लेकिन किसी ज्योतिषी ने अपने समाज की इस चुनावी दंगल में भागीदारी की भविष्यवाणी नहीं की, अत: उसके विषय में अब कहना सुनना समझ के बाहर है।

जो भी हो अपने सबों को तो उन सांसदों को चुनना है जो अपनी दृष्टि में देश की तीव्र प्रगति के रथ के सारथी हों और देश हर क्षेत्र में तेजी से कदम-दर-कदम बढ़ता जाये।

अध्यक्ष की कलम से

राजनीतिक दलों को मारवाड़ी विमुख होने की सजा दें

मोहन लाल तुलस्यान

राष्ट्रीय राजनीति में मारवाड़ी समाज का प्रतिनिधित्व बढ़े इसे ध्यान में रखते हुए हमने अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के मुंबई में आयोजित महाधिवेशन में एक प्रस्ताव पास किया था जिसमें कहा गया था कि हर राजनीतिक दल या मतवाद के अनुरूप हमें अपने समाज का राजनीतिक नेतृत्व तैयार करना होगा ताकि हम अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ सकें। यह भी कहा गया था कि हमें राजनीतिक नेतृत्व ऐसा चाहिए जो जनता के प्रति समर्पित हो, अपने आदर्शों और सिद्धांतों में आस्थावान हो, ईमानदार हो एवं सर्वोपरि दूरदर्शी व सामाजिक सोच का धनी हो। ऐसा प्रस्ताव पास करने के पीछे हमारा उद्देश्य था मारवाड़ी समाज में राजनीतिक चेतना पैदा करना ताकि हम अपने अधिकारों के लिए परमुखापेक्षी न रहें। वस्तुत: राजनीति के संचालन में मारवाड़ी समाज की अहम् भूमिका होते हुए भी राजनीति की मुख्यधारा से यह समाज कटा रहता है। राजस्थान के बाहर पूरे देश में जिस अनुपात में मारवाड़ियों की आबादी है उस अनुपात में राजनीतिक नेतृत्व का सर्वथा अभाव है। हालांकि मुख्यधारा की राजनीति में जो रहे हैं वे पूरी गरिमा के साथ रहे हैं। स्वातंत्रोत्तर भारत में मारवाड़ी समाज के जिन कतिपय राजनेताओं ने राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति अर्जित की उनमें सेठ गोविन्ददास मालपाणी, बरारकेशरी बृजलाल बियाणी, डॉ. राममनोहर लोहिया प्रमुख हैं। पश्चिम बंगाल में ईश्वरदास जालान, आनन्दीलाल पोद्दार, बसन्त कुमार मुरारका, प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका, रामकृष्ण सरावगी आदि ने राजनीति में समाज का प्रतिनिधित्व किया। देवकीनंदन पोद्दार व राजेश खेतान लम्बे समय तक विधायक रहे। अन्य राज्यों में भी मारवाड़ी राजनीति में रहे हैं एवं कभी-कभार महत्वपूर्ण पदों पर अधिष्ठित हुए हैं।

लेकिन इससे मारवाड़ियों की राजनीतिक हैसियत कभी नहीं बन पाई। राजनीतिक हैसियत बनाने के लिए समाज का सांगठनिक दृष्टि से मजबूत होना एवं राजनीतिक दृष्टि से जागरूक होना जरूरी होता है। चूंकि मारवाड़ी मूलत: व्यापार-वाणिज्य से या नौकरी से जुड़े रहे हैं एवं अपने में सिमटे रहे हैं इसलिए राजनीति के दांव पेंच एवं मतवादों से उनका लगाव कम रहा है, लेकिन इसके अपवाद भी हैं। महाराष्ट्र में पिछले वर्षों में मारवाड़ी समाज ने सांगठनिक एवं राजनीतिक दृष्टि से अपने को मजबूत किया जिसके परिणामस्वरूप विधानसभा में समाज के प्रतिनिधियों की संख्या बढ़ी। हर दल से चुने गये इन प्रतिनिधियों ने अपने कार्यों से समाज का मान बढ़ाया। महाराष्ट्र से चुनकर मारवाड़ी समाज के राजनेता संसद में भी पहुंचे। भंग लोकसभा में दिलीप गांधी महाराष्ट्र के अहमदनगर लोकसभा सीट से जीतकर संसद में पहुंचे थे। बाद में ये केन्द्रीय जहाजरानी राज्यमंत्री बने। मंत्रित्व काल में उनके कार्यों की सराहना हुई। जब हम मुंबई अधिवेशन में भाग लेने पहुंचे तो हमने दिलीप गांधी की लोकप्रियता का आलम देखा। हर उम्र और हर वर्ग के लोगों में उनकी पैठ ने हमें आश्वस्त किया कि श्री गांधी मारवाड़ी समाज के सच्चे प्रतिनिधि के रूप में भविष्य में राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित होंगे। वे सम्मेलन की कार्यकारिणी में तो थे ही, विशेष सलाहकार की भूमिका में भी आ गये। उन जैसे समाज में जाज्वल्यमान नक्षत्रों के सामने रखकर ही हमने समाज को राजनीतिक रूप से चेतना सम्पन्न करने का मन बनाया था।

पर इसी बीच जब लोकसभा के लिए उम्मीदवारों की घोषणा हुई तो हमने देखा कि श्री गांधी की उम्मीदवारी खारिज की जा चुकी है। जिस दल के लिए श्री गांधी ने इतना कुछ किया, परम्परागत कांग्रेस की सीट छीनकर भाजपा को दिलायी उसी पार्टी का उनके प्रति यह बर्ताव सिर्फ उन्हें नहीं हमें भी मर्माहत कर गया। हम भाजपा के राष्ट्रीय पदाधिकारियों से यह जानना चाहेंगे कि श्री दिलीप गांधी को किस गलती की सजा दी गई है? क्या मंत्रित्व काल में उनसे कोई ऐसा काम हुआ है जो मंत्रालय की गरिमा को ठेस पहुंचाने वाला हो? क्या उनके निर्वाचन क्षेत्र की जनता में उनके प्रति नाराजगी है? क्या उन पर किसी घोटाले का आरोप है?

अगर है तो उसका खुलासा हो ताकि हम सत्य से अवगत हो सकें और अगर नहीं तो फिर यह बताया जाए कि जब तमाम घोटालेबाजों को उम्मीदवार बनाया गया है तो फिर एक ईमानदार, कर्त्तव्यनिष्ठ, लोकप्रिय, मारवाड़ी समाज के राष्ट्रीय व्यक्तित्व को उम्मीदवार क्यों नहीं बनाया गया? हम मारवाड़ी किसी एक राजनीतिक दल के प्रति आस्थावान हैं ऐसा नहीं है। विभिन्न प्रदेशों में रहते हुए हम विभिन्न राजनीतिक मतवादों के पोषक हैं। हम तन-मन-धन से राजनीतिक दलों की सहायता करते हैं पर बदले में हमें क्या मिलता है? उपेक्षा, तिरस्कार और उत्पीड़न के लिए अभिशप्त हम मारवाड़ियों को इस लोकसभा चुनाव में यह फैसला करना है कि कौन हमारे प्रगति का साथी है, कौन हमारी राह में अवरोधक है। कोई भी राजनीतिक दल जो हमें पूरा सम्मान नहीं देता, हमारे समाज के राजनेताओं को अवसर प्रदान नहीं करता वह हमारे मत का अधिकारी नहीं हो सकता।

मैं यह चाहूंगा कि मारवाड़ी समाज के सम्माननीय बंधु समाज के हित में विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों पर दबाव बनायें और यह तय करें कि मारवाड़ी राजनीतिक नेतृत्व को पूरे सम्मान के साथ प्रांतों एवं केन्द्र में स्थान मिले। यदि कोई भी पार्टी हमारी उपेक्षा करती है, मारवाड़ी उम्मीदवार को टिकट से वंचित करती है तो उसका बहिष्कार करें। आज की राजनीतिक परिस्थिति में तभी हमारा अस्तित्व बना रह सकेगा जब हम 'वोट' में महत्वपूर्ण कारक होंगे।

हम ११ करोड़ मारवाड़ी क्या यह नहीं कर सकते कि एकजुट हो सभी राजनीतिक दलों को अपने सम्मुख झुकने को बाध्य कर दें?

श्री दिलीप गांधी को टिकट न दिये जाने का विरोध

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष मोहनलाल तुलस्यान ने दिनांक २२.३.२००४ को प्रधानमंत्री, उपप्रधानमंत्री व भारतीय जनता पार्टी के सभी वरिष्ठ नेताओं को पत्र लिखकर जानना चाहा है किन कारणों से सम्मेलन के सलाहकार व पूर्व केन्द्रीय मंत्री दिलीप गांधी की उम्मीदवारी खारिज की गई है।

अपने पत्र में श्री तुलस्यान ने लिखा है कि अगर श्री गांधी ने पार्टी विरोधी काम किया हो, मंत्रित्व काल में अपने अधिकारों का अतिक्रमण किया हो या किसी प्रकार के घोटाले में लिप्त रहे हों तो इसका खुलासा किया जाए ताकि देश की जनता सत्य से वाकिफ हो सके। श्री तुलस्यान ने कहा कि अगर ऐसा नहीं किया जाता है तो भाजपा को इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। सिर्फ महाराष्ट्र ही नहीं पूरे भारत में प्रवासी मारवाड़ियों की भारी आबादी है और सबमें भाजपा के इस फैसले से रोष है। अगर भाजपा श्री गांधी को टिकट नहीं देती है तो मारवाड़ी समाज में भाजपा विरोधी मुहिम पनपेगी।

उन्होंने कहा कि यह आश्चर्य का विषय है कि जब घोटाले में लिप्त मंत्रियों, नेताओं को टिकट दिया गया है तो एक ईमानदार, कर्त्तव्यनिष्ठ, लोकप्रिय मारवाड़ी उम्मीदवार को टिकट न देने की क्या वजह है?

श्री तुलस्यान ने स्पष्ट किया है कि सम्मेलन का किसी भी राजनीतिक मतवाद से कोई लेना-देना नहीं है पर समाज के जो लोग राजनीति में हैं और अच्छा काम कर रहे हैं, चाहे वह किसी भी पार्टी में हों, उनको प्रोत्साहित करना सम्मेलन की जिम्मेवारी है।

श्री तुलस्यान ने कहा कि उनके पास देश के विभिन्न हिस्सों व सम्मेलन की शाखाओं से पत्र, फैक्स व फोन आ रहे हैं अब भाजपा के राष्ट्रीय पदाधिकारियों पर यह निर्भर करता है कि वे क्या फैसला लेते हैं?

ज्ञातव्य है कि इसके पूर्व सम्मेलन के महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने भी इस घटना का तीव्र प्रतिवाद करते हुए भाजपा आलाकमान एवं पदाधिकारियों को पत्र दिया है।

श्री वेंकैया नायडू
अध्यक्ष- भारतीय जनता पार्टी
नई दिल्ली

दिनांक : २२.३.२००४

महोदय,
आशा है स्वस्थ, सानन्द होंगे।

आसन्न लोकसभा चुनाव के मद्देनजर आपकी पार्टी स्तर पर विकास कार्यक्रमों को बढ़ावा देने के सदुद्देश्य से चुनावी मैदान में उतरी है। आपके आदर्शों, सिद्धांतों एवं कार्य योजनाओं से देश को जो लाभ हुआ है या होने की संभावना है इस पर बहस न करके हम चाहते हैं कि वही पार्टी सत्ता में आये जो जनकल्याण के कार्यों को करने की कोशिश करे।

पिछले शासनकाल में आपकी पार्टी ने सत्ता में रहते हुए जो कुछ भी किया उसका परिणाम इस चुनाव के बाद निकलेगा। हम आशा करते हैं कि आपको जन-समर्थन मिले और आप पुन: सत्ताशीन हों। पर सत्ता को बनाए व बचाए रखने में जिन लोगों ने अपनी अहम् भूमिका निभाई अगर उनको यथोचित सम्मान नहीं मिला तो क्या आप अपने लक्ष्य तक पहुंच सकते हैं? हमारा संकेत महाराष्ट्र के अहमदनगर सीट से सांसद रहे श्री दिलीप गांधी की ओर है। श्री गांधी हमारे सम्मेलन के सलाहकार हैं। हमने देखा है कि पार्टी के प्रति उनका समर्थन उच्च कोटि का रहा है। सांसद के रूप में और फिर जहाजरानी राज्यमंत्री के रूप में उन्होंने हरसंभव यह कोशिश की कि वे अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचकर पार्टी के आदर्शों व सिद्धांतों का प्रचार करें।

अपने निर्वाचन क्षेत्र की जनता से किए वायदों को निभाने में भी वे पूरी ताकत से जुटे रहे। हमारी जानकारी में वे कभी किसी प्रलोभन में नहीं आये। यहां तक कि उनके विरोधियों ने भी कभी उन पर किसी प्रकार का लांछन नहीं लगाया। आपको याद होगा अहमदनगर परम्परागत रूप से कांग्रेस की सीट रही है जिसे भाजपा को दिलाने का श्रेय श्री गांधी को है। श्री गांधी युवा हैं, ऊर्जावान हैं सामाजिक सोच के धनी हैं हर वर्ग, हर उम्र और हर समाज में उनकी लोकप्रियता रही है। हालांकि आपकी पार्टी के शासनकाल में कई घोटालें चर्चा में रहे पर श्री गांधी पर कभी कोई आरोप नहीं लगा। एक ऐसे सच्चरित्र एवं निष्ठावान व्यक्ति को इस बार उम्मीदवार न बनाना हमारी समझ के परे हैं। हमें लगता है इसके पीछे पार्टी के ही कतिपय नेताओं की दुरभिसंधि है। हम आपसे विनम्र अनुरोध करते हैं कि श्री गांधी की उम्मीदवारी पर पुनर्विचार करें। आपकी जानकारी के लिए बता दें कि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन राजस्थान के बाहर रह रहे प्रवासी मारवाड़ियों की प्रतिनिधि संस्था है। यानि ७ करोड़ मारवाड़ी देश के विभिन्न

भागों में रह रहे हैं एवं वहां के विकास में अपना योगदान दे रहे हैं। महाराष्ट्र में मारवाड़ी समाज की बड़ी आबादी का वास है। यह कोई छुपा तथ्य नहीं है कि महाराष्ट्र के विकास में मारवाड़ी समाज का क्या योगदान है ?

आपको यह अधिकार है कि आप पार्टी की ओर से किसे उम्मीदवार बनाएंगे, किसे नहीं, लेकिन एक ऐसे उम्मीदवार को दरकिनार करना कहां तक न्यायोचित है जो पूर्णरूपेण पार्टी के आदर्शों, सिद्धांतों के प्रति समर्पित हो, जन कल्याण जिसकी प्राथमिकता हो एवं लोभ-लालसा की भावना से जो दूर रहा हो। श्री गांधी के उम्मीदवार नहीं बनाये जाने से सिर्फ अहमदनगर ही नहीं पूरे देश के मारवाड़ियों में रोष है। लोग यह कह रहे हैं कि जब घोटालेबाजों, हिस्ट्रीशीटरों को पार्टी अपने फायदे के लिए उम्मीदवार बना रही है तो एक ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ, सामाजिक भावना से ओतप्रोत व्यक्ति को उम्मीदवार नहीं बनाये जाने के पीछे जरूर कोई षड्यंत्र है। आप जानते ही हैं कि मारवाड़ी समाज का व्यापार-वाणिज्य के क्षेत्र में ही नहीं, धार्मिक, आध्यात्मिक व सामाजिक क्षेत्र में क्या अवदान है। आपकी पार्टी को सत्ता तक पहुंचने में मारवाड़ी समाज की क्या भूमिका है इससे भी आप अवगत हैं।

इसलिए आप पर निर्भर है कि आप या तो श्री गांधी को टिकट न देने का उचित कारण बताएं अथवा उन्हें टिकट प्रदान करें। मारवाड़ियों की भावना से खिलवाड़ करने की कोशिश आपके सत्ता तक पहुंचने की राह में अवरोधक न बने इसके लिए आपके फैसले की प्रतीक्षा है।

आपके सक्रिय सहयोग की कामना के साथ,

आपका

मोहनलाल तुलस्यान
राष्ट्रीय अध्यक्ष

प्रभात खबर 17 मार्च, 2004 बुधवार

दिलीप गांधी को टिकट न देने का विरोध

दिलीप गांधी को टिकट नहीं देने का विरोध

कोलकाता, २२ मार्च (न. प्र.)। अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष मोहनलाल तुलस्यान ने प्रधानमंत्री, उपप्रधानमंत्री व भारतीय जनता पार्टी के सभी वरिष्ठ नेताओं को पत्र लिखकर पूर्व केन्द्रीय मंत्री दिलीप गांधी को टिकट नहीं देने का विरोध किया है। अपने पत्र में उन्होंने मांग की है कि यदि दिलीप गांधी ने कोई पार्टी विरोधी काम किया हो या घोटालों में लिप्त पाये गये हों तो उसका खुलासा किया जाना चाहिए अन्यथा मारवाड़ी समुदाय में भाजपा विरोधी मुहिम पनपेगी। उन्होंने आश्चर्य व्यक्त किया कि जब घोटालों में लिप्त मंत्रियों ... को टिकट दिया गया है तो गांधी ...

छपते छपते गुरुवार, 18 मार्च

दिलीप गांधी को टिकट न देने का विरोध

कोलकाता, 17 मार्च (संवाददाता)। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री ... ने केन्द्रीय जहाजरानी राज्यमंत्री श्री दिलीप गांधी को भारतीय जनता पार्टी द्वारा टिकट न दिये जाने का कड़ा विरोध किया है। ...

दिलीप गांधी की तरफ...

दिलीप गांधी को टिकट न देने का विरोध

दैनिक विश्वमित्र कोलकाता, १७ मार्च, २००...

दिलीप गांधी को टिकट न देने का विरोध

दिलीप गांधी को टिकट नहीं दिए जाने की निंदा

छपते छपते गुरुवार, 18 मार्च

दिलीप गांधी को टिकट न देने का विरोध

छपते छपते, कोलकाता, गुरुवार, 18 मार्च 2004

दिलीप गांधी को टिकट न देने का विरोध

दहेज-दिखावा पर नहीं लग सका अंकुश

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन एक बहुत बड़ा संगठन है। इसके पांव देश की सरहदों के बाहर भी पसरे हुए हैं। कहने का आशय यह है कि इस संगठन द्वारा उठाए गए मुद्दों और कार्यक्रमों की गूंज विदेशों तक भी पहुंची है। मारवाड़ी सम्मेलन के मुख्य रूप से तीन उद्देश्य रहे- सुरक्षा, समाज सेवा और समरसता। इन तीन मुख्य उद्देश्यों में से समाज सुधार का कार्यक्रम बहुत ही व्यापक है। सम्मेलन ने समाज सुधार की दिशा में अनेक सफलताएं हासिल की हैं। पिछले ६७-६८ सालों में सम्मेलन ने समाज सुधार व सामाजिक परिवर्तन के क्षेत्र में कई उतार-चढ़ाव देखे और कई क्षेत्रों में कामयाबियां हासिल कीं। लेकिन समाज सुधार की प्रक्रिया निरंतर चलने वाली एक शाश्वत प्रक्रिया है। पर्दा प्रथा खत्म करने, कन्याओं को शिक्षा का अधिकार दिलाने, नारी को समाज में बराबर की जगह दिलाने और विधवा विवाह जैसे मसलों पर मारवाड़ी सम्मेलन ने उल्लेखनीय सफलता अर्जित की है, जो जगजाहिर है। एक बात यहां समझने की है कि समाज सुधार की दिशा में किए गए प्रयासों का परिणाम वर्षों बाद दिखाई पड़ता है। मसलन किसी भी सामाजिक बुराई के खिलाफ अगर आज आन्दोलन शुरू किया जाय और यह अपेक्षा रखी जाए कि इसके नतीजे तत्काल हासिल हो जायेंगे, तो ऐसा सोचना उचित नहीं है। एक तरफ जहां कई मोर्चों पर सम्मेलन ने सफलता प्राप्त की वहीं दूसरी तरफ कुछ मसलों पर सफलता नहीं मिल सकी। दहेज, दिखावा और आडम्बर की बढ़ती हुई प्रवृत्ति पर सम्मेलन ने अंकुश लगाने की तरह-तरह से पुरजोर कोशिश की है लेकिन यह एक ऐसा क्षेत्र रहा है, जिसमें पूर्ण कामयाबी नहीं मिल सकी। हालांकि प्रयास आज भी जारी है और आगे भी जारी रहेंगे।

गिरते सामाजिक, नैतिक मूल्यों के कारण लोगों को समाज का भय नहीं रह गया, अर्थ की प्रधानता बढ़ गयी, यही वजह है कि दहेज, दिखावा जैसे मसलों पर सम्मेलन की बात लोगों पर असर नहीं कर रही है। सम्मेलन मूलतः एक वैचारिक मंच है। दहेज, दिखावा जैसे मसलों पर बातचीत होती है, चिन्ता व्यक्त की जाती है और विचारों के माध्यम से विरोध किया जाता है, जो अपने आप में शुभ संकेत माना जाता है। बहुत-सी कुरीतियों पर अंकुश लगा, लेकिन समाज में बढ़ते हुए तलाक के मामले, टूटते परिवार, बुजुर्गों के प्रति बढ़ता असम्मान तथा संचय की प्रवृत्ति में आयी कमी जैसे मुद्दों को सम्मेलन अपने लिए चुनौती मानता है और इसके खिलाफ वैचारिक विरोध का सिलसिला जारी रखे हुए है। दरअसल आर्थिक तरक्की और भौतिकवाद के बढ़ते प्रभाव की वजह से समाज में तरह-तरह की कुरीतियां जन्म लेती हैं, जिन पर अंकुश लगाने के लिए हम सभी को मन से प्रयास करना होगा। लेकिन यह तभी सम्भव होगा जबकि हमारा समाज अपने संस्कारों, मर्यादाओं और परंपराओं से जुड़ा रहेगा। महानगर में बढ़ते हुए धार्मिक अनुष्ठानों राजनीति में धर्म का प्रवेश और हिन्दुत्व की चर्चा चरम पर पहुंचने से धार्मिक हलचल जरूर पैदा हुई है लेकिन सभी धार्मिक आयोजनों के पीछे विशुद्ध धार्मिक भावना ही नहीं रहती, बल्कि कुछ अन्य कारण भी होते हैं मसलन धार्मिक अनुष्ठानों के आयोजक इसके माध्यम से प्रतिष्ठा पाने की भी लालसा रखते हैं। वहीं दूसरी तरफ दुर्भाग्यवश कुछ लोगों के लिए धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन धंधा भी बन गया है। लेकिन एक ऐसा वर्ग भी है। जो भागवत् चर्चा से लाभ भी उठाता है।

> बेलारूस गणराज्य के कांसल जनरल व सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष **श्री सीताराम शर्मा** कहते हैं कि समय काफी बदल चुका है और बदले हुए समाज में आदमियत की परिभाषा बदल गई है। आज के समय में जैसे-तैसे पैसा कमा लीजिए, समाज सम्मान करने लगेगा। लेकिन ऐसी बात पहले नहीं थी।

भारत के न्यायप्रिय, असाधारण वीर विक्रमादित्य अपने दरबार में अपने सामने सदा एक श्लोक लिखा हुआ रखते थे-
प्रत्यहं प्रत्यवेक्षेत नरश्चरितमात्मनः।
किन्नु मे पशुभिस्तुल्यं, किन्नु सत्यपुरुषैरिद॥
''तेरे इस बहुमूल्य जीवन का जो दिन व्यतीत हो रहा है, वह पुनः लौटकर नहीं आयेगा। अतः प्रतिदिन यह चिन्तन कर कि आज का दिन गुजरा वह पशुवत् गुजरा अथवा सत्पुरुष की तरह गुजरा।''
नित्य प्रति सिंहासन पर आरूढ़ होने से पूर्व वे इन पंक्तियों पर गम्भीर चिन्तन करते थे।

यह क्षण है आत्म निरीक्षण का

भानीराम सुरेका, महामंत्री,
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन् के १९वें राष्ट्रीय अधिवेशन के बाद राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने मुझे राष्ट्रीय महामंत्री के रूप में मनोनीत किया है। इससे पहले लगातार दो कार्यकाल में श्री सीताराम शर्मा इस पद पर थे। श्री शर्मा सम्मेलन के अलावा, वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ यूनाइटेड नेशन्स एसोसियेशन के निदेशक व बेलारूस के मानद कौंसुल जनरल हैं। इस तरह अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के व्यक्ति का उत्तराधिकारी मनोनीत कर मेरे ऊपर जिम्मेवारी का दोहरा बोझ लाद दिया गया है। एक तरफ राष्ट्रीय स्तर पर सम्मेलन को गतिशील बनाना एवं दूसरी ओर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हो रहे वैचारिक परिवर्तनों के समानान्तर सम्मेलन की भूमिका तय करना। मैं यह जानता और मानता हूं कि सम्मेलन के प्रत्येक पदाधिकारी, कार्यकारिणी सदस्य व शुभचिंतकों के प्रत्यक्ष और परोक्ष मदद के बिना मैं अपनी जिम्मेवारी का निर्वाह सुचारू रूप से नहीं कर सकता। खासकर सम्मेलन के वयोवृद्ध सदस्य, भीष्म पितामह के सदृश सम्मेलन को अपनी ऊर्जा और तपस्या से सींचने वाले श्री नंद किशोर जालान का सुझाव मेरे लिए खास अहमियत रखता है।

सम्मेलन अखिल भारतीय स्तर पर प्रवासी मारवाड़ियों की प्रतिनिधि संस्था के रूप में प्रतिष्ठित रहा है एवं मूलतः विचारों के माध्यम से समाज का मार्गदर्शन करना सम्मेलन का प्रमुख कार्य रहा है। सम्मेलन ने समाज को ६९ वर्षों से वैचारिक स्तर पर संचालित किया है।

अन्य समाजों की तरह मारवाड़ी समाज में भी हर तरह के लोग हैं। यह महज भ्रम है कि सभी मारवाड़ी व्यापारी हैं या आर्थिक रूप से सुदृढ़ हैं। सच्चाई तो यह है कि इस समाज में भी नौकरीपेशा, मेहनत-मशक्कत करने वाले मजदूर ही अधिक हैं।

समाज का सिंहावलोकन करने से पता चलता है कि समाज में शिक्षा का प्रचलन बहुत अधिक बढ़ा है। सिर्फ लड़के ही नहीं लड़कियां भी विभिन्न पाठ्यक्रमों में उच्च स्थान पाकर समाज की गरिमा बढ़ा रही हैं। कम्प्यूटर एवं सूचना तकनीक के क्षेत्र में समाज के युवक-युवतियों ने अप्रत्याशित सफलता हासिल की है। बुद्धिजीवी, वैरिस्टर, प्रशासनिक अधिकारी, राजनीति सभी क्षेत्र में समाज के लोग स्थापित हैं। यदि मारवाड़ी समाज को गौरवपूर्ण स्थान दिलाना है तो हमें व्यापक तैयारी करनी होगी। सिर्फ विचारों के बल पर नहीं अपितु कार्यों के द्वारा हमें अपनी स्थिति सुदृढ़ करनी होगी।

सामाजिक कार्य करने के लिए संस्थाओं की स्थापना तो हुई है पर वास्तविक सच्चाई यह है कि ये संस्थाएं जन कल्याण के कार्यों में सिफर साबित हुई हैं। महानगरों में तो सामाजिक, सांस्कृतिक संस्थाओं की भरमार है पर समाज पर इनका प्रभाव कहीं नहीं दिखता। ऐसा इसलिए है कि संस्थाओं में पदों को हथियाने के लिए होड़ाहोड़ी मची रहती है। काम से अधिक नाम को महत्व दिया जाता है एवं इसके लिए दाम तक देने को लोग तैयार रहते हैं। नाम और दाम की स्पर्धा में काम पीछे छूटता जाता है। वैसे तो किसी भी संस्था में थोड़ा बहुत आपसी वाद-विवाद चलता है। घर के वर्तन भी आपस में टकराकर आवाज पैदा करते हैं लेकिन झगड़े का रूप कभी नहीं देना चाहिए और व्यक्तिगत प्रतिष्ठा का प्रश्न नहीं बनाना चाहिए। वाद-विवाद हो तो कोई बुरी बात नहीं है क्योंकि इससे ज्ञान, दक्षता, निपुणता, हाजिर-जवाबी का विकास होता है किन्तु लोग सभा-संस्थाओं में मौके पर सक्रिय होकर हो-हल्ला करने लग जाते हैं तथा बिना मतलब से, आधारहीन, सस्ती बातों द्वारा अपना पक्ष भारी करने की चेष्टा करते हैं और बात नहीं बने तो झगड़ा का रूप भी दिया जाने लग जाता है। ऐसा होना समाज के लिए दुर्भाग्य की बात है। इससे बचने की जरूरत है।

समाज का काम करने के लिए हर प्रांत में मुट्ठी भर लोग होते हैं। मारवाड़ी समाज के प्लेटफार्म को एक मजबूत प्लेटफार्म बनाने, उस पर बुद्धि का विकास करते हुए अपनी बात सम्मानजनक स्तर पर रखने से उसकी कीमत होती है, जिसे बनाए रखा जाना चाहिए और मारवाड़ी समाज की पुरानी मार्यादाओं को बहाल रखा जाना चाहिए। मारवाड़ी समाज की परंपरा रही है कि समय के अनुसार चलना चाहिए। समय बलवान है।

मेरा यह मानना है कि हम चाहे जिस किसी भी संस्था से जुड़ें पूरे समर्पण एवं निष्ठा से जुड़ें। हमारा ध्येय सामाजिक कार्यों को पूरा करने का होना चाहिए ताकि समाज को हमसे जो अपेक्षा है उस पर हम खरा उतर सकें। आज किसी को समाज की चिंता नहीं है। सब तोड़ने की बातें करते हैं। जोड़ने की कला से लोग अनभिज्ञ हैं। यही वजह है कि संस्थाएं अहं की तुष्टी का अखाड़ा बन गयी हैं।

गलती मनुष्य मात्र से होती है अतएव किसी की गलती के लिए उसका विरोध एवं उसे विस्थापित करने की चेष्टा गलत है। होना तो यह चाहिए कि अगर कोई गलती भी करता है तो हम उसे सुधारें एवं ऐसा उपाय करें कि फिर गलती न हो। यदि गलती करने वाले हर व्यक्ति को संस्थाओं से निकाल दिया जाएगा तो संस्थाओं में रहेगा कौन ?

मेरी भी अपने सभी सहयोगियों, समाज के वरिष्ठजनों एवं कार्यकर्ताओं से अपील है कि वे मेरा मार्गदर्शन करें, सहयोग करें एवं समाज के हित में ऐसा कार्य करने की प्रेरणा दें कि मैं अपने को धन्य समझ सकूं। मेरी गलती पर टोकने का उन्हें पूरा हक है बशर्ते वे उसके परिमार्जन को उद्योगी हों। मैं इस संकल्प के साथ अपना काम शुरू करना चाहता हूं कि :-

यह निर्माण की बेला है
यह क्षण है आत्म निरीक्षण का
यह संघर्षों की बेला है
यह पल है नव उन्मीलन का।

राजनीति में युवा आयें पर समर्पण के साथ

राम अवतार पोद्दार
संयुक्त महामंत्री, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

राजनीति का उद्देश्य लोक कल्याण होता है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में परिवार, जाति धर्म और सम्प्रदाय की संकीर्ण भावना से ऊपर उठकर समस्त लोक के हित में काम करना होता है। सदियों पहले महाराज भरत ने, जिनके नाम पर इस देश का नाम भारत पड़ा, अपने अयोग्य पुत्र की जगह भूमन्यु को चुनकर इसकी नींव रखी थी। अपने मंत्रियों एवं प्रजा के विरोध करने पर उन्होंने कहा था- 'राजनीति का आधार पुत्र कल्याण नहीं, लोक कल्याण होना चाहिए।... वह राजा ही क्या जो पुत्र मोह में देश के भविष्य को दांव पर लगा दे।'

हम अपने अतीत का गौरव गान करते हुए आत्ममुग्धता की हदें पार तो कर जाते हैं पर अतीत की अच्छाइयों को अपनाने की बजाय रूढ़ियों को अपनाने में ही गौरव बोध करते हैं। यही वजह है कि महाराज भरत के इस आदर्श को हमने भुला दिया है।

आज की राजनीति में हमारे नेताओं के लिए लोककल्याण कोई मायने नहीं रखता। वे राजनीति अपने परिवार और सगे संबंधियों को हर कीमत पर लाभ पहुंचाने के लिए करते हैं। देश में उपलब्ध संसाधनों का हर विधि दोहन कर नेताओं ने देश को अंदर ही अंदर खोखला बना देने का जो कार्य किया है वह दुर्भाग्यपूर्ण ही नहीं विडम्बनापूर्ण भी है।

भारतीय गणतंत्र के पचपनवें वर्ष में भी हम यह देख रहे हैं कि स्वतंत्रता के दौरान एवं उसके तुरंत बाद जनता से जो वादा किया गया था, वह पूरा तो क्या आधा भी नहीं हुआ है। सिर्फ आश्वासन के सहारे चुनाव जीते गए हैं। देश की बहुत बड़ी आबादी को जीवन की प्राथमिक जरूरतें यानि रोटी, कपड़ा, शिक्षा एवं चिकित्सा भी उपलब्ध नहीं हो सकी है। विकास का रथ कतिपय महानगरों एवं शहरों तक ही सिमट कर रह गया है। गांव आज भी विकास से कोसों दूर हैं। सोच की कमी एवं दूरदर्शिता के अभाव में भारत का राजनीतिक नेतृत्व संकीर्णता को बढ़ावा देने में लगा रहा है। जनता को धर्म, जाति, सम्प्रदाय के आधार पर बांटकर एवं पृथकतावादी ताकतों को मदद देकर एक ऐसे वातावरण का निर्माण किया गया है जो देश की अस्मिता के लिए खतरनाक साबित हो रहा है।

देश की सबसे सक्षम, ऊर्जावान युवा पीढ़ी को इस कदर असुरक्षित, असहाय, दिगभ्रमित एवं लक्ष्यहीन कर दिया गया है कि वह अपराध की दुनिया में अपना भविष्य तलाश रहा है। बेरोजगारी दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। शिक्षित युवाओं के लिए कहीं कोई विकल्प बाकी नहीं बचा है। आर्थिक रूप से सम्पन्न प्रतिभावान युवा विदेशों में पलायन कर रहे हैं एवं वहां के विकास में अपना योगदान दे रहे हैं। सबको रोटी सबको काम का नारा महज ढकोसला साबित हुआ है।

ऐसा माहौल अराजकता, आतंकवाद और अन्यायपूर्ण व्यवस्था को फलने-फूलने के लिए जमीन तैयार करता है। हम अपने देश में इसका प्रत्यक्ष अनुभव कर रहे हैं। देश के कोने-कोने में अराजकता का माहौल व्याप्त है। आतंकवाद का दानव दिन पर दिन अपना सिर उठाता जा रहा है। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक क्षेत्र में अन्याय का बोलबाला है।

ऐसे में प्रश्न उठता है कि क्या यह देश इस व्यवस्था के रहते विकास पथ पर अग्रसर हो सकता है? जब तक देश के आम लोगों में अनुशासन, देशभक्ति, ईमानदारी व सहयोगिता का भाव नहीं रहेगा तब तक कैसे यह माना जा सकता है कि देश का समुचित विकास संभव है।

वही समाज और लोग देश में क्रांतिकारी परिवर्तन कर सकते हैं जो परिश्रम का महत्व जानते हैं, अनुशासन को प्राथमिकता देते हैं, जिनमें आपसी सहयोगिता का भाव है एवं जो 'स्व' से अधिक 'पर' की चिन्ता करते हैं।

मारवाड़ी समाज में ये गुण स्वाभाविक तौर पर रहे हैं। इस समाज का विस्तार पूरे देश एवं विदेशों तक में है। चूंकि यह समाज प्राकृतिक कारणों से अपनी मातृभूमि से विस्थापित होने को मजबूर हुआ था अतएव अजनबी समाजों से हिल-मिलकर रहना एवं कठोर परिश्रम से अपनी जीविका का संसाधन जुटाना इस समाज के लोगों की फितरत रही है। आपसी सहयोग से व्यापार में उन्नति करने का गुण भी इस समाज में है।

देश के महत्वपूर्ण महानगरों, कस्बों के विकास में इस समाज की भूमिका अप्रतिम रही है। बड़े उद्योगों से लेकर छोटे उद्योगों तक में इस समाज के लोग भारी संख्या में रहे हैं। देश की अर्थव्यवस्था में इस समाज का योगदान किसी संदेह की गुंजाइश नहीं रखता।

अतएव राजनीति में इस समाज के लोगों का बड़ी संख्या में आना वक्त की जरूरत है। अब्बल तो अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए एवं दूसरे जनकल्याण के लिए इस समाज के लोगों की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है। चूंकि जांति, धर्म, सम्प्रदाय की संकीर्णता से मारवाड़ी समाज काफी हद तक ऊपर है इसलिए राजनीति में सौहार्द एवं विकास की बात करने में ये अग्रणी भूमिका का निर्वाह कर सकते हैं।

एक समय समाज के राजनीतिज्ञों ने प्रांतीय एवं केन्द्रीय राजनीति में अपनी अलग पहचान बनाई ही थी। सेठ गोविन्द दास मालपानी, बृजलाल बियणी, ईश्वरदास जालान, विजय सिंह नाहर जैसे राजनीतिज्ञों का व्यक्तित्व राजनीति में श्रद्धा का प्रतीक माना जाता था।

हमें ऐसे युवाओं को राजनीति में प्रोत्साहित करना चाहिए जिनमें सामाजिकता की भावना हो, जो वास्तव में देश और समाज के विकास को कृतसंकल्प हों, जिनमें ईमानदारी हो एवं सोच के स्तर पर जो संकीर्णता से दूर हों।

मुझे यकीन है कि हमारे समाज में ऐसे युवाओं की कमी नहीं पर जरूरत उन्हें खोजकर आगे लाने की है।●

आत्म समर्पित स्वयम् सेवा

पं. रमेश मोरोलिया

पूर्व अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन

आत्मबोध-यानी अपने आप की पहचान, यही सार है श्रेष्ठ सुखमय और समृद्ध जीवन जीने का। जब आपमें निहित प्रकाश की ज्योति का आलोक आपके बाह्य आवरण और आचरण में परिलक्षित होने लगेगा तो जन-जन को कल्याणकारी-आनन्दानुभूति का साक्षात अनुभव होने लगेगा, और यही भाव सर्वत्र परमात्म दर्शन का है।

हम जब प्रारम्भिक कक्षा में जाते हैं तो हमें कलम-कागज-स्लेट आदि देकर अक्षर तथा संख्या-गणना का ज्ञान दिया जाता है। उसी प्रकार आध्यात्मिक जीवन में सद्गुरु मंत्र-ध्यान और विग्रह पूजन विधि का शुभारम्भ कराते हैं। शनै: शनै: ज्ञानार्जन और अभ्यास से प्रारम्भिक क्रम छूट जाता है और गति में सहजता का विकास होने लगता है।

हम सभी कर्म बन्धन से बंधे हैं। बिना कोई भी कर्म किये हम नहीं रहते, लेकिन यह कार्य हम अपने तथा अपने से निकटस्थ सम्बन्धों के लिए करते हैं। कर्म करके हम उससे फल स्वयम् के हित में ही अपेक्षा करते हैं और जब परिणाम अपेक्षित नहीं होता है तो हमें दु:ख और अपार कष्ट होता है। लेकिन वही कर्म जब हम उस परम शक्ति के लिए करते हैं, जो कि हममें और सभी जीव-जन्तु, मानव, वनस्पति तथा चल-अचल में भी व्याप्त है तो यही कार्य सर्व-जनहिताय हो जाता है।

हमारे सामाजिक जीवन में भी यही हो रहा है। हम व्यापार, समाज सेवा, राजनीति और परोपकार अपनी स्वार्थपूर्ति और महत्वाकांक्षा हेतु करते हैं और उलझते ही चले जा रहे हैं। और-और की हवस के साथ असंतुष्टि,अनाचार, अस्वस्थता और अक्षमता बढ़ती जा रही है। हम अपने जीवन मूल्यों के उद्देश्य से विमुख होते जा रहे हैं।

हमें यह आत्मसात् करना है कि जो ज्योति-अनन्ता हमारी इन्द्रियों, मन तथा बुद्धि का संचालन कर रही है, वही सबमें व्याप्त है और सभी कुछ उस परम-शक्ति-परमात्मा का है, हम तो केवल माध्यम मात्र हैं उसकी सेवा के। अत: सभी कर्म, समर्पित भाव से, कुशलता से, उस परमात्मा के लिए बिना किसी फलाकांक्षा के करें। उस परमात्मा के कर्मचारी की हैसियत से करें न कि कर्म के मालिक की हैसियत से, तो काम बन गया। फिर मालिक को प्रसन्न करने के लिए आप अच्छा ही करेंगे और सदा प्रसन्न रहेंगे, तनावमुक्त रहेंगे, नफा-नुकसान भी उसका और यश-कीर्ति भी उसकी, हमें तो बस सेवा भाव ही बनाये रखना है। यही भावना को जन-जन में जगाना है। तो यही अर्थ कर्म, समाज सेवा और राजनीति, परमात्मा की आराधना हो जाएगी। जिन स्वार्थ निहित लीलाओं से घृणा, आतंकवाद अनाचार और व्यभिचार हो रहा है उसकी समाप्ति भी हो कर रहेगी।

हम चाहे उद्योगपति हों, व्यापारी, कर्मचारी, कलाकार, संगीतकार, साहित्यकार, समाजसेवी, राजनेता या आध्यात्मिक साधक हों, भले ही हम किसी भी धर्म-सम्प्रदाय, जाति-वर्ण के हों, जब सर्वत्र अनन्त ज्योति का दर्शन करेंगे तो हमारा कर्तव्य बोध और सेवा भाव स्वत: समर्पित और सुगन्धित हो जाएगा।

हमारा कार्य क्षेत्र प्राणि मात्र में परिलक्षित परमात्मा की सेवा हो, तो जहां कहीं भी हम रहेंगे तो सभी कुछ समर्पित, सुव्यवस्थित और शुभोदित हो जायेगा। ●

व्यावहारिकता एवं आत्मीयता

श्री राम अग्रवाल, महामंत्री

उत्तर प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन, कानपुर

व्यावहारिकता सामाजिकता का ही अंग है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, समाज से जुड़ी प्रत्येक गतिविधियों का संचालन मानव द्वारा ही होता है। सामाजिक समृद्धि पाने के लिए व्यावहारिक होना आवश्यक है, क्योंकि जब समाज का प्रत्येक व्यक्ति इस दिशा में ईमानदारी के साथ अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह करेगा तो निश्चित रूप से समाज में भाईचारे का वातावरण बनेगा।

हमारे व्यवहार से ही दूसरा व्यक्ति हमसे प्रभावित होगा। हम अपने व्यवहार से ही शत्रु को मित्र व मित्र को शत्रु बना सकते हैं। यदि हम किसी से कुछ अपेक्षा करते हैं तो हमें भी उसकी इच्छा या भावना का आदर करना चाहिए। यह व्यवहार कुशलता की निशानी है। आत्मीयता का विस्तार करने के लिए व्यवहारिक होना बहुत जरूरी है। एक-दूसरे के काम बिना सहयोग और सहकारिता के बनना आज के जमानें में बहुत ही कठिन है। जब किसी वृद्ध माता-पिता का एक मात्र पुत्र नौकरी या व्यवसाय के मामले में अपने मां-बाप से दूर रहता है तो उस समय उसके पड़ोसी या शुभचिंतक ही उन वृद्ध जनों की मदद के लिए आगे आते हैं, यह बहुत कुछ हमारे व्यवहार पर ही निर्भर करता है कि इस क्षेत्र में हम कितने सम्पन्न हैं। समाज का प्रत्येक सदस्य किसी न किसी रूप में एक-दूसरे पर आश्रित अवश्य रहता है, यह एक माध्यम है एक-दूसरे के निकट आने का। सेवा, स्वाध्याय, संयम यह व्यक्तित्व के आभूषण हैं इन्हें अपनाकर हम अपने साथ-साथ दूसरों का भी भला कर सकते हैं, साथ ही लोगों की आत्मीयता पाने के अतिरिक्त हम समाज में अपना विशिष्ट स्थान बना सकते हैं। आत्मीयता संबंधों पर आश्रित नहीं रहती, बल्कि संबंध अवश्य आत्मीयता पर आश्रित रहते हैं।

अपने आचरण में विशिष्टता लाने के लिए मनुष्य को जो उपाय करने पड़ते हैं वे सभी आत्मीयता को भी पोषित करते हैं, हमें उन उपायों को खोजना चाहिए और अमल में लाना चाहिए, यह एक सामाजिक दायित्व है। आत्मीयता का तात्पर्य है दूसरों के हृदय में अपना स्थान बनाना। यह तभी सम्भव है जब हम समर्पण भाव से दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करें, जैसा हम दूसरों से चाहते हैं। यदि हम प्रभु के प्रति समर्पित होंगे तो यह भक्ति होगी जो हमें अपने कल्याण के मार्ग में ले जायेगी। मानवता का प्रथम लक्षण हैं आत्मीयता, जिसमें असीम स्नेह, प्रेम, वात्सल्य समाया हुआ है जिसका अलग-अलग प्रभाव अलग-अलग संबंधों पर देखा जा सकता है मां का अपने बेटे के साथ स्नेह और वात्सल्य का स्वरूप अलग है और बेटे का मां के प्रति प्रेम का स्वरूप अलग तरह का होता है, किन्तु आत्मीयता दोनों में ही होती है। हम जितने ही व्यवहार कुशल होंगे समाज में उतने ही आदर के पात्र भी हम होंगे। व्यवहार को यदि हम आत्मीयता के साथ जोड़कर देखें तो उसकी शक्ति में और अधिक वृद्धि होगी, यह अनुभूति पूर्ण सत्य है। यदि हम समाज को ही परिवार का आधार मानकर आत्मीयता और व्यावहारिता का विस्तार करेंगे तो परिणाम अवश्य सकारात्मक और अनुकूल होंगे।●

परिचय सम्मेलन की सामाजिक उपादेयता

मुकुन्ददास माहेश्वरी, अध्यक्ष

मध्य प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन, जबलपुर

परिचय हमारे सामाजिक संस्कारों के प्रतीक कहलाते हैं, सभ्य समाज में परिचय का आदान-प्रदान करना शिष्टाचार माना जाता है, परिचित व्यक्ति को सम्मान देना, प्रसन्नता की सामाजिक प्रक्रिया है, वर्तमान व्यस्त जीवन में जहां लोगों के निकट आना एक समस्या बनी हुई है, वहीं सामाजिक मंचों द्वारा युवक-युवतियों का परिचय सम्मेलन आयोजित करना, समाज के नव निर्माण का एक रचनात्मक कदम है। भारतीय परिवेश में जहां तीव्र गति से सामूहिक सामाजिक कार्यक्रमों में मिलना-जुलना व्यक्तिगत व्यस्तता के कारण अत्यंत कठिन प्रतीत होता है इस परेशानी को हल करने के लिए परिचय सम्मेलन एक महत्वपूर्ण मंच बन कर उपयोगी हो रहे हैं। आजकल प्रत्येक भारतीय एवं सामाजिक संगठनों में परिचय सम्मेलन आयोजित किए जाते हैं जिनका उद्देश्य विवाह योग्य युवक-युवतियों को परिचय के माध्यम से निकट आने का अवसर मिलता है तथा नव आगन्तुक बंधु भी अपने विशाल समाज के स्वरूप एवं विकास की गतिविधियों से परिचित हो जाते हैं, ऐसे आयोजनों में पुराने मित्र एवं संबंधी आपस में मिलते तो हैं, साथ ही साथ नए संबंधों के सूत्र भी मिल जाते हैं।

आज के प्रगतिशील युग में जहां स्वजातीय परिचित जन देश-विदेश के विभिन्न नगरों प्रतिष्ठापूर्ण व्यवसायों एवं कार्यों में व्यस्त रहते हैं, उन्हें सामान्य जीवन या महत्वपूर्ण अवसरों पर भी एक दूसरे के निकट आने के अवसर कम प्राप्त होते हैं। इण्टरनेट के माध्यम से यद्यपि जानकारी तो संकलित की जा सकती है, लेकिन व्यक्तिगत साक्षात्कार को सम्पूर्ण जानकारी इस प्रकार के आयोजनों से ही सुलभ होती है।

प्राय: सामाजिक संगठनों की राष्ट्रीय या केन्द्रीय इकाई द्वारा क्षेत्रीय जिला या प्रांत स्तर परिचय सम्मेलन के कार्यक्रम एवं आयोजनों को कार्य-योजना निर्देशित की जाती है जिसमें प्रविष्टियों सहित प्रत्याशी या नव युवकों की जानकारी बायोडाटा तथा चित्र सहित आमंत्रित की जाती है। इसी संकलित विस्तृत जानकारी के आधार पर एक स्मारिका या परिचय पत्रिका भी प्रकाशित की जाती है। इसमें मुख्य रूप से समाज के उच्च शिक्षित प्रोफेशनल व्यवसायी एवं अन्य क्षेत्र के कार्यरत या अध्ययन रत युवक-युवतियों का सचित्र विवरण रहता है।

परिचय सम्मेलन का सबसे सुखद पहलू यह है कि युवक-युवतियों को अपनी रूचि योग्यता पद, स्तर एवं महत्वाकांक्षा के अनुकूल जीवन साथी का विवरण सहजता से मिल जाते हैं। उनके साथ उनके अभिभावक भी आपस में वैवाहिक संबंधों पर गंभीरता से चर्चा करते हैं। जिससे विवाह योग्य युवतियों के वर वधू चयन की प्रक्रिया सरलता से हो जाती है। परिचय सम्मेलन दो पक्षों के मिलाने का महत्वपूर्ण मंच एवं अवसर प्रदान करता है, इसके कारण किसी अन्य माध्यम खोजने की बजत होती है। इन आयोजनों में तो सगाई एवं विवाह भी निश्चित किए जाते हैं, कई जागरूक मंचों से कई युवक-युवतियों के सामूहिक विवाह भी सफलतापूर्वक संपन्न होते देखे गए हैं। अत्यंत अल्प व्यय, बिना बाध्य तथा सादगीपूर्ण ढंग से आयोजित सामूहिक विवाहों का आजकल प्रचलन अधिक हो रहा है। योग्य जीवन साथी चयन के साथ इन विवाहों में सम्पूर्ण ढंग से सामाजिक रूप से विवाह संस्कार संपन्न होता है क्योंकि विवाह अधिक खर्चीले एवं बिना ताम झाम के होते हैं। अर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के युवक-युवतियों की वैवाहिक समस्या के लिए परिचय सम्मेलन तथा सामूहिक विवाह के कार्यक्रम अत्यंत उपयोगी है।

वर्तमान समय में परिचय सम्मेलन समाजसुधार एवं इनके नव निर्माण के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। विस्तृत समाज के विस्तार के कारण विभिन्न समस्या ग्रस्त व्यक्ति एक दूसरे के निकट संपर्क बनाने में कम समय निकाल पाते हैं, इस दृष्टि से परिचय सम्मेलन एक रचनात्मक मंच की भूमिका निभाते हैं, समाज में निम्नलिखित प्रकार की विवाह से संबंधित समस्यायें दृष्टिगोचर होती है- जैसे (१) विकलांग युवक-युवती योग्य होते हुए भी उचित जीवन साथी न मिलना (२) बीमारी या दुर्घटना से पति या पत्नी की मृत्यु हो जाने से नितांत अकेले रह जाना (३) विवाह विच्छेद होने पर अकेले जीवन यापन में कठिनाई (४) अधिक उम्र होने से विवाह योग्य जीवन साथी न मिल पाना आदि। इस प्रकार अशिक्षा बेरोजगारी, विधवा, विधुर, तलाकशुदा विकलांग ज्यादा उम्र न होने के कारण परिचय सम्मेलन जीवन साथी खोजने में काफी मददगार होते हैं।

परिचय सम्मेलन के आयोजन कर्ता परिचय पत्रिका के विवरण के लिए निर्धारित प्रपत्र में विवाह योग्य युवक-युवतियों की योग्यता संबंधी जानकारी पूर्व में एकत्रित कर उनके विस्तृत विवरण के साथ परिचय पत्रिका प्रकाशन करते हैं।●

मारवाड़ी समाज : प्राथमिकताएं

✍ **हनुमान प्रसाद सरावगी**, भूतपूर्व कार्यवाहक अध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

सम्पूर्ण विश्व में बहुआयामी परिवर्तन का चक्र तीव्रगति से घूम रहा है। प्रत्येक मानव, प्रत्येक समाज से न केवल मानवता, वरन् समस्त सृष्टि की अपेक्षाएं उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही हैं। ये वे अपेक्षाएं हैं जिनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती क्योंकि इनका संबंध अस्तित्व रक्षा से है। अपनी मातृभूमि भारतवर्ष के प्रति मारवाड़ी-समाज की एक गौरवोज्वल अटूट परम्परा है। इससे विश्वमानव ने सतत प्रेरणा ग्रहण की है। इस परम्परा के आलोक में आज की परिस्थिति में मारवाड़ी समाज के क्या कर्तव्य हैं और इनकी क्या प्राथमिकताएं हों, यह विचारणीय है। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रश्न है। इसका उत्तर सर्वप्रथम हमें अपने समाज के ही संदर्भ में ढूंढना होगा। विभिन्न सामयिक वैयक्तिक और सामूहिक कार्यों, घटनाक्रमों तथा विकासप्रवाहों से सामाजिक संक्रमण होता है। यह संक्रमण कभी स्वागतेय तो कभी घातक और कभी वर्जनीय है। घातक संक्रमण से समाज का सत्य, शिव और सुन्दर मय स्वरूप दुष्प्रभावित होता है और कभी-कभी विकृत तथा समूल नष्ट-भ्रष्ट भी हो जाता है। अतएव, प्रत्येक मानव-समाज का यह सर्वोपरि कर्तव्य ही नहीं, धर्म भी है कि वह अपने मूल स्वरूप का संरक्षण करे। मेरा यह सुविचारित मत है कि अपने मारवाड़ी-समाज के समक्ष भी यही परिस्थिति समुपस्थित है-तो ऐसी परिस्थिति में हम क्या करें?

समाज के चरित्र का निर्धारण उनके द्वारा अंगीकृत जीवन-मूल्य करते हैं। ये जीवन-मूल्य समाज-विशेष की संस्कृति में, जिसे हम जनसंस्कृति या लोक-संस्कृति कह सकते हैं, विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त और मूर्त होते हैं। इनकी रक्षा से ही संस्कृति की रक्षा संभव है। समाज-विशेष के जीवन-मूल्यों से गुम्फित हमारी लोक संस्कृति का मूर्त परिचय हमारी लोकमान्यताओं, रीति-रिवाजों, लोककलाओं, लोकसाहित्य, लोक-गीत, लोक संगीत, लोक नाट्य, लोक कथाओं, और लोक स्थापत्य इत्यादि से मिलता है। मुझे लगता है कि आधुनिकता से उत्प्रेरित संक्रमण ने मारवाड़ी समाज को और विशेषकर प्रवासी मारवाड़ी समुदाय को, समाज की मूल लोक-संस्कृति को ग्रसित करते हुए न्यूनाधिक परे धकेल दिया है। इसका प्रधान लक्षण है अपनी मातृ-भाषा से विरक्ति एवं क्रमशः उसका परित्याग। यह लक्षण प्रवासी मारवाड़ी समुदाय में उग्र रूप से है जो अत्यन्त चिंता का विषय है। राजस्थानी अथवा मारवाड़ी भाषायी अंचल से परे प्रवासी मारवाड़ी समुदाय अब सार्वजनिक रूप से क्या, अपने घर-परिवार में भी मारवाड़ी भाषा का व्यवहार नहीं करना चाहता। इसका स्वाभाविक परिणाम यह हुआ है कि प्रवासी मारवाड़ी समुदाय अपनी लोक संस्कृति से भी विच्छिन्न हो गया है। भावों का संप्रेषण लोकभाषा से ही होता है। भाव से संस्कार बनते हैं जिनसे लोक संस्कृति जन्म लेती है, निरूपित, विकसित और संरक्षित होती है। अर्थात लोकभाषा ही हमें लोक-संस्कृति से जोड़ती है। आज जब प्रवासी मारवाड़ी समुदाय से उसकी लोकभाषा तिरोहित हो चली है तो अब लोकगीत भी तिरोहित हो चले हैं। मारवाड़ी अंचल की कलाओं से तो मारवाड़ी समुदाय का कोई परिचय भी नहीं रह गया ऐसा लगता है।

मैं कहूंगा कि प्रवासी मारवाड़ी समाज को अपनी भाषा, मारवाड़ी (परिष्कृत राजस्थानी) भाषा को अपने दैनिक जीवन में अपने घर-परिवारों में पूर्ववत पूर्णतः अपनाना चाहिए। मारवाड़ी समाज की मौलिकता की सुरक्षा की यह प्रथम शर्त है, अनिवार्य बाध्यता है, अपरिहार्य अपेक्षा है। हमें अपने विश्वमान्य दार्शनिक, भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के इन शब्दों का स्मरण करना चाहिए कि "हमारी कुछ क्षेत्रीय उपभाषाएं करोड़ों देशवासियों द्वारा बोली जाती हैं जिनकी सांस्कृतिक प्रगति केवल उनकी भाषाओं से ही हो सकती हैं।" मारवाड़ी भाषा के संबंध में विख्यात भाषा-शास्त्री डॉ. सुनीती कुमार चाटर्जी का यह आह्वान भी स्मरण योग्य है, "इस चिरयुवती, चिरनवीना, सुन्दरी और गंभीरा भाषा को फिर अपने घर की रानी बनाने की चेष्टा हर मरुदेशवासी का कर्तव्य है। भाइयों, अपनी मातृभाषा राजस्थानी का स्थान फिर ऊंचा करो, इससे अपनी मानसिक उन्नति करो और हृदय को उद्भासित करो।" हमें इसके लिए राजस्थानी भाषा में साहित्य-सृजन और उसके प्रकाशन को भी प्रोत्साहित करना होगा। प्रयास होना चाहिए कि राजस्थानी भाषा में अधिकाधिक पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन हो। इन्हें हर प्रकार का संरक्षण, सहाय्य दिया जाना अपेक्षित है।

मैंने लोक-संस्कृति के संदर्भ में लोक कलाओं की चर्चा की है। हमें चाहिए कि हर मांगलिक अवसर पर और पर्व-त्यौहारों पर हम अपनी लोक कलाओं, लोक परम्पराओं को प्रोत्साहित करें। ऐसा हो कि मारवाड़ी घरों में जन्म, विवाह इत्यादि मांगलिक अवसरों, पर्व-त्यौहारों पर लोक-गीत मूल रूप और लय-ताल में पुनः गूंजने लगे। गणगौर के गीत, फाल्गुन के गीत, देवी-देवताओं के गीत, नृत्य की झंकार, चंग या ढफ की गमक, ढोल-नगाड़ों की धमक पुनः मुखर हों। अपनी लोक-कलाओं को पुनर्जागृत करने तथा उनको प्रवासी-मारवाड़ी समुदाय से सुपरिचित करने के लिए हमें राजस्थान, हरियाणा और मालवा अंचल के मौलिक लोक-कलाकारों और उनकी कला-मंडलियों को समय-समय पर अथवा सामाजिक आयोजनों में आमंत्रित कर उनके कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित

करने चाहिए। इसी कड़ी में कलाकृतियों की प्रदर्शनियों के आयोजन भी वांछनीय है। यह सांस्कृतिक पुनर्जागरण का क्रियात्मक स्वरूप होगा। इसी से भाषायी पुनर्जागरण भी संभव है। राजस्थानी अथवा मारवाड़ी भाषा को संविधान की ८वीं सूची में सम्मिलित करने के लक्ष्य की पूर्ति भी भाषायी पुनर्जागरण से ही संभव होगी। इस लक्ष्य-पूर्ति का दूसरा सोपान है- राष्ट्र स्तर पर एक सशक्त अभियान चलाना जिससे कि लम्बित एवं बहुप्रतिक्षित सम्मान हमारी समृद्ध मातृभाषा राजस्थानी को प्राप्त हो।

मारवाड़ी समाज के संगठनात्मक पहलू पर भी कुछ चर्चा करना चाहूंगा। ''संघे शक्ति कलियुगे'' यह एक बहुप्रचलित उक्ति है। पर संघ अर्थात संगठन की आवश्यकता केवल कलियुग में ही नहीं है। यह एक सर्वयुगीन, सार्वकालिक, सार्वभौमिक आवश्यकता है। मुझे यह कहते हुए कष्ट होता है, पर यह सत्य है कि संगठन की दृष्टि से अपना समाज अत्यंत निर्बल है। हम दावा तो करते हैं कि मारवाड़ी सम्मेलन देशव्यापी आठ करोड़ मारवाड़ियों का एकमात्र प्रतिनिधि संगठन है। पर, यथार्थ में यह मुख्य रूप से पूर्वी भारत के दो तीन प्रांतों में ही सीमित है। इसका विस्तार किया जाना चाहिए तथा देश के प्रत्येक प्रांत में इसकी सशक्त शाखायें होनी चाहिए। इतना ही नहीं, इसमें मारवाड़ी समाज के सभी जातीय, भाषायी और धार्मिक वर्गों का समुचित प्रतिनिधित्व होना चाहिए जिससे कि इसे प्रतिनिधि संगठन का सही स्वरूप प्राप्त हो सके। अपने मारवाड़ी समाज में हिन्दुओं के सभी मत, सम्प्रदाय तथा वर्ण के लोग हैं, हरिजन और आदिवासी भी हैं। फिर मुसलमान, ईसाई और अन्य धर्मावलम्बी भी हैं। इन सबों के बिना संगठन अधूरा है। सम्मेलन के साथ समाज के बुद्धिजीवियों को भी जोड़ना आवश्यक है। संगठन की दिशा में युवा मंच अच्छा कार्य कर रहा है। इससे यह आशा बंधती है कि आज का युवा-वर्ग कालान्तर में सम्मेलन को अपेक्षित स्वरूप में संगठित और बलशाली बनायेगा। यहीं पर मारवाड़ी महिलाओं के संगठन की भी बात आती है। महिला सम्मेलन है जिसे और सशक्त किये जाने की आवश्यकता है। संगठन को सुदृढ़ और प्रभावी करने का एक सशक्त उपाय है इसके माध्यम से समाज के अल्प-साधन वर्गों की आवश्यकताओं की पूर्ति।

नियोजन और आवास की सुविधाओं का अभाव एक गंभीर राष्ट्रीय समस्या है। इससे मारवाड़ी समाज भी और प्रवासी मारवाड़ी-बन्धु विशेष रूप से ग्रसित है। वर्तमानकालीन युवा पीढ़ी के लिए नियोजन और आवास प्राप्त करना अत्यंत दुरुह है। इस समस्या का समाधान सरकार की तत्संबंधी नीति और योजनाओं के अन्तर्गत प्राप्त सुविधाओं का लाभ युवा-वर्ग को उपलब्ध कराकर किया जा सकता है। इसके लिए वांछित अभिकरणों (एजेंसियों) का सामाजिक स्तर पर गठन किया जाना चाहिए। वित्त-व्यवस्था के लिए भी एक सामाजिक अभिकरण होना चाहिए जो व्यवसाय और उद्यम के लिए 'बीजू-पूंजी' (सीडमनी) की ऋण के रूप में और यदि संभव हो तो, आर्थिक सहायता के रूप में व्यवस्था करें। सहकारी व्यावसायिक और औद्योगिक समितियों का गठन कर उनके अंतर्गत भी व्यवसाय और उद्योग के अवसरों का विकास किया जा सकता है। मेरा विचार है और मैं इस पर विशेष जोर भी देता हूं कि अपने समाज के समर्थ औद्योगिक घरानों को अपने औद्योगिक प्रतिष्ठानों की अनुषंगी इकाइयों के रूप में लघु तथा मध्यम श्रेणी के उद्योगों की स्थापना में पूर्ण सहयोग करना चाहिए। ये औद्योगिक घराने जहां अपेक्षित हो वहां राजकीय तथा वित्तीय संस्थाओं से सहयोग प्राप्त कर, औद्योगिक प्रांगणों का निर्माण और विकास करें। तथा उनमें अपने समाज के मेधावी तथा परिश्रमी नव-उद्यमियों को स्थापित करें। यह एक वांछित फलदायी, महत्वपूर्ण राष्ट्रीय सेवा भी होगी।

आवास की समस्या समाधान के लिए सहकारी गृह-निर्माण समितियों का गठन अपेक्षित है। समाज का सम्पन्न वर्ग आवास-निर्माण को समाज सेवा के रूप में अपनाकर भी आवास की समस्या का निराकरण कर सकता है। इस प्रकार निर्मित आवास-गृह 'न लाभ न हानि' के आधार पर, आसान किस्तों पर अल्प-साधन आवासहीन समाज-बन्धुओं को उपलब्ध कराये जाने चाहिए।

एक और महत्व का विषय है जिसकी ओर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। वह है- अपने समाज के सम्पन्न वर्ग का और विशेषकर उद्योग और वाणिज्य में संलग्न बंधुओं एवं उनके प्रतिष्ठानों का जिन्हें अपने चतुर्दिक स्थानीय समाजों के सदस्यों के दुःख और अभावों को मिटाने और उनकी आर्थिक-सामाजिक तथा नैतिक उन्नति करने के लिए सक्रिय कार्य करना। इस प्रसंग में मेरा विचार है कि स्थानीय समाज से एकरस या समरस होने की आवश्यकता है और तभी ऐसे कार्य संभव है। प्रवासी मारवाड़ी समाज स्थानीय समाजों की आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति हेतु योगदान करके क्षेत्रीय असंतुलन और उससे उत्पन्न जन-क्षोभ एवं पृथकतावादी प्रवृत्तियों को समूल समाप्त करने के राष्ट्रीय प्रयास में सहभागी हो सकता है। ऐसा अवश्य किया जाना चाहिए। आवश्यकतानुसार इसके लिए समाज को एक पृथक कोष की स्थापना करने के सम्बन्ध में निर्णय करना चाहिए जिससे कि आर्थिक असंतुलन को नियंत्रित किया जा सके और अन्य स्थानीय समाज के लोगों में मारवाड़ी समाज के प्रति सदभावना का सृजन किया जा सके।

वर्तमान अस्तित्व-रक्षा के परिप्रेक्ष्य में अपने मारवाड़ी-समाज से मेरी दृष्टि में प्रथमतः यही कुछ महत्वपूर्ण एवं प्राथमिक अपेक्षाएं हैं। मुझे आशा है, इन विषयों पर विशेष रूप से समाज द्वारा आयोजित गोष्ठियों में विचार होता रहेगा और अनुकूल निर्णय लेकर ठोस कार्यक्रमों के प्रवर्तन की भूमिका बनायी जायेगी जिससे कि प्रवासी मारवाड़ियों के प्रति आर्थिक विषमता के फलस्वरूप बढ़ते जन आक्रोश को सदभाव के रूप में परिवर्तित किया जा सके।●

राजस्थान और राजस्थानी समाज

राम निरंजन शर्मा 'ठिमाऊ'

पिलानी (राज.)

राजस्थान एक अनूठा प्रदेश है। यह अपनी वीरता, त्याग, धार्मिक सहिष्णुता, स्थापत्य कला और अपनी आन-बान के कारण पूरे संसार में जाना जाता है। यहां की वीरंगनाओं ने क्षत्रीय धर्म की रक्षा हेतु अपने प्राणों की आहूति दी और पन्नाधाय ने स्वामी भक्ति के कारण अपने पुत्र का बलिदान किया। वीर-दुर्गादास और महाराणा प्रताप ने भारत भू की रक्षा हेतु डटकर संघर्ष किया तो यहां के सन्तों ने अपनी ईश भक्ति में डूबकर प्रदेश की जनता को सन्मार्ग पर चलने हेतु प्रेरित किया। मीरा ने कृष्ण भक्ति की एक ऐसी धारा बहाई जो देश के कोने-कोने तक आज भी प्रवाहित हो रही है। मैं जब साठ साल पहले के जमाने को याद करता हूं तो मुझे एक महान अन्तर नजर आता है। मुझे याद है कि उस जमाने में लोग जातिवाद, सम्प्रदायवाद, कट्टर धार्मिकता आदि विषैले दुर्गुणों से कोसों दूर थे तथा सब लोग प्रेम-भाव से रहा करते थे, एक दूसरे का दु:ख दर्द आपस में बांटा करते थे और शादी विवाह उत्सवों में प्रेम से इकट्ठे हुआ करते और सभी लोग गांव की किसी भी जाति की बेटी को अपनी बेटी समझा करते। विवाह में दिए जाने वाले भोज का नाम इसीलिए ''मेल'' रखा अर्थात् आपसी मेल-जोल, कन्यादान और पहरावणी में सभी लोग रुपया दिया करते और विवाह में दिए गए दूध का कोई भी पैसा नहीं लेता। कन्या के विवाह में गांव के सभी लोग अपनी श्रद्धानुसार सहयोग प्रदान किया करते और इसी प्रकार फसल के समय भी लोग बारी-बारी से एक दूसरे के खेत में जाकर काम किया करते। कहने का तात्पर्य यह है कि उस जमाने में आपसी सद्भाव था और सारा गांव एक परिवार की तरह रहा करता और लड़ाई-झगड़े भी आपस में बैठकर सलटा लिया करते। सभी जाति के लोग अपना-अपना पारम्परिक काम किया करते। उस जमाने में लोगों के पास पैसा नाम मात्र का हुआ करता पर आपसी सहयोग से काफी काम सलट जाया करता। जिसके पास हजार रुपये होते वह हजारी-पुजारी कहलाता और इसीलिए लोगों ने अपने पुत्र का नाम ''हजारी'' रखना प्रारंभ किया।

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में ही यहां के लोग भारत के महानगरों में धनार्जन हेतु जाने लगे तथा बीसवीं सदी के प्रारंभ में तो काफी लोग दिसावर चले गये। अन्य जातियों के तो बहुत कम लोग बाहर गये पर मुख्यत: वैश्य जाति के लोग तो काफी मात्रा में देश के कोने-कोने में पहुंचे और अपना व्यवसाय प्रारंभ किया। पुराने सेठ लोटा और एक डोरी लेकर परदेश गये तथा वहां जाकर खूब धनार्जन किया और आज भी कर रहे हैं। भारत का ऐसा कोई स्थान नहीं है जहां राजस्थानी सेठ न हों। मेरी मान्यता है कि वैश्य जाति को धन कमाना और धन का सही उपयोग करना आता है। अन्य जातियों में उपर्युक्त दोनों क्षमताएं नहीं है। देखा गया है कि अन्य जाति के लोग पैसा कमा तो लेते हैं पर उसका सही उपयोग नहीं कर पाते हैं और बहुत जल्दी ही पैसे के कारण मदांध हो जाते हैं। वैश्य जाति को पैसा पचाना आता है और करोड़ रुपये होने पर तो वे कहते हैं,- ''दाल-रोटी को खर्चो चालै है'' शेखावाटी क्षेत्र का ऐसा कोर्स कस्बा नहीं है जहां के सेठों ने कस्बे की भलाई के लिए कुछ किया न हो। कुआँ, बावड़ी, धर्मशाला, मंदिर, स्कूल, कॉलेज और गऊशाला जैसी समाजोपयोगी संस्थाओं का निर्माण हर सेठ ने अपने कस्बे में करवाया है। शेखावाटी क्षेत्र शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी रहा है और यह मात्र सेठों के कारण है। वैश्य जाति के लोग पैसा कमाने पर समाजोपयोगी कार्य करने की सोचते हैं, यह उनके रक्त में है।

समय परिवर्तनशील है तथा इसका असर हर परिवार, समाज और राष्ट्र पर होता है। पुराने जमाने के सेठों का जो प्रेम और लगाव अपनी जन्मभूमि से था वह प्रेम और लगाव सेठों की आज की पीढ़ी में नजर नहीं आता। टी.वी. और इण्टरनेट के इस दौर में लगता है नई पीढ़ी भी भटक गई है। आज के अधिकतर राजस्थानी युवाओं को इस धरती से लगाव नहीं रहा। वे अपनी संस्कृति, परम्परा, वेशभूषा और भाषा को भुला बैठे हैं।

हमें अपने प्रदेश की संस्कृति, परम्परा और भाषा को अक्षुण्ण रखने के लिए तमिलनाडू, आन्ध्र, केरल, कर्नाटक, बंगाल, महाराष्ट्र और गुजरात जैसे प्रान्तों से शिक्षा ग्रहण करने की जरूरत है तभी हम हमारे प्रिय राजस्थान की संस्कृति को सुरक्षित रख पायेंगे। हमें हमारे पूर्वजों के साहस और त्याग को हमेशा याद रखना चाहिए। हमें नहीं भूलना चाहिए कि हमारे पूर्वजों को राजस्थान की धरती से कितना प्यार था। इस धरती का कण-कण उनकी दानवीरता के गुण गाता है। राजस्थान के युवाओं को नहीं भूलना चाहिए कि वे अपने पूर्वजों के त्याग के बलबूते पर ही पंच सितारा होटलों में शादी-विवाह रचाते हैं और विदेशों का भ्रमण करते हैं।●

समाज की कश्ती के मांझी

अतीत के बन्दी नहीं तुम,
भविष्य के अरमान हो
समाज की हो रीढ़ तुम,
समाज के तुम प्राण हो

समाज की कश्ती के मांझी,
तुम ही विरल पतवार हो
समाज की कुरीतियों के,
तुम्हीं मोचन हार हो

प्रगति पथ पर विश्व सारा,
द्रुत गति से बढ़ रहा
अवरोध के पथ को कुचलता,
क्रान्ति रथ है चल रहा

युवा-शक्ति ही हर क्षेत्र में,
नव क्रान्ति लाती है सदा
भ्रष्टता की हर डगर को,
रौंदती आई सदा

समाज में नव जागरण हित,
समाज के युवकों उठो
समाज के कल्याण हित में,
संगठित हो युवकों बढ़ो

उठो अब करवट बदल,
अंगड़ाइयां लेकर उठो
कारवां नव क्रान्ति का ले,
समाज के युवकों बढ़ो

दहेज-दानव का दहन,
युवा शक्ति ही कर पाएगी
समाज के इस कलंक को,
युवा शक्ति ही धो पायेगी

तुम आग पानी में लगा सकते,
वो 'राधे' आग हो
तिमिर धरती का मिटा सकते,
वो दिव्य प्रकाश हो

है दायित्व तुम पर समाज का,
तुम समाज के अभिमान हो
अतीत के बन्दी नहीं तुम,
भविष्य के अरमान हो।

- राधे श्याम शर्मा 'राधे'

आवश्यकता है CAT/MBA के लिए दक्षतापूर्ण तैयारी

एस. के. गुप्ता, नई दिल्ली

सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों का विनिवेश तथा बीमा क्षेत्र के निजीकरण ने सरकारी विभागों में रोजगार के अवसर का न्यूनीकरण कर दिया है। अतएव आज आजीविका के सर्वाधिक इप्सित विकल्पों में एम.बी.ए. एक विकल्प बन चुका है।

आई.आई.एम. - भारत में प्रबंधन शिक्षा की उत्तम संस्थाएं हैं। आई.आई.एम. [IIM'S] में नामांकन के लिए सर्वप्रथम प्रवेश परीक्षा CAT (कॉमन एडमिशन टेस्ट) में सम्मिलित होना पड़ता है। एम.बी.ए. की जननी कही जाने वाली CAT में हर साल लाखों छात्र सम्मिलित होते हैं। CAT में सम्मिलित होने वाले छात्रों की संख्या में हर साल २०-३० प्रतिशत वृद्धि भयावह प्रतिस्पर्धा का द्योतक हैं।

CAT में सफलता प्राप्त करना हर साल कठिन बनता जा रहा है। दक्षतापूर्ण तैयारी तथा साधन-स्रोत (समय एवं शक्ति) के सम्यक् परिचालन के बिना आई.आई.एम. में प्रवेश पाने की सम्भावना बहुत न्यून रह जाती है। परीक्षार्थी को समय बचत करने के हरेक उपकरण तथा तकनीक का प्रयोग करना चाहिए।

भारत में आई.आई.एम. के अतिरिक्त कुछ और टॉप बिजनेस स्कूल है। जैसे- जेवियर्स लेबर रिसर्च इंस्टीट्यूट [XLRI], फैकल्टी ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज [FMS], जमनालाल बजाज इन्स्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, एस.पी. जैन इन्स्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एण्ड रिसर्च, मैनेजमेंट डेवलप्मेंट इंस्टीट्यूट (एम.डी.आई.) सिम्बायोसिस इन्स्टीट्यूट ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट, इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ फौरेन ट्रेड इत्यादि।

प्रवेश परीक्षा का नया ढंग- विगत में सभी बिजनेस स्कूल (बी-स्कूल) अपने-अपने ढंग से लिखित परीक्षा संचालित करते थे। फलस्वरूप छात्रों को बहुत सारी प्रवेश परीक्षाओं में सम्मिलित होना पड़ता था। ऐसा करने में उन्हें अतिरिक्त आर्थिक बोझ तथा मानसिक दबाव सहन करना पड़ता था। छात्रों की इन तमाम दिक्कतों के निराकरण के लिए भारत सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय ने कुछ नये निर्देश निर्गत किये हैं। तदनुसार देश के सभी बिजनेस स्कूल सम्पूर्ण भारत के आधार (ऑल इंडिया बेसिस) पर एम.बी.ए./पी.जी.डी.एम. में छात्रों का नामांकन शैक्षिक सत्र २००५-२००६ से एक ही प्रवेश परीक्षा कॉमन ऑल इण्डिया टेस्ट के आधार पर करेंगे।

योग्यता : स्नातक की डिग्री किसी भी क्षेत्र में।

नामांकन की प्रक्रिया : टॉप बिजनेस स्कूल में नामांकन की प्रक्रिया दो चरणों में पूरी होती हैं-

लिखित परीक्षा तथा समूहगत विचार-विमर्श (जी.डी.)/ व्यक्तिगत अन्तर्दीक्षा (पर्सनल इन्टरव्यू)। लिखित परीक्षा दो घंटे की होती है, जिसमें १५०-१८५ मल्टीपल च्वाइस प्रश्न होते हैं। क्वान्टीटेटिव एप्टिट्यूड (मैथ), इंग्लिश युसेज, रीडिंग कम्प्रिहेन्सन, रिजनिंग, डेटा इन्टरप्रिटेशन, डेटा सफिसिएन्सी तथा बिजनेस अवेयरनेस आदि सब्जेक्ट्स की परीक्षा ली जाती है। लिखित परीक्षा में हुई उपलब्धि के आधार पर उम्मीदवारों को जी.डी. के लिए बुलाया जाता है। बुलाए गए उम्मीदवारों को छोटे-छोटे समूह में विभाजित कर उन्हें ग्रुप डिस्कशन के लिए सब्जेक्ट दिया जाता है। उम्मीदवार के अभिव्यक्ति कौशल, दलगत कार्यशैली (टीम वर्क) तथा फिजिकल लैंग्वेज का अवलोकन कर उनके व्यक्तित्व का मूल्यांकन करना जी.डी. का मुख्य उद्देश्य है।

उम्मीदवार से साक्षात्कार कर उनके व्यक्तित्व की खूबियों को समझने तथा उनका मूल्यांकन करने के लिए व्यक्तिगत अन्तर्दीक्षा ली जाती है।

भारत के टॉप बिजनेस स्कूल से एम.बी.ए. की उपाधि प्राप्त करना देश के लाखों छात्रों का सपना है। CAT अथवा अन्य एम.बी.ए. प्रवेश परीक्षा जैसे- GMAT, FMS, XLRI, IIFT इत्यादि, में सफलता प्राप्त करने के लिए अच्छी रणनीति, उचित योजना तथा सही मार्गदर्शन आवश्यक होता है।

परीक्षा में सफलता के कुछ उपाय

१. गणित में तीव्रता (स्पीड मैथ)- तीव्र गति से गणित के प्रश्न को हल करना किसी भी प्रवेश परीक्षा में अत्यावश्यक होता है। गणित के मौलिक भाग का सम्यक् ज्ञान और उस पर पकड़ तथा वैदिक गणित तकनीक की जानकारी बहुत ही जरूरी है। नियमित अभ्यास कर छात्र गणित तथा तक्यांक व्याख्या के प्रश्न हल करने की गति तथा शुद्धता आश्चर्यजनक रूप से बढ़ा सकते हैं।

२. तीव्र पाठ (स्पीड रिडिंग)- CAT/MBA प्रवेश परीक्षा की तैयारी करने वाले छात्र के लिए स्पीड रिडिंग एक बहुत ही महत्वपूर्ण उपकरण हैं। सामान्यतया एक छात्र की पढ़ने की औसत गति २००-२५० शब्द प्र.मि. होती है जिसे बढ़ाकर ४०० शब्द प्र.मि. किया जा सकता है। छात्रों के पढ़ने की धीमी गति के मुख्य कारण हैं, उनकी कुछ गलत आदत जैसे- सीमित दृष्टिपात, पढ़ते समय पढ़े हुए अंश को पुन: पढ़ने की इच्छा तथा बोलकर पढ़ना आदि। इन तमाम बुरी आदतों से छुटकारा पाने के लिए धैर्य की जरूरत है। अभ्यास कर छात्र पढ़ने की अच्छी आदत डाल सकते हैं।

३. स्मरण शक्ति अभिवृद्धि (मेमोरी इम्प्रूवमेंट)- किसी भी प्रवेश परीक्षा की तैयारी में मेमोरी की भूमिका महत्वपूर्ण होती हैं। छात्रों को बहुत सारे तथ्य, सिद्धान्त अवधारणा तथा और बहुत-सी चीजें याद रखनी पड़ती है। किसी भी महत्वपूर्ण परीक्षा की तैयारी करने वाले छात्र के लिए एक गंभीर समस्या है- एकाग्रता की कमी।

यदि आप विजुअलाइजेशन और एसोसिएशन की आदत डालें तो किसी भी सब्जेक्ट को सीखना बहुत ही सहज बन जाता है। इसके दो ही आवश्यक तत्व हैं- रूचि तथा लगन।

४. व्यक्तित्व विकास (परसनैलिटी डेवलप्मेंट)- बिजनेस स्कूल में नामांकन के लिए छात्रों को चयन के विभिन्न चरणों से गुजरना पड़ता है। (जैसे- लिखित परीक्षा, ग्रुप डिस्कशन, पर्सनल इन्टरव्यू)।

तैयारी के शुरू से ही जी.डी. और इन्टरव्यू ट्रेनिंग पर पूरा ध्यान देना चाहिए। आत्मविश्वास बढ़ाने तथा सीखने के सही तरीके की जानकारी के लिए **छात्रों को छद्म (मॉक) जी.डी. तथा मॉक इन्टरव्यू में अवश्य सम्मिलित होना चाहिए।**

राजस्थानी साहित्य में नारी

✍ महावीर प्रसाद सुरेका

यदि विश्व के इतिहास से भारत का इतिहास निकाल दें। भारत के इतिहास से राजस्थान का इतिहास हटा दें तो इतिहास में कुछ नहीं बचेगा, जैसे बारह महीने में एक महीने सावन का सूखा निकल जाने पर कुछ नहीं बचता है। भोजन में जिस तरह षडरस भोजन होता है, उसी तरह राजस्थानी साहित्य में छहों रस विद्यमान हैं। दूसरी भाषाओं में एक साथ 'श्रृंगार रस', 'वीर रस', 'हास्य रस', 'रौद्र रस' इत्यादि का एक साथ मिलना दुर्लभ है। जैसे एक राजस्थानी वधू अपने पति से चन्द्रमा की सोलह कलाओ को एक साथ देखने के लिए कहती है। स्त्रियों को चन्द्रमुखी कहा गया है। अपने मुख को लक्ष्य करके नव वधू कहती है -

'सब तिथिपन को चन्द्रमा, देख्यों चाहों आदा।
तो धीरे-धीरे घुंघटों खोलों हे महाराज।'

श्रृंगार रस में प्रेम की मर्यादा का ध्यान कैसे रखा जाता है, यह देखने के लिए राजस्थानी रमणी ही से शिक्षा मिलती है। एक रमणी का पति जब विदेश से आता है तो बाहर बैठक में सब पुरुषों में बैठ जाता है, भीतर पोली के अन्दर नायिका प्रणाम करना चाहती है, लेकिन मर्यादा आगे आ जाती है। सबके सामने प्रणाम कर नहीं सकती सो कैसे जुहार करती है देखिए-

'साजन आयो हूं सुणूं, तोड़ूं मोतियन हार।
जग जाण मोती चुग, झुक-झुक करूं जुहार।'

राजस्थान की धरती में व साहित्य में कितना प्रेम दर्शाया गया है, उसका वर्णन नहीं हो सकता। वही नारी जब अपने पति को युद्ध में भेजती है, तो देश प्रेम के आगे पति प्रेम को ठुकरा देती है, यह श्रृंगार रस को वीर रस में बदल देती है और माथे पर तिलक लगाकर विदा करते हुए कहती है-

'पाछा फिर मत झाकज्यों, पग मत दीज्यो टार,
कट भल जाज्यो खेत में, पर मत आज्यो हार।।'

कितनी निर्दयी बन जाती है, इतना ही नहीं वही कोमलांगी श्रृंगार रस की नायिका इसके भी आगे बढ़कर कहती है-

'कंथ लखीजै दो हि कुल, ढलती फिरती छांह।
मुड़ियां मिलसी गीडवों, मिले न धण री बाह।।'

यदि युद्ध में हार कर आप आएंगे तो मेरी बांह पर सिर रखकर सोने को नहीं मिलेगा, तकिया ही मिलेगा, यह वीर रस की पराकाष्ठा दर्शाती है, फिर भी पति को उत्साह दिलाने के लिए कहती है- कहीं ये अपने को अकेला महसूस न करें और हिम्मत न हार दे-

'सीख राज री होय तो, हूं भी चालू साथ,
दुसमण भी फिर देख ले म्हारा दो-दो हाथ।।'

इस तरह का साहित्य त्याग का, बलिदान का, शौर्य का, राजस्थान को छोड़कर अन्यत्र दुर्लभ है, राजस्थानी वीरांगना के त्याग को देखकर देवता भी सिर झुकाते हैं। वही नारी हारे हुए पति को लौटते देखकर पूछती है कहीं पीठ दिखाकर तो नहीं आए हो? जब उसे मालूम पड़ता है कि पीठ दिखाकर आए हैं पतिदेव तो दु:खी होकर कहती है-

'यो सुहाग खारो लगे, जद कायर भरतार
रंडापो लागे भलो, होय सूर सरदार।'

कितना ऊंचा साहित्य है राजस्थान का और उसमें भी नारी जाति का त्याग, बलिदान, वीरता, धीरता इत्यादि की बराबरी कहीं नहीं मिलती। इतना होते हुए भी आज उसी नारी को दहेज के लिए उसी राजस्थानी समाज में अन्याय करते सुनता व देखता हूं तो मन में बड़ी पीड़ा होती है। समाज को भगवान सद्बुद्धि दे इसी के साथ मैं लेखनी को विराम देता हूं।●

प्रशिक्षण शिविर

✍ शिवचरण मंत्री

प्रदेश का महानगर। महानगर के चर्चित, प्रतिष्ठित, जागरुक, समाजसुधारक बाबू हितेष जी। हितेष जी को शिविर आयोजित करते रहने की आदत है। लोगों की सोच में बदलाव, नवीनतम जानकारी आदि उद्देश्यों की पूर्ति के लिए हितेष जी तीन दिन से लेकर एक माह तक की अवधि के कई 'बालसंस्कार शिविर', 'युवा रोजगार शिविर', 'दहेज प्रताड़ना शिविर', 'मातृ शिशु कल्याण शिविर' आदि आयोजित करते रहे हैं। इन शिविरों में देश, प्रदेश व स्थानीय प्रबुद्ध जनों के भाषण, वार्ता, चर्चा करवाना उनके मन भावन कार्य रहे हैं।

कई प्रकार के शिविरों के आयोजक हितेषजी ने इस बार प्रदेश के सुदूर आदिवासियों के लिए 'आदिवासी चेतना शिविर' का आयोजन किया। चेतना शिविर में आदिवासियों को उनके साथ होने वाले अन्यायों के बारे में यथा उनके साथ होने वाली धोखाधड़ी, ठगी, मार-पीट, आर्थिक शोषण, महिलाओं के साथ होने वाले अत्याचार, बालविवाह, शिक्षा के प्रति मानसिक बदलाव आदि कई विषयों पर विशेषज्ञों, विद्वानों, समाजसुधारकों, प्रशासनिक अधिकारियों आदि के विचार, चर्चा, वार्ताएं आदि करवायें।

हर शिविर के अन्तिम दिन, समापन समारोह की भांति इस शिविर का भी समापन समारोह आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि के भाषण के पूर्व कतिपय आदिवासी लोकगीत आदि प्रस्तुत किए गए। कुछ विशिष्ट व्यक्तियों के अशीष वचन पश्चात् तनकू आदिवासी को शिविर में चर्चित, बातों के बारे में अपने विचार प्रस्तुत करने को बुलवाया गया। तनकू कांपता कांपता, सिमटता सिकुड़ा मंच पर आया और अपनी टूटी-फूटी बोली में जो बोला उसका आशय था, इस शिविर से ही ज्ञात हुआ कि हमें हमारे प्रति हो रहे अन्यायों यथा भ्रष्टाचार, बलात्कार, धोखाधड़ी, ठगाई आदि का क्या अर्थ होता पर हम गरीबों, असहायों, असमर्थ को यह सब सहना ही होगा। इसका कारण साफ है कि यहां पर आये सामान्यतया सभी वक्ता हाथी के दिखाई देने वाले व खाने के दांतों के पृथक-पृथक होने से हैं। बातें मीठी-मीठी, आदर्श की करते हैं पर समय आने पर यही लोग मूकदर्शक बन कर देखते ही नहीं रहते अपितु अन्यायी का परोक्ष रूप में साथ देते हैं। ये लोग चोर को चोरी करने तथा साहूकार को जागते रहने की सलाह देने में प्रवीण हैं। हम अपने सात्विक, सरल जीवन जीने के इच्छुक हैं। हमें अपने जीवन व परम्पराओं से बड़ा स्नेह है। तनकू की बात सुनकर हितेष जी बगलें झांकने लगे।●

गुरुभाई स्वामी अखण्डानन्द को लिखे गए दो महत्वपूर्ण पत्र

पूज्य स्वामी विवेकानन्दजी अपने गुरुभाई स्वामी अखण्डानन्दजी को राजस्थान में कार्य करने के लिए,गरीबों के उद्धार के लिए सेवा और शिक्षा का निर्देश (उपदेश) देकर कार्य में हृदय से जुट जाने के लिए प्रेरित किया। -१८९४

प्रिय अखण्डानन्द,

तुम्हारा पत्र पाकर मुझे अति प्रसन्नता हुई। बड़े ही आनन्द का विषय है कि खेतड़ी में रहते हुए तुम्हारे स्वास्थ्य में अच्छी वृद्धि हुई है।

तारक दादा ने मद्रास में खूब काम किया है। बड़ा ही आनन्ददायक समाचार है। मैंने मद्रासवासियों से उसकी बहुत प्रशंसा सुनी है।...

राजपूताना के विभिन्न स्थानों में रहनेवाले ठाकुरों में आध्यात्मिक एवं परोपकार के भाव के विकास करने का प्रयत्न करो। हमें काम करना है और काम केवल बैठे रहने से नहीं हो सकता। अलसीसर, मलसीसर और जो वहां के दूसरे 'सर' है वहां जाया करो। मन लगाकर संस्कृत व अंग्रेजी का अध्ययन करो। प्रतीत होता है कि गुणनिधि पंजाब में होगा। उसको मेरा विशेष प्रेम पहुंचाना और उसे खेतड़ी ले आना। तुम उसकी सहायता से संस्कृत पढ़ो और उसे अंग्रेजी पढ़ाओ। जैसे भी हो मुझे उसका पता जरूर भेजना। गुणनिधि है अच्युतानन्द सरस्वती।

खेतड़ी नगर की दरिद्र एवं निम्न जातियों के द्वार-द्वार जाओ और उन्हें धर्म का उपदेश दो। उन्हें भूगोल तथा अन्य इस प्रकार के विषयों पर मौखिक पाठ पढ़ाओ। जब तक दरिद्रों के लिए कोई कार्य न करो तब तक खाली बैठकर राजभोग खाकर 'हे प्रभु रामकृष्ण' कहने से कोई लाभ न होगा। कभी-कभी दूसरे गांवों में भी जाओ तथा लोगों को जीवन कला की शिक्षा दो और धर्मोपदेश भी करो। **कर्म, उपासना और ज्ञान- पहले कर्म, उसे तुम्हारा मन शुद्ध हो जायेगा। नहीं तो राख के ढेर पर पड़ी आहुति की भांति सभी निष्फल हो जायेगा। जब गुणनिधि आ जाये तब राजपूताना के प्रत्येक गांव में दरिद्र और कंगालों के द्वार-द्वार घूमो। यदि लोग तुम्हारे भोजन को दूषित बताएं तो उस प्रकार के भोजन को तुरंत त्याग दो। दूसरों के हित के लिए घास खाकर रहना अच्छा है। गेरूआ वस्त्र भोग के लिए नहीं है, वह वीर कार्य की पताका है। अपने शरीर, मन और वाणी को जगद्धिताय अर्पण करना होगा। तुमने पढ़ा है, 'मातृ देवो भव, पितृ देवो भव'- अपनी 'माता को ईश्वर मानो, अपने पिता को ईश्वर मानो'- परंतु मैं कहता हूं 'दरिद्र देवो भव, मूर्ख देवो भव'- दरिद्र, निरक्षर, मूर्ख और दुःखी- यही तुम्हारे ईश्वर हो। यह जानो कि केवल इन्हीं की सेवा करना परम धर्म है।....**

- आशीर्वाद
विवेकानन्द

केशव का आत्ममंथन

सिर्फ बातों से भला कब बन सकी है बात?
शक्ति आवश्यक, यहां तो शक्ति का संघात।
सत्य तो यह, संगठन ही शक्ति का है उत्स
जो खड़ा हो प्रेम, निष्ठा, ध्येय पर अवदात॥

किन्तु ऐसा संगठन तो चाहता बलिदान
स्वप्न, चिन्तन, हृदय के कोमल, मधुर अरमान,
व्यक्तिगत सुख-लालसा या उच्च पद का गर्व
सब समर्पित यदि, तभी हो लक्ष्य का संधान॥

कौन धारण कर सकेगा व्रत कठिन असिधार
सुन सकेगा कौन बिखरा मौन हाहाकार?
युग-युगों की ग्लानि संचित धो सकेगा कौन
ला सकेगा कौन गंगा की अमृतमय धार?

आह, शत-शत प्रश्न, उत्तर किन्तु उनका एक
दूसरे आगे बढ़ें यह चाहना अविवेक।
क्यों बढ़े कोई तुम्हारी दृष्टि के अनुरूप
यदि स्वयं तुम ठान सकते हो नहीं वह टेक?

नींव का पत्थर बनूंगा यह सुदृढ़ संकल्प
ठन सके यदि, दूर क्षण में हों समस्त विकल्प।
आत्मबलि ही सर्जना का मूलभूत रहस्य
वृक्ष तो है बीज का ही दिव्य कायाकल्प!!

- डा. विष्णुकांत शास्त्री

रश्मि संदेश

ज्ञान-विज्ञान की खिड़की खुली हुई, शिक्षा के प्रकाश को पाना है
क्या हो रहा धरा पर 'सर्वहित', यह देखते-सुनते जाना है।
कदम बढ़ें खुशी के पथ पर नौनिहालों को बतलाना है
हो भविष्य उज्वल सब जन का यह ध्येय जीवन में लाना है।
मिले सुविवेक, निष्ठा-भाव सबको ऐसा मन-मस्तिष्क बनाना है
हो उदित भास्कर ज्ञान का सर्व-जीवन में आज कहता यही 'जमाना' है।

कहीं पिछड़ न जायें - लोक-हित कर्मों में
यह अन्दाज मिल-जुलकर लगाना है
प्रतिभा की कोई कमी नहीं है --
न मिले प्रकाश - ऐसी कोई जमीं नहीं है
बस 'लगन-साधन' सुलभ रहे --
ऐसा मंसुबा - हमें बनाना है॥

'सेटेलाईट' से बातें करते मौसम-सागर की हलचल पकड़ते
कृषि-अनुसंधान प्रगतिशील हो चिकित्सा-विज्ञान भी संग शामिल हो
गणित-शास्त्र की माथा-पच्ची समीकरण को और भी सहज बनाना है॥

कम्प्युटर-लेप-टॉप का आज हर कोई दीवाना है--
हो सदुपयोग अन्य तकनीकी शास्त्र का
यह दृढ़ कदम उठाना है॥

- नरेन्द्र कुमार बगड़िया
कोलकाता

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

युग पथ चरण

उज्जैन कुम्भ मेले में मारवाड़ी सम्मेलन की भूमिका

इस वर्ष उज्जैन में सिंहस्थ कुम्भ मेला २००४ के दुर्लभ व पावन अवसर पर सम्मेलन के महामंत्री श्री भानीराम सुरेका एवं संयुक्त महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार उज्जैन में १६ अप्रैल से २२ अप्रैल तक उपस्थित रहेंगे तथा अपने प्रवास काल के दौरान अग्रवाल महासभा के पदाधिकारियों से मिलकर मारवाड़ी सम्मेलन के विषय में विचार-विमर्श करेंगे।

इस अवसर पर सम्मेलन द्वारा एक छोटी-सी सेवा के रूप में यात्रियों के लिए नींबू की शिकंजी पिलाने की व्यवस्था की गई है।

विद्यामंदिर सभागार में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का स्वागत विभिन्न संस्थाओं द्वारा किया गया। इस अवसर पर अपना उद्‌गार पेश करते हुए महामंत्री श्री भानीराम सुरेका। पास में खड़े हैं समारोह के संयोजक लायंस क्लब के डिस्ट्रिक्ट गवर्नर श्री सुभाष मुरारका।

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा कोष

संगोष्ठी : शिक्षा की दशा और दिशा पर संगोष्ठी आयोजित

आत्मगौरव-आत्मविश्वास के जरिए आज इस बिगड़े समाज में सुधार लाया जा सकता है, शिक्षक छात्र के प्रति संवेदनशील हों, उसकी प्रतिभा को पहचानने-निखारने में दिलचस्पी लें, तभी शिक्षा में विधा का विकास हो सकता है। जब दिशा सही मिल जायेगी तो दशा अच्छी होगी ही। ये बातें प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. कृष्ण मिश्र ने २० जनवरी को पश्चिम बंगीय मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा कोष द्वारा आयोजित शिक्षा की दशा और दिशा विषय पर एक संगोष्ठी में कही । उन्होंने कहा शिक्षा के महत्व को आज सब लोगों ने जान लिया है, यह सौभाग्य की बात है। शिक्षा केवल नौकरी के लिए नहीं, मानुष बनाने के लिए होना चाहिए। मनुष्य सुसंस्कार, चरित्रवान बने, पर अहंकारी नहीं। अहंकार से रिश्ते टूटते हैं, इसके प्रति सचेत रहें। हम शिक्षा के माध्यम से नयी पौध में ग्रंथियां न पैदा करें। आज अमीर बच्चों के लिए जो विशिष्ट विद्यालय धड़ाधड़ खुल रहे हैं, मुझे यह सामाजिक अपराध लगता है। ऐसे विद्यालय में पढ़ाने वाले अभिभावक सोचते हैं कि इसमें पढ़ कर मेरा बेटा 'कलाम' और 'जे.के. कृष्णमूर्ति' जैसा होगा। यह दिवास्वप्न मूर्खतापूर्ण है। आज साधारण स्कूलों के बच्चे ही शिखर पर पहुंचते है। शिक्षकों का अपने पेशे के प्रति आत्मगौरव तथा आचरण गरिमापूर्ण होना चाहिए। शिक्षक बच्चों में आत्मविश्वास जगाएं। केवल उन्हें सच्चे बनो का पाठ पढ़ायें तो हर सफलता उसके साथ होगी। जो दायित्व लिया है उसे पूरा करें। विद्या साधना में लगे रहना, यही लक्ष्य होना चाहिए।

प्राध्यापिका श्रीमती निर्मला कोचर ने कहा कि विद्यालय में प्रवेश के बाद बच्चे अपने वजन से ज्यादा भारी बैंगों में किताबें ढोते हैं। स्कूल से आने पर ट्यूशन की भागदौड़। बाकी समय देर रात टीवी के कार्यक्रम देखना। थक कर सो जाना। फिर अनचाहे मन से स्कूल जाना। इसी अंधी दौड़ में बच्चों का मानसिक सर्वांगीण विकास नहीं होता। आज स्कूल परीक्षाओं के लिए रजिस्ट्रेशन केन्द्र के रूप में बदल गया है। इससे छात्रों में शिक्षकों के प्रति श्रद्धा का भाव नहीं होता। बिना श्रद्धा के ज्ञान कैसा? परिणाम यह होता है कि शिक्षित होकर भी व्यक्ति अनपढ़ रह जाता है।

ज्ञानभारती विद्यापीठ के प्रधानाचार्य डॉ. सी.पी. दीक्षित ने कहा कि शिक्षक एवं छात्रों में आत्मीय संवाद के जरिए शिक्षा के स्तर को उठाया जा सकता है। इस अवसर पर सचिव श्री बाबूलाल अग्रवाल ने संस्था की गतिविधियों की जानकारी दी। सहायक सचिवश्री कृष्ण कुमार लोहिया ने संचालन व धन्यवाद ज्ञापन किया।

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

कोलकाता शाखा : गणतंत्र दिवस समारोह

कलकत्ता मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा भारत का ५५वां गणतंत्र दिवस समारोह सम्मेलन कार्यालय के समक्ष मनाया। अ.भा.मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने ध्वजारोहण किया एवं कहा कि हमें अपने समाज को संगठित कर देश को उन्नति के चरम शिखर पर ले जाना है। इस कार्य में जो भी बाधाएं आये उनका हमें निराकरण करना होगा। सम्मेलन के महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने कहा कि देश अभी कई समस्याओं से जूझ रहा है, हमें एकत्रित होकर इन समस्याओं का समाधान करना होगा। इस अवसर पर सर्वश्री मुरारीलाल खेतान, अनिल शर्मा, लोकनाथ डोकानिया, नन्दलाल सिंहानिया, सांवरमल अग्रवाल, अरुण भुवालका आदि वक्ताओं ने अपने विचार प्रगट किये। काव्य गोष्ठी के अन्तर्गत श्री परशराम तोदी ने राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत अपनी रचनाओं का पाठ किया। कुमार मंजु वैद्य ने अपनी रचना 'मैं हूं गरीब की बेटी' का पाठ किया जिसे श्रोताओं ने सराहा। कार्यक्रम

की अध्यक्षता कलकत्ता सम्मेलन के अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश पोद्दार (पूर्व पार्षद) ने की एवं कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन श्री आत्माराम तोदी ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में सर्वश्री राजाराम शर्मा, रामचंद्र बडोपोलिया, बासुदेवजी खेतान का सक्रिय सहयोग रहा। सड़क के लगभग ३० बच्चों को इस अवसर पर मिठाइयां एवं फल बांटे गये।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

कटिहार शाखा : अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन का ६८वां स्थापना दिवस आयोजन

कटिहार अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के ६८वें स्थापना दिवस पर आयोजित समारोह का उद्घाटन करते हुए विधान पार्षद श्री अग्रवाल ने सामाजिक क्षेत्र के साथ-साथ राजनीतिक क्षेत्र में धाक जमाने की अपील युवाओं से की। उन्होंने स्पष्ट कहा कि सहयोग, सेवा और बलिदान का पर्याय ही मारवाड़ी समाज है। उन्होंने इस बात का खुलासा किया कि राजनीतिक नेताओं और रंगदारों से समाज को अस्थायी सुरक्षा ही मिल सकती है। स्थायी सुरक्षा के लिए समाज के युवकों को गोलबंद होना पड़ेगा। उन्होंने यंग फ्रेंड्स एसोसियेशन को अपने कोटे से जनता की सेवा हेतु एम्बुलेंस देने की घोषणा की।

संस्था के सचिव श्री एस.एन. अग्रवाल ने मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना के उद्देश्यों से उपस्थितजनों को अवगत कराया। सर्वश्री श्यामलाल अग्रवाल, अनिल चमारिया, महाबीर प्रसाद डोकानिया, नरेश शर्मा आदि ने इस बात पर बल दिया कि मारवाड़ी शब्द से ही हमारी पहचान है, इसलिए उपजातियों में बंटना ठीक नहीं है। मंच का संचालन करते हुए नगर पार्षद श्री विमल बेगानी ने राजनीतिक क्षेत्र में जनसंख्या के अनुपात में प्रतिनिधित्व प्राप्त करने का आह्वान किया। डा.जी.पी. तमाखुवाला ने कहा कि संस्था के अध्यक्ष और सचिव द्वारा अनुशासित व्यक्तियों को पैथोलाजी सहित सभी प्रकार की जांच में २० प्रतिशत की छूट दी जायेगी। इस अवसर पर स्वास्थ्य जांच शिविर में ६४० व्यक्तियों के स्वास्थ्य का परीक्षण कर मुफ्त दवा वितरित की गई। समाजसेवी श्री रामशरण अग्रवाल और श्री ओमप्रकाश मित्तल ने संस्था को मुफ्त दवा उपलब्ध करायी। सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. राम निवास शर्मा ने मारवाड़ी समाज के लोगों से आपसी मनमुटाव एवं भेदभाव को छोड़ मजबूती के साथ एक जुट होने का आह्वान किया।

रक्सौल शाखा : पुनर्गठन एवं सम्मेलन के स्थापना-दिवस पर आयोजित समारोह

रक्सौल शाखा का पुनर्गठन १७ नवम्बर २००३ को हुआ जिसमें राजकुमार अग्रवाल- अध्यक्ष, श्री गोविन्द प्रसाद मस्करा- उपाध्यक्ष, श्री कैलाश चन्द्र काबरा- शाखा मंत्री, श्री प्रदीप कुमार अग्रवाल- कोषाध्यक्ष, श्री उमेश कुमार सिकरिया और श्री विश्वनाथ प्रसाद अग्रवाल- संयुक्त मंत्री सर्वसम्मति से चुने गये।

कार्यकारिणी के सदस्यों के रूप में सर्वश्री पुष्पू सराफ, संतोष कुमार केसान, दिलीप कुमार जालान, सीताराम गोयल, पुरुषोत्तम लाल अग्रवाल, अशोक कुमार अग्रवाल, अशोक कुमार बजाज, प्रमोद कुमार अग्रवाल चुने गये।

पुनर्गठन के बाद स्थानीय शाखा को 'बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन' के द्वारा भाग्यशाली दानपत्र योजना के अंतर्गत (२०० टिकटें) २०,०००/- मूल्य की प्राप्त हुई जिनका पूर्ण निष्पादन प्राप्त सीमित समय में किया गया।

३० दिसम्बर को 'बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन' के स्थापना दिवस का समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सुन्दरकांड के पाठ के साथ हुआ। तत्पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

विभिन्न विद्यालयों में अपनी-अपनी कक्षाओं में प्रथम आनेवाले छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया और प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। साथ ही प्रतियोगिताओं में प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वाले विजेताओं को आकर्षक पुरस्कार दिये गये।

इस अवसर पर श्री सीताराम बाजोरिया, प्रमंडलीय उपाध्यक्ष विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे। स्थानीय शाखा के समस्त पदाधिकारियों के अतिरिक्त समाज के गणमान्य लोग सपरिवार उपस्थित थे।

सहरसा शाखा : नेत्रदान शिविर आयोजित

२२.१२.२००३ को सहरसा में सहरसा चक्षुदान यज्ञ समिति द्वारा नेत्रदान शिविर लगाया गया। शिविर में डॉ. बी.एन. खन्ना द्वारा ३१६ सफल आपरेशन किए गए जिसमें मोतियाबिंद के २९५ आपरेशन सफलतापूर्वक हुए। प्रशासन एवं जनसेवकों ने सहरसा चक्षुदान यज्ञ समिति का पूरा-पूरा सहयोग किया।

चनपटिया शाखा : स्थापना दिवस एवं सम्मान समारोह सम्पन्न

समाज हमारा देवता है और हम उसके पुजारी हैं। मारवाड़ी समाज को पूर्ण रूप से संगठित होकर देश के सर्वांगीण विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करना है। हम राष्ट्र की प्रगति के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं। उपरोक्त विचार अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के ६९वें स्थापना दिवस सह मिलन समारोह के अवसर पर विगत २५ दिसम्बर की रात्रि में वरीय समाज सेवी रामनिवास रूंगटा ने व्यक्त किये। आयोजन की अध्यक्षता सत्यनारायण रूंगटा ने की जबकि संचालन चर्चित कवि युगल किशोर चौधरी ने किया। शाखा मंत्री श्यामसुन्दर प्रसाद तुलस्यान, हनुमान प्रसाद जोशी, ओमप्रकाश अग्रवाल एवं महिला मंच की सचिव श्रीमती वीणा देवी तुलस्यान ने सामाजिक एकता पर बल देते हुए मारवाड़ी समाज को इक्कीसवीं सदी का नया समाज बनाने का आह्वान किया। इस अवसर पर नगर के वयोवृद्ध समाजसेवी नन्दलाल तुलस्यान को उनकी दीर्घकालीन समाजसेवा के लिए सम्मानित किया गया। तत्पश्चात श्रीरानी सती मंदिर की ट्रस्ट कमेटी का नया चुनाव हुआ जिसमें मोहनलाल जैन, रामनिवास रूंगटा, प्रमोद कुमार झुनझुनवाला, युगल किशोर चौधरी, सत्यनारायण प्रसाद बंका, अमरचन्द तुलस्यान एवं श्यामसुंदर प्रसाद

तुलस्यान ट्रस्टी निर्वाचित हुए। विश्वनाथ प्रसाद केजरीवाल, ओमप्रकाश अग्रवाल, सुशील कुमार झुनझुनवाला एवं रतन लाल डोकानिया विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में निर्वाचित किये गये। मंदिर के दिवंगत ट्रस्टी श्यामसुन्दर प्रसाद तुलस्यान को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन

रांची : राजस्थानी भाषा की मान्यता के लिए सिफारिश

सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं अखिल भारतीय राजस्थानी भाषा मान्यता संघर्ष समिति के राष्ट्रीय महामंत्री श्री हनुमान सरावगी ने भारत के उप प्रधानमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी को दिनांक १४ फरवरी २००४ को लिखे अपने पत्र में राजस्थानी भाषा को भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने की मांग करते हुए कहा कि आगामी लोकसभा चुनावों में चुनाव घोषणा पत्र में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया जाए कि आपकी पार्टी राजस्थानी भाषा को भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित किए जाने का पूर्ण समर्थन करती है।

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

बलांगीर : आँख आपरेशन शिविर सम्पन्न

बलांगीर व बरगढ़ जिला के २५ गांवों को मिलाकर एक आंचलिक अग्रसेन समिति का गठन किया गया जिसने १५ दिसम्बर को नगांव, लाऊमुडा, गुदेरपाली एवं आगलपुर में आंख आपरेशन शिविर लगाये गए जिसमें १०८० मरीजों की आंखों का परीक्षण व २७३ मरीजों की आंखों का आपरेशन किया गया। मरीजों के आने जाने और भोजन की नि:शुल्क व्यवस्था थी। शिविर का उद्घाटन बलांगीर जिला सम्मेलन अध्यक्ष श्री हरि नारायण जैन एवं जिला कोषाध्यक्ष एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य वेद प्रकाश अग्रवाल के हाथों हुआ।

पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन

गुवाहाटी : ६९वां स्थापना दिवस मनाया

सम्मेलन की गुवाहाटी शाखा ने गत २५ दिसम्बर को सम्मेलन के ६९वें स्थापना दिवस का आयोजन शाखाध्यक्ष श्री दीनदयाल सिवटिया की अध्यक्षता में किया। इस अवसर पर श्री शंकरदेव नेत्रालय की ओर से नेत्रदान संबंधी जानकारियों से उपस्थित समाज बंधुओं को अवगत करवाया गया एवं असम गुजरात वालेन्टरी ब्लड बैंक के माध्यम से रक्त परीक्षण शिविर का आयोजन भी किया गया। समारोह में सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाल मुख्य अतिथि एवं प्रदेशीय महामंत्री श्री ओमप्रकाश खंडेलवाल विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। शाखाध्यक्ष श्री सिवटिया ने सम्मेलन की स्थापना से लेकर अब तक के कार्यों व सम्मेलन की स्थापना के महत्व के बारे में बताया।

सम्मेलन द्वारा समरसता के जरिए किए गए कार्यों पर श्री सिवटिया ने सम्मेलन द्वारा असमिया रामचरित मानस के प्रकाशन के बारे में जानकारी दी और इसे एक महती कार्य बताया। प्रान्तीय अध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाल ने समाज के आत्म गौरव एवं आत्म सम्मान पर बोलते हुए कहा कि हमें अपने सम्मान और अस्तित्व को अक्षुण्ण बनाए रखने हेतु प्रयास करना चाहिए। जिस जाति एवं समाज ने अपने सम्मान की अवहेलना की, वह समाज एक मृतक समाज हो गया।

महामंत्री श्री ओमप्रकाश खंडेलवाल ने सम्मेलन की प्रासंगिकता का उल्लेख करते हुए अधिकाधिक लोगों से इसके सदस्य बनने का आह्वान किया और समाज के सभी वर्गों को सम्मेलन रूपी एक झंडे के नीचे आने को कहा।

समारोह में शंकरदेव नेत्रालय की ओर से आए चिकित्सक दल ने स्लाइड और प्रोजेक्टर के जरिए नेत्रदान की प्रासंगिकता बतायी।

अभिभूत होकर अविलम्ब १६ समाज बंधुओं ने अपने 'नेत्रदान' की घोषणा की।

समारोह में समाज के गणमान्य व्यक्तियों के अलावा महिला समिति की अनेक सदस्याएं भी उपस्थित थीं, जिसमें महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती बिमला रासीवासिया प्रमुख थीं। समारोह को सफल बनाने में सर्वश्री ललित धानुका के अलावा, जयचन्द अग्रवाल (धुबड़ी) एवं संजय केडिया ने विशिष्ट योगदान किया। अंत में शाखाध्यक्ष श्री दीनदयाल सिवटिया ने धन्यवाद दिया।

नौगांव शाखा : ६९वां स्थापना दिवस आयोजित

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का ६९वां स्थापना दिवस समारोह नौगांव शाखा ने ४ जनवरी को आयोजित किया। प्रांतीय अध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाल ने दीप प्रज्वलित कर समारोह का शुभारंभ किया। पिछले एक वर्ष में दिवंगत हुए बंधुओं को मौन श्रद्धांजलि दी गई। शाखा अध्यक्ष श्री संतलाल बंका ने स्वागत भाषण में संगठन को सुदृढ़ करने का आह्वान किया। मुख्य अतिथि सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाल एवं प्रांतीय कोषाध्यक्ष श्री बजरंगलाल नाहटा का असमीया संस्कृति के अनुसार अभिनंदन किया गया। शाखा मंत्री श्री पवन कुमार गाड़ोदिया ने अपने प्रतिवेदन में शाखा की गतिविधियां पेश की।

समारोह में समाज के विशिष्ट समाजसेवी श्री बृजलाल लोहिया का अभिनंदन करने का निश्चय किया गया। शिक्षा के क्षेत्र में विशेष सफलता हेतु सुश्री शिला चौधरी एवं सुश्री पायल अग्रवाल को प्रशस्ती पत्र एवं प्रतीक चिह्न द्वारा सम्मानित किया गया। हाल में हुए म्युनुसीपलिटी चुनाव में विजयी हुए श्री प्रदीप अग्रवाल का सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाल ने

फुलाम गमछा से अभिनन्दन किया। श्री ज्योति प्रसाद खदड़िया ने सभा को सम्बोधित करते हुए असम की ज्वलंत समस्याओं पर सम्मेलन का ध्यान आकृष्ट किया। सर्वश्री भावक चन्द नाहटा, अजीत महेश्वरी, डुगरमल अग्रवाल, बजरंगलाल अग्रवाल, संजय पोद्दार ने भी सभा को सम्बोधित किया। प्रदेशीय अध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाल ने संगठन की स्थापना के लिए उन मनीषियों को श्रद्धांजलि दी जिनके प्रयास से संगठन की स्थापना हुई। सम्मेलन के महिला कोष एवं शिक्षाकोष की जानकारी सभा को दी गई एवं बताया गया कि गुवाहाटी में बालिका छात्रावास की स्थापना का प्रयास चल रहा है। शाखा के संयुक्त सहमंत्री श्री पवन बगड़िया ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

गुवाहाटी- प्रांतीय अध्यक्ष द्वारा राजनीति में भागीदारी निभाने का आह्वान

मारवाड़ी समाज की दानशीलता, कर्मठता, निष्ठा और ईमानदारी जो हमें संस्कार और विरासत में मिले पैतृक गुणों में से है, को इतर समाज के लोग ईर्ष्या की दृष्टि से देखते हैं। हमें इन सब बातों से विचलित हुए बिना, अपने आत्म सम्मान और आत्म गौरव को बचाते हुए अपने कर्त्तव्यों का पालन करना चाहिए, ताकि उससे समाज और राष्ट्र के विकास में अपनी महती भूमिका का निर्वाह हो और आनेवाली पीढ़ी इन सब बातों का अनुशरण करे। ये उद्‌गार है पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाल के जो राजनीति में भाग लेने का आह्वान करते हुए श्री अग्रवाल ने कहा कि आज के परिप्रेक्ष्य में यह अति महत्वपूर्ण है कि समाज अपनी पसंद के अनुसार राजनीतिक दलों में भाग ले और सक्रिय भागीदारी निभाये। हाल ही में आयोजित सम्मेलन की पंचम कार्यकारिणी समिति एवं प्रथम प्रतिनिधि सभा की बैठक को संबोधित करते हुए बोल रहे थे।

बैठक में महामंत्री श्री ओमप्रकाश खण्डेलवाल ने अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया एवं कोषाध्यक्ष श्री बजरंगलाल नाहटा द्वारा प्रस्तुत आय-व्यय के बारे में सर्वसम्मति से स्वीकृति प्रदान की गई। सभा में आगामी अधिवेशन, संविधान संशोधन और शाखाओं की गतिविधियों पर चर्चा हुई, साथ-साथ आर्थिक स्थिति पर भी विचार विमर्श किया गया। बैठक में गत दिनों समाज के दिवंगत व्यक्तियों और हिन्दी भाषियों की असामयिक मृत्यु पर गहरा शोक प्रकट किया गया। महामंत्री श्री खण्डेलवाल ने गत दिनों मुंबई मे आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशन की चर्चा करते हुए बताया कि महाराष्ट्र में समाज के १९ व्यक्ति विधान सभा और लोकसभा सदस्य है, जिनमें कई राज्य और केन्द्रीय मंत्रिमंडल में अपने-अपने दायित्वों का पालन कर राष्ट्र निर्माण में सहयोग कर रहे हैं, उनका अनुशरण करते रहना चाहिए। संयुक्त मंत्री श्री जुगल किशोर सिंघी ने आज के समय में राजनीतिक चेतना को आवश्यक बताया और समाज को इसमें तन-मन-धन और पूर्ण निष्ठा से भाग लेने का आह्वान किया। श्री ओंकारमल अग्रवाल को हाल ही में अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन का राष्ट्रीय उपाध्यक्ष घोषित किये जाने पर 'फुलाम गमछा' से अभिनंदन किया गया। बैठक में लखीमपुर शाखा की ओर से प्रकाशित 'निर्देशिका' एवं सम्मेलन समाचार की सराहना की गयी।

गुवाहाटी : प्रांतीय कार्यकारिणी समिति की बैठक आयोजित

६ दिसम्बर २००३ को सम्मेलन की प्रांतीय कार्यकारिणी समिति की चतुर्थ बैठक गुवाहाटी में आयोजित की गयी जिसमें अन्यान्य विषयों के अलावा सम्मेलन की आर्थिक स्थिति पर विचार-विमर्श किया गया। दैनन्दिन एवं प्रकाशन खर्च हेतु प्रांतीय पदाधिकारी एवं सदस्यों से व्यक्तिगत साधनों से उपलब्ध कराने का आग्रह किया गया।

राहा शाखा : होली प्रीति सम्पन्न

दिनांक ७ मार्च की संध्या राहा के राजस्थानी सार्वजनिक भवन में एक प्रीति सम्मेलन का आयोजन किया गया। विशिष्ट अतिथि थे ऊर्जा एवं उद्योग राज्यमंत्री डॉ. आनन्दराम बरुआ। मुख्य अतिथि थे राहा सर्किल के वृत्ताधिकारी श्री बाबूलाल शर्मा। सर्वप्रथम दोनों अतिथियों का फुलाम गमछा, शाल व राजस्थानी साफा प्रदान कर सम्मानित किया गया। मंत्री महोदय ने अपने सम्बोधन में सार्वजनिक भवन की मरम्मत तथा नवीनीकरण के लिए अपने विधायक फंड से १ लाख रुपया देने का आश्वासन दिया। कार्यक्रम में उपस्थित ग्राम पंचायत सभापति श्री रोहिणी हरदलोई ने भी आश्वासन दिया कि नवीनीकरण में धन की कमी को वे अपने पंचायत फंड से पूरी करेंगे। कार्यक्रम चंग पर ढाल सहित धमाल गाते हुए आरंभ हुआ। सदस्यों व बच्चों द्वारा अनेकों कार्यक्रम रखे गये। सभापति श्री भगवानदास खेमका द्वारा सभी को अभिनंदन तथा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

उत्तर प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन

कानपुर शाखा : मारवाड़ी राजनीतिक मंच बनेगा एवं उच्च शिक्षा के लिए मेधावी छात्रों को ऋण देगा मारवाड़ी सम्मेलन

शाखा निकाय की कार्यसमिति के निर्णयानुसार गृहीत संकल्पों के संबंध में १२ जनवरी को हुई एक प्रेस वार्ता में सम्मेलन के प्रादेशिक अध्यक्ष श्री सोम गोयनका ने कहा कि मारवाड़ी समाज की छवि पर प्रहार करने वाले समस्त लोगों को मुंहतोड़ जवाब दिया जायेगा और इसके लिए समाज की ताकत को संगठित कर राजनीतिक मंच की भी स्थापना की जायेगी। उन्होंने फिल्मों, नाटकों तथा अन्य मौकों पर मारवाड़ी समाज की छवि को खराब करने वाले किरदारों की रचनाओं पर भी रोष जताया और कहा कि ऐसी किसी भी कोशिश का विरोध किया जायेगा। समाज सेवा के कामों में हमेशा आगे रहने वाले मारवाड़ी समाज की छवि फिल्मों और टी.वी. धारावाहिकों में धन के भूखे लालची व्यक्ति के रूप में परोसी जाती रही है। फिल्मों और टी.वी. सीरियलों में लालची और धनपशु के रूप में पेश किये जाने से खफा मारवाड़ी समाज के लोग अब ऐसी किसी फिल्म के प्रदर्शन का विरोध करें।

मारवाड़ी समाज स्वयं को माखौल बनाए जाने का विरोध करेगा और आगे ऐसी किसी भी फिल्म का प्रदर्शन नहीं होने दिया

जायेगा।

प्रेस वार्ता में महामंत्री श्री गोपाल सूतवाला तथा कार्यकारिणी सदस्य श्री राजीव कसेरा भी मौजूद थे।

श्री गोयनका ने कहा निर्बल आय वर्ग के वह छात्र जो मेधावी है, वह समाज द्वारा स्थापित शिक्षाकोष से ब्याज मुक्त ऋण के लिए आवेदन कर सकते हैं, भले ही वह किसी भी समाज के हों। वह बच्चे जो यह ऋण लेंगे, नौकरी लगने पर इसे बिना ब्याज दिये वापस कर सकते हैं। इसके अलावा गरीब एवं विधवा महिलाओं के लिए रोजगार सृजन के लिए सिलाई मशीन वितरण भी किया जायेगा। श्री सूतवाला ने बताया कि जरूरतमंद व्यक्ति डाक द्वारा अध्यक्ष अथवा महामंत्री को अपना आवेदन प्रेषित कर सकते हैं। श्री कसेरा के मुताबिक शहर में जल्दी ही मारवाड़ी भवन का निर्माण कराया जायेगा, जिसे बेहद कम दामों पर समारोह के लिए दिया जायेगा। हालांकि इसे नि:शुल्क देने का भी विचार है लेकिन एक टोकन मनी लेने के प्रावधान इसलिए रखा गया ताकि भविष्य में कभी भी मेंटनेन्स की समस्या न आये।

इसके अलावा मारवाड़ी समाज को सक्रिय राजनीति में लाने के उद्देश्य से एक मंच की स्थापना का भी विचार है जो किसी भी पार्टी में संबंधित नहीं होगा। श्री गोयनका के मुताबिक यह मारवाड़ी समाज के हितों पर ध्यान देगा और आगामी चुनाव के बाद सरकार में भी प्रतिनिधित्व की कोशिश करेगा। प्रेसवार्ता में मुख्य रूप से सर्वश्री विश्वनाथ पारिक, मदन गोपाल तापड़िया, राजकुमार, किशन जोशी, अनिल शर्मा व विजय पांडे आदि मौजूद थे।

कानपुर शाखा : श्रीराम अग्रवाल महामंत्री मनोनीत

१६-१-२००४ अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की कानपुर शाखा की कार्यकारिणी की बैठक हुई जिसमें सर्वसम्मति से श्री श्रीराम अग्रवाल को शाखामंत्री मनोनीत किया गया।

कानपुर : महिलाओं द्वारा मनोरंजक कार्यक्रम प्रस्तुत

कानपुर शाखा के तत्वावधान में एक मनोरंजन कार्यक्रम का आयोजन किया गया, इसमें महिलाओं की प्रतिभा निखारने हेतु संयोजिका श्रीमती पुष्पा बगड़िया ने रंगोली प्रतियोगिता एवं साड़ी ड्रेपिंग का डेमो करवाया। महिलाओं ने विभिन्न माध्यमों से रंग बिरंगी फूल-पत्तियां बनाकर अपनी कलात्मक योग्यता का परिचय दिया। श्रीमती निशा अग्रवाल ने विभिन्न प्रकार के साड़ी पहनने के गुर सिखाये और बताया कि पारंपरिक परिधान होने के बाद भी हमें आधुनिक परिवेश में किस तरह ढाला जा सकता है एवं देश के विभिन्न भागों की संस्कृति के अनुरूप अलग-अलग तरीके में बांधकर अपने व्यक्तित्व में निखार लाया जा सकता है।

आंध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

हैदराबाद : मारवाड़ी सम्मेलन का स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

प्रादेशिक सम्मेलन के तत्वावधान में अखिल भारतवर्षीय मारवाडी सम्मेलन का ६९वां स्थापना दिवस भव्य समारोह के रूप में सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे समाजसेवी श्री मांगीलाल बसईवाले। सम्मेलन के अध्यक्ष श्री रामकिशन गुप्ता ने अपने स्वागत भाषण में सम्मेलन द्वारा किये जा रहे सेवा कार्यों तथा सम्मानित किये गये बंधुओं की जानकारी प्रस्तुत की। सम्मेलन के महामंत्री श्री रमेश कुमार बंग ने अपने प्रतिवेदन में मारवाड़ी सम्मेलन को सम्पूर्ण मारवाड़ी समाज की सशक्त आवाज निरूपित करते हुए स्वतंत्रता प्राप्ति के समय तथा बाद में मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा किये गये कार्यों के इतिहास से उपस्थित मारवाड़ी समाज को अवगत कराया।

कार्यक्रम में सम्मेलन के मंच से समाजसेवी व शिक्षाविद् श्री रामावतार नरेडी (अग्रवाल) मूक समाजसेवी तथा वरिष्ठ समर्पित सेवाभावी कार्यकर्त्ता श्री रतनलाल बंग एवं सेवा की प्रतिमूर्ति श्रीमती गंगा सोमाणी को सम्मानित किया गया।

मुख्य अतिथि श्री मांगीलाल बसईवाले ने मारवाड़ी समाज द्वारा किये जा रहे सेवामयी कार्यों की प्रशंसा की। कार्यक्रम का संचालन श्री शंकरलाल बंग एवं श्री रामप्रकाश भंडारी ने संयुक्त रूप से किया। स्वावलम्बी बनाने के उद्देश्य से समाज की बहनों को सिलाई मशीनें प्रदान की गयी।

इस अवसर पर डॉ. रामविलास साबू, सर्वश्री राधाकिशन जोशी, श्यामसुन्दर मूंदड़ा, सोहनलाल कड़ेल, नारायण गुप्ता, श्रीकिशन तोष्णीवाल, गोपालदास मंत्री, रामनाथ गोयनका, श्रीकिशन मालाणी, प्रेमचंद शर्मा, गोविन्द राठी, श्रीमती विजयलक्ष्मी काबरा, रत्नमाला साबू, रमा पटवा, आर. कमलादेवी सांखला, शकुन्तला नावंदर के अतिरिक्त कई महिला एवं पुरुष एवं सामाजिक कार्यकर्त्ता सम्मिलित हुए।

हैदराबाद : उपहार नहीं लिए

आंध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री रामकिशन गुप्ता ने पौत्ररत्न की प्राप्ति के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में अतिथियों से विनम्रतापूर्वक उपहार स्वीकार नहीं किये जिसके लिए वे सराहना के पात्र हैं। समाज के अन्य सामाजिक कार्यकर्त्ताओं को भी उनका अनुकरण कर समाज में इस स्वस्थ परम्परा का प्रसार करना चाहिए।

समाज के सक्रिय कार्यकर्ताओं को सम्मानित किये जाने पर हर्ष व्यक्त

हैदराबाद २६ दिसम्बर - आंध्र प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के मानद मंत्री ने विगत दिवस मारवाड़ी सम्मेलन के स्थापना दिवस समारोह में आंध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता रतनलाल बंग एवं श्रीमती गंगा बाई सोमाणी को सम्मनित किये जाने पर हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि कार्यकर्ताओं के सम्मान से ही अन्य कार्यकर्ताओं में समाजसेवा के प्रति

अभिरूचि उत्पन्न होती है। आज यहां जारी विज्ञप्ति में श्री मंत्री ने रतनलाल बंग को समाज के प्रति सदैव समर्पित रहने वाला व्यक्तित्व बताया। उन्होंने बताया कि श्री बंग ने आंध्र प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के कार्यकारिणी तथा प्रबंध समिति के रूप में उल्लेखनीय सेवाएं प्रदान की हैं। रामायण मेला के आयोजन में उन्होंने बहुत ही सक्रिय भूमिका निभाई है। सम्मेलन द्वारा श्री बंग को सम्मानित कर कार्यकर्ताओं में नयी उमंग का संचार किया गया है।

अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन

चास : झारखंड प्रान्तीय मारवाड़ीं महिला सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन सम्पन्न

झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन १९-१२-०३ को चास में श्री एवं श्रीमती राजेश अग्रवाल (उपायुक्त चास-बोकारो) के हाथों सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि उपायुक्त महोदय ने झारखंड शाखाओं द्वारा चलाये जा रहे शिक्षा एवं स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रमों की प्रशंसा की एवं विचार व्यक्त किया कि महिलाओं के विकास के बिना समाज एवं राष्ट्र के विकास की कल्पना अधूरी है। झारखंड प्रदेश की अध्यक्षा श्रीमती सुमन सुहासरिया एवं सचिव श्यामा लच्छीरामका ने महिला समिति के शहरी कार्यक्रमों के साथ-साथ गांव के दूर दराज क्षेत्रों में चलाये जा रहे कार्यक्रमों का भी उल्लेख किया, जिसमें चास बोकारो की अध्यक्षा श्रीमती श्यामा लच्छीरामका, गिरिडीह शाखा की अध्यक्षा श्रीमती इंदिरा जैन, रांची की अध्यक्ष श्रीमती रूपा अग्रवाल का सराहनीय प्रयास रहा।

अध्यक्षीय भाषण में विशेष रूप से संगठन की एकता के प्रदर्शन पर बल दिया गया। उन्होंने कहा कि हम संगठन की एकता की बात करते हैं तो हमें आपसी मतभेदों को सुलझाने और समाप्त करने की दिशा में गंभीरता से सोचना होगा। प्रत्येक सदस्य को यह मानना चाहिए कि समाज के दूसरे सदस्य पर जो मुसीबत आई है वह मिल बैठ कर निपटायें वरना समाज के बाहर के लोगों को जब ऐसी सूचनाएं जाती है तो स्वाभाविक रूप से समाज की छवि और उसकी मजबूती के बारे में लोग अपने-अपने तरह से सोचते हैं। हम मारवाड़ी समाज के सभी सदस्य एक है और एक रहेंगे, यही संदेश समाज से दूसरों को मिलना चाहिए।

अधिवेशन के अवसर पर 'नारी मन' पत्रिका का विमोचन मारवाड़ी युवा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बलराम सुलतानिया ने किया। इस अवसर पर प्रांतीय अध्यक्ष, मारवाड़ी युवा मंच, श्री गोविंद मेवाड़ भी उपस्थित थे। श्री सुल्तानिया ने अपने उद्‌बोधन में मारवाड़ी महिला समिति की शाखाओं के विकास की प्रगति में मारवाड़ी युवा मंच के सभी सदस्यों के निरन्तर सहयोग का आश्वासन दिया। मारवाड़ी युवा मंच चास-बोकारो का अधिवेशन में पूर्ण सहयोग रहा।

झारखंड प्रान्तीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन की अध्यक्षा श्रीमती सुमन सुहासरिया ने प्रान्त में नौ नवीन शाखाओं का गठन किया। ये है- लाहरदगा, बूण्ड, चाण्डिल, सिमडेगा, गुमला, चुटिया, धनसार, पेटवार, नेपाल में बीरगंज शाखा। इस प्रकार झारखंड की शाखाओं की संख्या २५ हो गई है।

नवीन शाखाओं को खोलने में हमारी इन बहनों का सहयोग रहा- रांची की श्रीमती नीरा बथवाल- उपाध्यक्ष- श्रीमती कामिनी जैन- अध्यक्षा- जैनामोड, श्रीमती मीना टमकोरिया- चास, श्रीमती सुमन सुहासरिया, प्रान्तीय अध्यक्ष- चास, श्रीमती निर्मला तुलस्यान आदि।

परिचर्चा सत्र

परिचर्चा सत्र की अध्यक्षता श्रीमती सरोज गुटगुटिया (पूर्व अध्यक्षा बहार.प्रा.मा. महिला सम्मेलन) ने की। विषय था 'महिलाएं वर्तमान में भी समान अधिकार से वंचित'। उक्त विषय पर मुख्य वक्ताओं ने अपने विचार प्रस्तुत किये, जिसमें श्रीमती अंजलि प्रसाद (एडवोकेट, चास-बोकारो, सिविल कोर्ट) ने कहा 'नारी को वंशानुगत सम्पत्ति में अपने भाई की तरह अधिकार, अपने पिता के जीवनकाल में मिलना चाहिए एवं पत्नी को अपने पति के जीवनकाल में कम से कम १/४ भाग पति की सम्पत्ति का मिलना चाहिए।

निवर्तमान प्रादेशिक अध्यक्षा (देवघर) श्रीमती संगीता सुल्तानिया ने अपने विचार दिये कि परिवार के सदस्यों के सक्रिय सहयोग की अनुपस्थिति में समान अधिकार प्राप्ति की कल्पना अधूरी है।

श्रीमती डा. सरोजनी सिंह ने कहा कि परिवार जनित गंभीर निर्णय में एवं अन्य समस्याओं के निदान में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी होनी चाहिए। परिवार में पिता की तरह ही माता को परिवार के मुखिया का दर्जा देना होगा।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

१. सांस्कृतिक कार्यक्रम की शुरूआत राष्ट्रगीत वन्देमातरम् से की गई।
२. 'संगठन ही शक्ति हमारी, संगठन ही पहचान है' नाटक में ३२ बच्चों ने भाग लेकर सभी को सम्मोहित कर दिया।
३. समिति की सदस्याओं ने मिलकर 'डांडिया नृत्य' प्रस्तुत किया।
४. रांची शाखा की सदस्याओं ने एक नाटिका प्रस्तुत की।
५. हास्य नाटिका की प्रस्तुति श्रीमती पुष्पा अग्रवाल एवं श्रीमती देविका अग्रवाल ने की।
६. श्वेता एवं ऋचा द्वारा नृत्य प्रस्तुत किया गया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम की संयोजिका श्रीमती इन्दु अग्रवाल, मीना टमकोरिया, कुसुम केड़िया एवं रजनी अग्रवाल थी। सम्मेलन को सफल बनाने में राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती मंजू मेहरिया, श्रीमती सुशीला मोहनका, श्रीमती लता अग्रवाल, श्रीमती अरुणा जैन, श्रीमती सरोज गुटगुटिया का सक्रिय योगदान रहा। मंच संचालन डा. ऊषा अग्रवाल ने किया। धन्यवाद प्रान्तीय सचिव श्रीमती

श्यामा लच्छीरामका ने किया। डा. रतन केजड़ीवाल, श्री बद्रीनाथ खण्डेलवाल, रांची शाखा व गिरीडीह शाखा का योगदान रहा। मारवाड़ी महिला समिति चास-बोकारो, मारवाड़ी युवा मंच चास-बोकारो का पूर्ण सहयोग रहा।

हैदराबाद : राजस्थानी मैरिज ब्यूरो पर १८०० से भी अधिक बायोडाटा उपलब्ध

राजस्थानी मैरिज ब्यूरो विगत कई वर्षों से राजस्थानी समाज के विवाह योग्य युवक-युवतियों की जानकारी नि:शुल्क उपलब्ध कराता आ रहा है। ब्यूरो के पास अभी तक १८०० से अधिक विवाह योग्य युवक-युवतियों के बायोडाटा एकत्रित हो चुके हैं। उक्त जानकारी ब्यूरो की संयोजिका श्रीमती रत्नमाला साबू ने एक प्रेस विज्ञप्ति में दी है।

विज्ञप्ति के अनुसार ब्यूरो के पास शिक्षित, उच्च शिक्षित, तकनीकी एवं प्राविधिक शिक्षा प्राप्त, व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त, व्यवसायी तथा सेवारत सभी प्रकार के विवाह योग्य युवक-युवतियों के बायोडाटा उपलब्ध है। इनके अतिरिक्त विवाह योग्य विधुर विधवा, तलाकशुदा एवं परित्यक्त उम्मीदवारों के भी बायोडाटा ब्यूरो कार्यालय पर उपलब्ध है।

हैदराबाद : माहेश्वरी महिला संगठन की अध्यक्षा का युवा संगठन द्वारा भव्य स्वागत

माहेश्वरी महिला संगठन के सांगठनिक ढांचे को दक्षिण में मजबूत करने के उद्देश्य से यहां पधारी संगठन की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती गीता देवी मूंदड़ा एवं श्रीमती रत्नी बाईजी काबरा का आंध्र प्रादेशिक माहेश्वरी युवा संगठन के तत्वावधान में भव्य स्वागत किया गया। इस स्वागत समारोह में आंध्र प्रादेशिक मारवाड़ी युवा मंच, आंध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन सहित अनेक राजस्थानी समाज के संगठनों के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। माहेश्वरी युवा संगठन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रमेश कुमार बंग, माहेश्वरी पाक्षिक के अध्यक्ष नथमल डालिया, महासभा कार्यसमिति सदस्य बालाराम मूदड़ा, महिला संगठन की प्रादेशिक अध्यक्षा श्रीमती रमा पटवा, मंत्राणी शकुन्तला नावंदर विशेष रूप से उपस्थित थे।

जूनागढ़ : नि:शुल्क चिकित्सा शिविर आयोजित

जूनागढ़ महिला समिति की शाखा द्वारा १६ जनवरी को नि:संतान दम्पत्तियों के इलाज हेतु नि:शुल्क चिकित्सा परामर्श शिविर का आयोजन किया गया। रायपुर के वरिष्ठ स्त्री रोग विशेषज्ञ व टेस्ट ट्यूब बेबी विशेषज्ञ डॉ. ए. सुरेश कुमार व उनके सहयोगियों ने शिविर से करीबन १६० मरीजों की चिकित्सा की व स्त्री रोग चिकित्सा से संबंधी जानकारी भी दी। शिविर का उद्घाटन उड़ीसा के श्रममंत्री श्री हिमांशु शेखर मेहर द्वारा किया गया। शिविर आरम्भ के पूर्व लायन माणिकचंद अग्रवाल के सभापतित्व में एक सभा आयोजित की गई जिसमें डॉ. ए. सुरेश कुमार व उनके सहयोगियों व परिवार का सम्मान किया गया। जूनागढ़ नगरपाल श्री किशोर जैन, ब्लाक अध्यक्षा श्रीमती नवीना बीसी, वरिष्ठ चिकित्सक श्री जलंधर मेहर एवं डॉ. हेमांगिनी मेहर सभा ने हिस्सा लिया। गायत्री परिवार ट्रस्ट के सभापति लायन माणिकचंद अग्रवाल, मारवाड़ी महिला समिति अध्यक्षा श्रीमती जामोती देवी अग्रवाल, सचिव श्रीमती कोमल अग्रवाल ने संभाषण के माध्यम से शिविर का एकमात्र उद्देश्य गरीब मरीजों का इलाज व मानव कल्याण बताया। श्रीमती कामता देवी ने धन्यवाद अर्पण किया।

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच

बरगढ़ : राष्ट्रीय अध्यक्ष का संगठनात्मक दौरा

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बलराम सुलतानिया ने राज्य की विभिन्न शाखाओं का दौरा कर संगठन को अधिक मजबूत बनाने पर जोर दिया। श्री सुलतानिया के साथ राष्ट्रीय संयुक्त सचिव राजकुमार मुंदड़ा ने पदाधिकारियों के साथ चर्चा की। आलोचना में प्रांतीय अध्यक्ष श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल, प्रांतीय सचिव श्री जयप्रकाश लाठ, प्रांतीय जनसम्पर्क संयोजक श्री किशनलाल अग्रवाल (पत्रकार) व कार्यकारिणी सदस्य श्री विकास अग्रवाल ने प्रमुख रूप से राज्य की शाखाओं के बारे में राष्ट्रीय अध्यक्ष को जानकारी प्रदान की। श्री सुलतानिया ने लोइसिंगा, बलांगीर व पटनागढ़ शाखा कार्यकर्त्ताओं के साथ बैठक कर संगठन को मजबूत बनाने पर जोर दिया एवं कांटाबांजी शाखा द्वारा आयोजित नि:शुल्क अंग प्रत्यारोपण शिविर में अतिथि के रूप में भाग लिया।

कांटाबांजी : राष्ट्रीय स्तर पर दान-पत्र परियोजना का सफलता के साथ सम्पन्न

प्रत्येक तीन वर्ष के अंतराल में आयोजित होने वाली अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच की भाग्यशाली दानपत्र परियोजना का निर्णय दिनांक ३० नवम्बर २००३ को एक समारोह द्वारा निकाला गया। जिसमें मंच के राष्ट्रीय, प्रांतीय व शाखा पदाधिकारियों के साथ अन्य महानुभाव उपस्थित थे। परियोजना में मारूति ओमनी पांच सीटर, कलर टी.वी., फ्रीज, वाशिंग मशीन, मिक्सी कैमरा, हाथघड़ी, आयरन आदि उपहार सम्मिलित थे।

राष्ट्रीय स्तर पर दानपत्र परियोजना को सफल बनाने हेतु राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बलराम सुलतानिया, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री कैलाश अग्रवाल, दानपत्र के संयोजक श्री मुकुंद रूंगटा, प्रांतीय अध्यक्ष श्री श्याम सुन्दर, दानपत्र के प्रा. संयोजक सर्वश्री सुशील सांतुका, सुभाष अग्रवाल, राजेश अग्रवाल हीरो, कैलाश अग्रवाल के साथ कांटाबाजी शाखा अध्यक्ष नारायण अग्रवाल, मंत्री संदीप गर्ग, दानपत्र के शाखा संयोजक श्रवण जैन, मनोज अग्रवाल, बजरंग जिंदल, आशीष अग्रवाल व कांटाबांजी मिडटाउन शाखा की अध्यक्षा श्रीमती ममता जैन, मंत्री कुमारी आशा गुप्ता एवं मंच के सभी सदस्यों ने अपने-अपने स्तर पर महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। युवा मंच द्वारा इससे प्राप्त अर्थ से जन-कल्याणमूलक कार्य किये जाएंगे।

कांटाबांजी : मंच द्वारा समाज सुधार की दिशा में एक पहल

मारवाड़ी समाज में फैली कुरीतियों, गलत परम्पराओं व प्रदर्शन वृत्ति को रोकने हेतु अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच ने अपना 'मंच भाव-समाज सुधार' को बनाया है। इसी समाज सुधार भाव के जरिये मारवाड़ी युवा मंच की शाखा कांटाबांजी एवं शाखा मिडटाउन (सम्पूर्ण महिला शाखा) द्वारा एक सर्वेक्षण किया जा रहा है जिसके जरिए 'सामूहिक विवाह' की पृष्ठभूमि तैयार की जायेगी। मंच परिवार सभी आदरणीय समाज बंधुओं से अनुरोध करता है कि मंच इनके सहयोग से मारवाड़ी समाज के सभी घटकों के युवक-युवतियों के सामूहिक विवाह समारोह के विराट आयोजन का मानस बना रही है।

कांटाबांजी : द्वितीय नि:शुल्क कृत्रिम अंग प्रत्यारोपण शिविर सम्पन्न

कांटाबांजी शाखा द्वारा द्वितीय नि:शुल्क कृत्रिम अंग प्रत्यारोपण शिविर का उद्घाटन विधायक श्री संतोष सींग सालुजा द्वारा किया गया। संचालन कार्यशाला के प्रांतीय संयोजक श्री राजेश अग्रवाल 'हीरा' ने किया। समारोह में चार नये सदस्यों को शपथ ग्रहण करवाया गया। चार दिनों तक चले इस शिविर में सिलीगुड़ी से पधारे टेकनिशियनों ने मोबाइल वर्क-सोप के जरिए रात-दिन मेहनत कर विकलांगों के नाप लेकर पांव बनाये व उन्हें चलना सिखाया। बड़ी संख्या में बुजुर्ग, युवा, बच्चे व महिलाओं ने इस शिविर का लाभ उठाया। हेलीकाप्टर से पधारे छत्तीसगढ़ सरकार के गृहमंत्री व अन्य सभी अतिथियों का युवा मंच द्वारा स्वागत किया गया तथा भव्य रैली सह मंच का चलित वर्क सोप दिखाया गया, विकलांगों से मुलाकात करवाई गई तथा मारवाड़ी युवा मंच की निर्माणाधीन धर्मशाला 'सीताभवन' का परिदर्शन कराया गया। सभी ने मंच के सेवाभावी कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। सांसद, राज्यसभा श्री सुरेन्द्र लाठ ने कहा कि समाज के कार्यों द्वारा समाज का सिर ऊंचा होता है। युवा मंच ऐसा मंच है जो युवाओं से जुड़ा है, समाज की शक्ति युवाओं के माध्यम से है। उन्होंने युवा मंच को अपनी ओर से पूरी तरह सहयोग का आश्वासन दिया। विशिष्ट अतिथि गृहमंत्री, छत्तीसगढ़ श्री बृजमोहन अग्रवाल ने युवा मंच को दूसरे के जीवन में खुशियां भरने हेतु बधाई दी। उन्होंने सुझाव दिया कि किसी गरीब बस्ती को हाथ में लेकर सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान किया जावें जिसे सारी दुनिया देखेगी कि मारवाड़ी समाज सिर्फ पैसा नहीं कमाता सेवा भी करता है। जो काम सरकार नहीं कर सकती वह काम युवा मंच करता है। छत्तीसगढ़ व उड़ीसा मिलकर कार्य करें तो सबके सम्मुख एक उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं। मुख्य वक्ता राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बलराम सुलतानिया ने बताया कि युवा मंच के पास १३० एम्बुलेंस हैं। इसकी गुणवत्ता अच्छी होने के कारण पिछले दिनों से कई सांसद व विधायकों ने मंच को अपनी निधि से एम्बुलेंस प्रदान की है। अब तक मंच द्वारा तीस हजार से कहीं ज्यादा विकलांगों को पैर प्रदान किये जा चुके हैं। उन्होंने कांटाबांजी शाखा को राष्ट्र की एक सक्रिय शाखा निरूपति किया। प्रांतीय अध्यक्ष श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल ने मंच की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। मिडटाउन शाखाध्यक्ष श्रीमती ममता जैन ने धन्यवाद ज्ञापन किया। समारोह में कार्यकारिणी सदस्य श्री कैलाश अग्रवाल व सदस्य श्री आदेश अग्रवाल को सम्मानित किया गया। मंच संचालन राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री कैलाश अग्रवाल ने किया। इससे पूर्व सभी अतिथियों का सदस्यों द्वारा पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत व प्रतीक चिह्न भेंट कर सम्मान किया गया। अन्य संस्थाओं के पदाधिकारी, पार्षद, राजनेता व गणमान्य व्यक्तियों द्वारा अतिथियों को शाल ओढ़ाकर श्रीफल भेंट किया गया। शिविर के सह संयोजक श्री कैलाश अग्रवाल, श्री मनोज अग्रवाल व श्री श्रवण जैन के साथ सभी सदस्यों ने शिविर को एक यादगार सफलता प्रदान की।

रिसड़ा शाखा : रक्तदान शिविर आयेजित

मारवाड़ी युवा मंच रिसड़ा शाखा एवं व्यवसायी समिति द्वारा संयुक्त रूप से २१ दिसम्बर २००३ को व्यवसायी समिति सभागार रिसड़ा में स्व. कैलाशचंद अग्रवाल स्मृति रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इसमें महिलाओं सहित करीबन ६५ लोगों ने रक्तदान किया। इस अवसर पर स्थानीय विधायक श्रीमती रत्ना दे, चेयरमैन श्री दिलीप सरकार, स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों सहित काफी संख्या में गणमान्य व्यक्तियों की उत्साहप्रद उपस्थिति रही। कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी मंच बंधुओं का सहयोग उल्लेखनीय रहा। अध्यक्ष श्री देवकिशन करनानी ने रक्तदाताओं एवं अतिथियों का स्वागत किया। सचिव श्री कुलदीप गट्टानी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

कांटाबांजी : छत्तीसगढ़ की १७ शाखाओं का पांच दिवसीय दौरा सम्पन्न

६ फरवरी से १० फरवरी तक युवा मंच के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री कैलाशचंद्र अग्रवाल, कांटाबांजी ने राष्ट्रीय सहायक मंत्री सर्वश्री पीताम्बर अग्रवाल, कांटाबांजी के शाखाध्यक्ष नारायण अग्रवाल, प्रांतीय उपाध्यक्ष दीपक डोरा तथा रायगढ़ एवं पत्थलगांव शाखा के पदाधिकारी के साथ छत्तीसगढ़ प्रांत की १७ शाखाओं का ५ दिवसीय दौरा किया। इन शाखाओं में थे चांपा, कोरबा, मनेन्द्रगढ़, अम्बिकापुर, पत्थलगांव, लुड़ेग, लैलुगा, धर्मजयगढ़, रायगढ़, सरिया, बरमकेला, सारगढ़, चंद्रपुर, डमरा, खरसिया, शक्ति एवं बाराद्वार। इस दौरान शाखाओं को राष्ट्रीय व प्रांतीय कार्यक्रम के विषय में विस्तार से बताया गया तथा आगामी प्रांतीय सभा व अधिवेशन की रूपरेखा बनायी गयी। इस दौरान राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री कैलाशचंद्र अग्रवाल ने छत्तीसगढ़ सरकार के कई मंत्री व विधायकों से मुलाकात की व मंच के सेवाभावी कार्यक्रमों से उन्हें अवगत कराया।

खगड़िया : मारवाड़ी युवा मंच का २०वां स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

मारवाड़ी युवा मंच का राष्ट्रीय कार्यक्रम दान पत्र योजना के कार्यान्वयन में मंडल ५० जिसमें खगड़िया शाखा शामिल है ने ५ लाख २१ रु. दान पत्र बेचकर प्रान्त में पहला स्थान प्राप्त किया वहीं बिहार ने २१ लाख २१ हजार का दानपत्र बेचकर राष्ट्रीय स्तर पर दूसरा स्थान प्राप्त करने का गौरव प्राप्त किया। मंच के २०वें स्थापना दिवस के अवसर पर प्रान्तीय उपाध्यक्ष प्रशान्त खंडेलिया ने कहा कि वर्ष १९८५ में असम के गोहाटी में मारवाड़ी युवा मंच के स्थापना के २० वर्ष बाद वर्तमान समय में देश के १० प्रांत पूर्वोत्तर,

पं. बंगाल, कबहार, झारखण्ड, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, दिल्ली, उत्कल, छत्तीसगढ़, आंध्रप्रदेश के ४०९ शाखा के लाखों सदस्य कार्यरत हैं। मंच के सदस्य अपने पांच सूत्री उद्देश्य जन सेवा, व्यक्ति विकास, सामाजिक सम्मान, सामाजिक सुधार एवं राष्ट्रीय विकास व एकता के लिए कटिबद्ध है। मंच स्थापना से अब तक तीन वर्षों के अंतराल पर गोहाटी, दिल्ली, सिलीगुड़ी, कलकत्ता, धनबाद, जमशेदपुर एवं कटक कुल ७ राष्ट्रीय अधिवेशन आयोजित की जा चुकी है। मंच का जनसेवा के अन्तर्गत राष्ट्रीय एम्बुलेंस एवं शववाहिनी सेवा के तहत ११५ जगहों पर सेवाएं दी जा रही है। मंच के शाखाओं द्वारा शिविर के माध्यम से कृत्रिम अंग प्रत्यारोपण कार्यक्रम आयोजित कर नि:सहायों की सेवा की जा रही है। इसके अलावा १९९७ में सिलीगुड़ी में कृत्रिम अंगों को बनाना एवं नि:शुल्क जरूरतमंदों के बीच वितरण सेवा की जा रही है। कृत्रिम अंगों के शोध एवं अनुसंधान के लिए मंच ने दिल्ली में शोध केन्द्र की स्थापना की है।

अन्य संस्थाएं

कोलकाता : जड़ी-बूटी व औषधीय पौधों का निरीक्षण किए राष्ट्रपति कलाम

अ.भा.मा. सम्मेलन के कोषाध्यक्ष एवं इस समय कलकत्ता के सुविख्यात एग्री होर्टी कल्चरल सोसाइटी के अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया के प्रयास से भारत के राष्ट्रपति डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम अपनी कलकत्ता यात्रा में सोसाइटी के उद्यान में पधारे और एग्री हार्टी कल्चर उद्यान की दुर्लभ जड़ी-बुटियों एवं औषधीय गुणों वाले पौधों का निरीक्षण किया। इस अवसर पर पश्चिम बंगाल के माननीय राज्यपाल वीरेन जे शाह एवं अन्यान्य विशिष्ट व्यक्तियों के अतिरिक्त विभिन्न स्कूलों के छात्र व शिक्षकगण मौजूद थे।

सोसायटी के उद्यान के ३२ विशेष पौधों के विषय में महामहिम ने कहा कि इन पौधों के रसों का विशेष औषधीय महत्व है। इसके निर्यात से विदेशी विनिमय अर्जित की जा सकती है। परिणामस्वरूप हमारे किसान सम्पन्न होंगे एवं बंगाल के गरीब किसानों का अतिरिक्त आय प्राप्त होगा। भारत वर्ष की प्राकृतिक एवं मानव संपदा विशाल थी और देश विश्व के पांच उत्कृष्ट देशों में एक था। लेकिन हमें इनके रसों का निर्यात करना है। देश में इसकी तकनीकी पर्याप्त नहीं होने से धन का विनियोजन आवश्यक है। कृषक सोसाइटी से इन पौधों को क्रय कर आवश्यक अतिरिक्त मूल्यों के संयोग से राष्ट्रीय पूंजी का निर्माण कर सकते हैं। ये पूंजी अनाज, फल, फसल के साथ-साथ दुर्लभ औषधीय पौधों के मार्फत आ सकती है।

एग्री हार्टीकल्चरल सोसायटी आफ इंडिया एवं अनुसंधान व विकास विश्वविद्यालयों में पारस्परिक संबंध प्रशंसनीय है। सोसायटी का १९६२ से कोलकाता विश्वविद्यालय के साथ एवं जड़ी-बुटी विज्ञान पर एक वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा कोर्स का सद्यारम्भ करने वाले यादवपुर विश्वविद्यालय के साथ सहयोगधर्मिता एक अति प्रशंसनीय प्रयास है।

एग्री हार्टीकल्चरल सोसायटी आफ इंडिया के अध्यक्ष श्री हरि प्रसाद कानोड़िया ने अपने हृदयग्राही संबोधन में कहा- सन् १८२० से सोसायटी अनुसंधान एवं कृषि, विकास, बागवानी, पौधा रोपकों व साधारण व्यक्तियों को वैज्ञानिक शिक्षा व ज्ञान प्रदान की दिशा में अगुआ की भूमिका अदा कर रहा है। इतना ही नहीं, सोसायटी राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सेमीनार, कारखाने, बागवानी व पुष्पकृषि पर अधिवेशनों को भी आयोजित करता आ रहा है। इस विषय पर विज्ञानपरक जर्नल का भी नियमित प्रकाशन इसके द्वारा किया जा रहा है। कोलकाता के विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त कर सोसाइटी बागवानी में सर्टिफिकेट कोर्स का भी संचालन कर रहा है। सोसायटी विभिन्न विश्वविद्यालयों के अन्तर्गत पीएचडी के लिए एक मान्यता प्राप्त रिसर्च सेंटर है। यह यादवपुर युनिवर्सिटी के साथ संयुक्त रूप से हर्बोलॉजी में एक स्नातकोत्तर डिप्लोमा कोर्स का शीघ्र आरंभ करने जा रहा है। यह कोर्स अपनी मातृभूमि में संभवत: अपने आप में प्रथम उदाहरण है। भारत भूमि कर्म एवं सेवा प्रधान भूमि है। मैं विनम्रतापूर्वक राष्ट्रपति जी से निवेदन करता हूं कि विजन इंडिया २०२० को कामयाब करने हेतु हम सभी को अग्निपंख (विंग्स आफ फायर) पर अवश्य आरूढ़ करें।

बीकानेर : सेठ चम्पालाल बांठिया की मूर्ति का अनावरण

समाज भूषण सेठ चंपालाल बांठिया जन्म शताब्दी समारोह के अवसर पर उनकी प्रतिमा का अनावरण किया गया। मुख्य अतिथि विधायक डा. बुलाकी दास कल्ला ने कहा कि सेठ चंपालाल बांठिया का जीवन समाज सेवा को समर्पित था। उनके जीवन से प्रेरणा लेकर समाज में शिक्षा व संस्कारों को बढ़ावा दें।

विशिष्ट अतिथि नगर परिषद सभापति चर्तुभुज व्यास थे। अध्यक्षता श्री राजमल चौरड़िया ने की। स्वागताध्यक्ष श्री भंवर लाल कोठारी थे। इस अवसर पर महावीर इंटरनेशनल के अध्यक्ष चंपालाल डागा, बीकानेर इंडस्ट्रीज एसोसियेशन के अध्यक्ष कन्हैयालाल बोथरा, टिम्बर एंड हार्डवेयर मर्चेन्ट एसोसियेशन के अध्यक्ष लक्ष्मी नारायण नागल, जैन महासभा के अध्यक्ष विजय कुमार कोचर, वीरायतन के महामंत्री तनसुख राज डागा आदि वक्ताओं ने विचार व्यक्त किए।

कोलकाता : श्री श्रीचंद नाहटा का अमृत महोत्सव आयोजन

सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्रीचंद नाहटा का ७५वां जन्मोत्सव जैन संस्कृति संसद द्वारा ग्रेट ईस्टर्न होटल में आयोजित किया गया। अध्यक्षता करते हुए पश्चिम बंगाल मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति मुकुल गोपाल मुखोपाध्याय ने कहा कि श्रीचंद नाहटा नि:स्वार्थ कर्मयोगी हैं। विशिष्ट अतिथि उत्तर प्रदेश के महामहिम राज्यपाल आचार्य विष्णुकांत शास्त्री ने कहा कि मान-सम्मान भीख मांगने से नहीं मिलता, इसे अर्जित करना पड़ता है, जो अपनी योग्यता का उपयोग लोक मंगल के लिए करता है, उसे ही सम्मान मिलता है। आचार्य शास्त्री ने श्रीचंद नाहटा को अभिनंदन पत्र देकर सम्मानित किया। श्री त्रिलोकचंद डागा ने अभिनंदन पत्र का वाचन किया। महानगर की विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के तरफ से कलकत्ता के अनेकानेक गणमान्य व्यक्ति इस आयोजन

में उपस्थित थे। सम्मान से अभिभूत श्रीचंद नाहटा ने कहा कि ये मेरे लिए अविस्मरणीय क्षण है। यह सम्मान मुझे और भी सामाजिक कार्यों के लिए प्रेरित करता रहेगा।

संचालन श्रीमती तारा दूगड़ ने किया। राज्यपाल विष्णुकांत शास्त्री के ७५वें वर्ष में होने पर महानगर की सामाजिक संस्थाओं ने भी उन्हें सम्मानित किया।

कोलकाता : १८ जोड़ों का सामूहिक विवाह सम्पन्न

श्री कलकत्ता अग्रवाल समिति के तत्वावधान में १ फरवरी २००४ को हावड़ा में १८ जोड़ों का परिणय संस्कार (सामूहिक विवाह) परम्परागत रीति-रिवाज के अनुसार विद्वान पंडितों द्वारा सम्पन्न कराया गया। बारात बड़ाबाजार के विभिन्न मार्गों से होते हुए परिणय स्थल पहुंची, जिसमें काफी संख्या में समाजसेवी, गणमान्य नागरिक एवं कार्यकर्त्ता शामिल थे। सामूहिक बारात का भव्य स्वागत किया गया। अलग-अलग मंडप में १८ जोड़ों का विधि-विधान पूर्वक सामूहिक विवाह रीति परम्परा के अनुसार सम्पन्न कराया गया। समिति के ट्रस्टी व संयोजक श्री श्यामसुन्दर सराफ ने बताया कि समिति द्वारा आयोजित परिचय सम्मेलन में तय हुए जोड़ों के अलावा निजी तौर पर तय संबंध वालों को भी सामूहिक विवाह में शामिल किया जाता है। अब तक समिति द्वारा करीबन १२५ जोड़ों का सामूहिक विवाह गत वर्षों में सम्पन्न कराया गया है। श्री सराफ ने कहा कि हजारों की संख्या में युवक-युवतियों ने उत्साह से परिचय सम्मेलनों में हिस्सा लिया। समिति के मंत्री श्री ओम प्रकाश रूइया ने कहा कि परिचय सम्मेलनों एवं सामूहिक विवाहों में मध्यम वर्ग, गरीब वर्ग, शिक्षित, नौकरी पेशा, विकलांग, तलाक शुदा, विधवा, विधुर सभी प्रकार के प्रत्याशी हिस्सा लेते हैं। वर्तमान समय में दहेज, आडम्बर, दिखावा आदि कुरीतियों तथा वधू उत्पीड़, कन्या भ्रूण हत्या से त्रस्त समाज के लिए परिचय सम्मेलन व सामूहिक विवाह वरदान सिद्ध हो रहा है। ट्रस्टी व अध्यक्ष श्री शांति प्रकाश गोयनका के नेतृत्व में कार्यकर्त्ताओं की एक सशक्त टीम समाज में जागरूकता के लिए सफल प्रयास कर रही है।

कार्यक्रम को सफल बनाने में सर्वश्री बलदेव प्रसाद गनेरीवाला, श्री बलभद्रलाल झुनझुनवाला, जगदीश प्रसाद सराफ, ओम प्रकाश सुरेका, किशन कुमार केड़िया, सत्यनारायण अग्रवाल, किशोरीलाल झुनझुनवाला, नारायण प्रसाद गुप्ता, शिवप्रकाश सराफ, महावीर प्रसाद गुप्ता, शंकरलाल अग्रवाल, सुरेश कुमार नांगलिया, चंडीप्रसाद सीकरिया, बाबूलाल अग्रवाल, राधेश्याम कसेरा, राधेश्याम कानोड़िया, दामोदर प्रसाद बिदावतका, बेणी प्रसाद जैन, साधुराम बंसल, धरमचन्द अग्रवाल, मालीराम केडिया आदि अनेक कार्यकर्त्ता व स्वयं सेवक सक्रिय थे।

झिंझोली : प्राकृतिक चिकित्सा पर अंतर्राष्ट्रीय गोष्ठी एवं डॉक्टर्स मैनेजमेंट ट्रेनिंग कैम्प आयोजित

२२ फरवरी से २६ फरवरी २००४ तक डॉक्टर्स मैनेजमेंट ट्रेनिंग प्रोग्राम का आयोजन आई.ओ. एवं सूर्या फाउण्डेशन ने किया जिसमें देश से ही नहीं अपितु नेपाल, मॉरीशस एवं बेल्जियम के प्रतिभागियों ने भी हिस्सा लिया। इन पांच दिनों के दौरान शिविरार्थियों को नैचुरोपैथी के विषयों पर लैक्चर्स के अलावा हॉस्पीटल मैनेजमेंट के टेक्निकल वर्कशॉप एवं मैनेजमेंट के विषयों पर भी प्रशिक्षित किया गया। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में गायत्री परिवार के प्रमुख संत श्री प्रणव पांड्या ने आशीर्वचन में कहा कि प्राकृतिक चिकित्सा के द्वारा ही स्थान-स्थान पर हम स्वास्थ्य पहुंचा सकते हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता एक्शन शूज के मालिक श्री सुभाष अग्रवाल ने की।

दिल्ली : लोक सेवा दल का गठन

राष्ट्रीय अध्यक्ष शंकरलाल चोखानी के अनुसार लोक सेवादल नामक एक राजनैतिक दल का गठन भारत के संविधान, समाजवाद, पंथ निरपेक्षता और लोकतंत्र के सिद्धांतों के प्रति सच्ची श्रद्धा और निष्ठा को लेकर हुआ है, एक ऐसे लोकतांत्रिक राज्य की स्थापना करना इसका लक्ष्य है जिसमें भारत की समस्त जनता की न्यूनतम आवश्यकताओं को पूर्ण करते हुए उसकी कार्य क्षमताओं में वृद्धि किया जा सके। सामाजिक अन्याय को समाप्त करके प्रगतिशील वातावरण का निर्माण हो सके तथा स्वदेशी उचित तकनीक प्रदान कर भारतवर्ष को आत्मनिर्भर बनाते हुए उसका सर्वांगीण विकास किया जा सके। भारत को उसकी संस्कृति व मर्यादा के आधार पर एक स्वच्छ राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक जनतंत्र के रूप में स्थापित करने के लिए यह दल वचनबद्ध है। जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को समान अवसर व स्वतंत्रता प्राप्त होगी।

नई दिल्ली : माहेश्वरी क्लब द्वारा रक्तदान शिविर

माहेश्वरी क्लब द्वारा २० मार्च २००४ को अपना रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। कैम्प में १२६ क्लब के सदस्यों ने एवं आसपास के लोगों ने रक्तदान किया। इसे सफल बनाने में उप समाज कल्याण मंत्री श्री ओमप्रकाश बाहेती का विशेष सहयोग रहा। इसके अलावा सभापति राज कुमार कर्वा, मंत्री श्री अमित मूंधड़ा, श्री अनिल जाजू, श्रीमती वीणा जाजू, श्रीमती सुधा डागा, मि. निकुंज डागा, श्रीमती मंजुश्री चाण्डक, श्री प्रभाकर काबरा एवं श्री विजय मारू का विशेष सहयोग रहा।

नई दिल्ली : राजस्थानी अकादमी का १३वां कवयित्री सम्मेलन- २००४ सफलतापूर्वक सम्पन्न

नई दिल्ली की सुविख्यात सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्था 'राजस्थानी अकादमी' के तत्वावधान में होली की पूर्व बेला पर ५ मार्च २००४ को अभूतपूर्व १३वां कवयित्री सम्मेलन-२००४ आयोजित किया गया। अकादमी के अध्यक्ष श्री रामनिवास लाखोटिया

ने अकादमी द्वारा किए जा रहे सांस्कृतिक कार्यक्रमों का वर्णन करते हुए कहा कि राजस्थान के प्रवासी एवं अन्य राजस्थानी बंधुओं को राजस्थानी संस्कृति से जोड़ने के प्रयास में अकादमी सचेष्ट रही है और रहेगी। श्रीमती आशारानी लाखोटिया, प्रवेश धवन, सुमन माहेश्वरी, उमा मालवीय, नीलम आनन्द, डॉ. रेखा व्यास, प्रतिभा सिंघल, निशा भार्गव आदि कवयित्रियों की कविताओं को श्रोताओं द्वारा सराहा गया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती आशारानी लाखोटिया व धन्यवाद ज्ञापन श्री टी.एन. खन्ना द्वारा किया गया।

सम्मान / बधाई

श्री मनमोहन माहेश्वरी को अमेरिका में लाइफाइम एचीवमेंट अवार्ड प्रदान

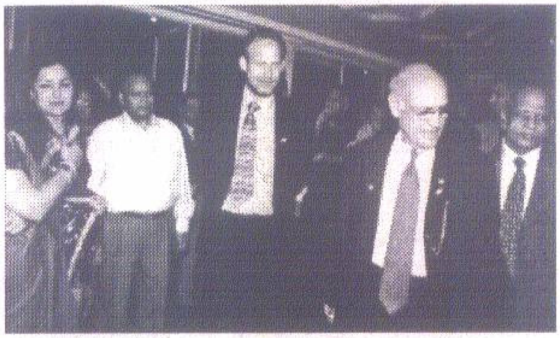

कोलकाता के व्यवसायी श्री मनमोहन माहेश्वरी को ६ अक्टूबर २००३ को वाशिंगटन डी.सी. स्थित आइसनहावर आयोग की तरफ से सर्वोच्च सम्मान 'लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड एण्ड रिकागनिशन' प्रदान कर सम्मानित किया गया। उक्त सम्मान प्रमाण-पत्र पर राष्ट्रपति बुश के अलावा अमेरिका के तीन पूर्व राष्ट्रपतियों- मि. जेराल्ड आर. फोर्ड, मि. रोनाल्ड रीगन, मि. जार्ज के डब्ल्यु बुश तथा रिपब्लिकन नेशनल समिति के चेयरमैन एड. गिलेस्पी के हस्ताक्षर अंकित हैं। प्रशस्ति पत्र में अंकित हैं- ''राष्ट्रीय रिपब्लिकन पार्टी के प्रति आजीवन समर्थन और समर्पण को मान्यता देते हुए अपने आजीवन सदस्य श्री मनमोहन माहेश्वरी की दृढ़ता और निष्ठा में विशेष विश्वास और आश्वस्ति का प्रगटीकरण।'' श्री माहेश्वरी रिपब्लिकन राष्ट्रीय समिति के सदस्य तथा इसके अध्यक्ष की सलाहकार समिति के सदस्य भी हैं। कभी कोलकाता तो कभी न्यूयार्क में रहते हुए श्री माहेश्वरी भारतीय अमरीकियों को एक राजनीतिक मंच पर लाकर उन्हें एक अलग पहचान देने के लिए तथा उनकी आवाज को प्रभावशाली बनाने के लिए लगातार प्रयत्नशील हैं। उनकी पत्नी श्रीमती आशा माहेश्वरी भी समाज को आगे ले जाने के क्षेत्र में पूर्ण रूप से सक्रिय है। श्री माहेश्वरी को यह सम्मान प्राप्त होने के उपलक्ष में २९ फरवरी को अलीपुर के संचेती हाउस में श्रीमती किरण एवं इन्द्र चन्द संचेती तथा श्रीमती सीता एवं शिवेन्द्र सिंह द्वारा एक समारोह का आयोजन किया गया जिसमें अमेरिका के कांसल जनरल जार्ज एन. सिब्ले भी उपस्थित थे। इस आयोजन में सम्मेलन के निवर्तमान अध्यक्ष श्री नन्दकिशोर जालान, महामंत्री (अब उपाध्यक्ष) श्री सीताराम शर्मा के अलावा सवा सौ से अधिक गणमान्य शरीक हुए।

फरीदावाद : श्री रामनिवास लाखोटिया मानव सेवा अवार्ड से सम्मानित

बाबा दीपसिंह शहीद चैरिटेबल सो. फरीदाबाद ने अपने वार्षिकोत्सव पर १०.२.२००४ को सुपरिचित वरिष्ठ आयकर विशेषज्ञ एवं अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री रामनिवास लाखोटिया को मानव सेवा अवार्ड २००३ से सम्मानित किया। समारोह में कई वरिष्ठ वैश्य सदस्य भी उपस्थित थे।

श्रद्धांजलि

अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन की अध्यक्षा रहीं डा. मंजु मेहरिया का २८ फरवरी २००४ को चास में एक सड़क दुर्घटना में अंसामयिक एवं दर्दनाक मृत्यु हो गई। वह जिस कार से आ रही थीं वह दुर्घटनाग्रस्त हो गयी और उसमें सवार उनका २९ वर्षीय पुत्र अमित और पुत्रवधू दिव्या तथा चालक भी नहीं बच पाये।

डा. मंजु मेहारिया साहित्य शिल्पी एवं विदुषी महिला थीं। वे बोकारो कॉलेज में हिन्दी की प्रोफेसर थीं एवं सामाजिक एवं सांगठनिक क्षेत्रों में अत्यंत सक्रिय थीं। अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन की राष्ट्रीय अध्यक्षा के रूप में अपनी अल्पायु में ही उन्होंने पूरे देश की मारवाड़ी महिलाओं को संगठित करने एवं एक धागे में पिरोने का अद्भुत कार्य किया था। विगत दिसम्बर माह में ही उन्होंने बोकारो नगर निगम में अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन के राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन किया था जिसकी देश भर में चर्चा एवं प्रशंसा हुई थी।

उनकी स्मृति में सर्वत्र शोक सभाएं हुईं। उनकी पुण्य स्मृति को चिर-स्थायी बनाने के लिए चास बोकारो बाई पास रोड का नामकरण 'डा. मंजु मेहारिया मार्ग' किया जाय, जिससे बोकारो वासियों को उनके कार्यों से प्रेरणा मिलती रहे।

सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने उनके निधन पर गहरा शोक प्रकट करते हुए इस अप्रत्याशित संकट की

घड़ी में श्री एस.के. मेहरिया (पति) के प्रति अपनी संवेदना एवं सहानुभूति प्रकट की है।

शलाका पुरुष हजारीमल बांठिया का महाप्रयाण

कम्पिल तीर्थ के समग्र विकास हेतु समर्पित, व्यक्तित्व-कृतित्व के धनी, पंचाल शोध संस्थान के संस्थापक कार्यकारी अध्यक्ष कर्मठ कर्मयोगी, साहित्यकार सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री हजारीमल बांठिया का हाथरस से कम्पिल जाते समय हृदयगति रुक जाने से १५ फरवरी २००४ के दिन आकस्मिक निधन हो गया। स्व. बांठिया के निधन की सूचना मिलते ही कम्पिल कायमगंज फर्रुखाबाद व आसपास क्षेत्र के लोगों की भीड़ उनके अन्तिम दर्शन हेतु उमड़ पड़ी तथा विभिन्न प्रान्तों के उद्योगपतियों, राजनीतिज्ञों, समाजसेवियों व विद्वान उनके पार्थिव शरीर के अन्तिम दर्शन करने हेतु कम्पिल पहुंचे। उन्होंने स्व. बांठिया के पार्थिव शरीर पर पुष्प चढ़ाकर श्रद्धांजलि अर्पित की। आप अपने पीछे धर्मपत्नी श्रीमती जतन कुमारी बांठिया चार पुत्र कान्ती लाल, राजकुमार, प्रकाशचन्द्र, सुरेन्द्र कुमार दो पुत्रियां श्रीमती विजया नाहर, श्रीमती रेनू रैदानी पौत्र-पौत्रियां, पड़प्रपौत्री का भरा पूरा परिवार छोड़ गए।

आपके निधन पर जैन आचार्यों, भारत के प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी, इटली सरकार के पुरातत्व मंत्री, सांसद डा. लक्ष्मीमल सिंघवी, सांसद चन्द्रभूषण सिंह (कायमगंज) अनेक सांसदों, मंत्रियों, विधायकों, प्रशासनिक अधिकारियों, जैन श्री संघो समाज सेवियों, विद्वानों इत्यादि ने परिवारजनों के प्रति सहानुभूति प्रेषित की है।

बीकानेर में २४ सितम्बर १९२४ को जन्में श्री बांठिया को बचपन से ही सामाजिक, साहित्यिक कार्यों में रूचि रही। एक सामान्य गृहस्थ के रूप में जीवन प्रारम्भ कर श्री बांठिया उन्नति के शिखर पर पहंच गये। अपने व्यवहार कौशल, व्यापारिक निपुणता और माननीय सद्गुणों के बल पर आपको 'नगर श्रेष्ठ' और समाज रत्न की पदवी से विभूषित किया गया।

साहित्य के प्रति अगाध निष्ठा, इतिहास व भारतीय सांस्कृतिक गौरव के प्रति विशेष रूचि ने पुरातत्व क्षेत्र में कम्पिल के ऐतिहासिक गौरव की ओर विश्व का ध्यान आकर्षित करने के लिए १९७८ में ''कांपिल्य महोत्सव'' का आयोजन किया। कम्पिल में आपने सार्वजनिक वर्धमान जैन अस्पताल, धर्मशाला भोजनशाला निर्मित करायी। बांठिया जी सही अर्थों में व्यक्ति नहीं, संस्था थे। आपने अनेकानेक संस्थाओं का संचालन व मार्गदर्शन किया। सुप्रसिद्ध इतिहास वेत्ता अगरचन्द नाहटा अभिनन्दन ग्रंथ के संयोजक तथा प्रकाशक रहे। इसका विमोचन श्रीमती इन्दिरा गांधी ने किया।

बहु आयामी विराट व्यक्तित्व के धनी बांठिया जी हाथरस नगर पालिका व भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष रहे। आप अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष, मंत्री रहे, उ.प्र. मारवाड़ी सम्मेलन का तृतीय अधिवेशन का हाथरस में आप संयोजक व स्वागत मंत्री रहे। श्रेष्ठ राजस्थानी साहित्य के लिए अपने स्व. पिता श्री फूलचन्द्र बांठिया राजस्थानी साहित्य पुरस्कार तथा बृज भाषा के उन्नयन के लिए बृज शोध संस्थान ब्रज भाषा पुरस्कार प्रति वर्ष देकर साहित्यकारों को प्रोत्साहित करते थे। हिन्दी के उन्नयन के लिए ''हिन्दी साहित्य सम्मेलन'' प्रयाग का ४५वां समारोह कानपुर में कराया। आप पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने डा. एल.पी. टैस्सीटोरी व मुहता नैणसी की जीवनी पर लेख लिखे थे। राजस्थानी अकादमी ने आपको राजस्थानी भाषा के डाक्टर की पदवी से सम्मानित किया।

बांठिया जी ने सुप्रसिद्ध भाषा विद् इटैलियन विद्वान डा. एल.पी. टैस्सीटोरी के समाधि स्थल को बीकानेर में खोजकर गौरवपूर्ण समाधि का निर्माण १९५६ में कराया। डा. टैस्सी टोरी जन्मशती तथा सम्बन्धित कार्यक्रमों में दो बार इटली व यूरोपीय देशों की यात्रा की। एक साहित्यानुरागी, धर्म परायण भारतीय सांस्कृतिक इतिहास के गौरव की रक्षा करने वाले समाजसेवी श्री बांठिया जी का निधन समस्त समाज के लिए अपूरणीय क्षति है। क्रूर मृत्यु ने श्री बांठिया को हमसे छीन लिया है पर उनकी यशकाया से मार्ग दर्शित रहेगा। हम उनकी आत्मा की शांति व सद्गति एवं उनके परिजनों को इस दु:ख को झेलने की शक्ति प्रदान करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

श्री बसन्त कुमार मोहता

एक सफल उद्योगपति एवं व्यवसायी तथा अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के आजीवन सदस्य एवं निरन्तर सहयोगी श्री बसन्तकुमार मोहता का पिछले दिनों पश्चिम सिंहभूमि जिले के 'विशेष कल्याण आश्रम' में हृदयगति रुक जाने से अचानक स्वर्गवास हो गया। आपके कर्ममय जीवन के अनेक पहलू थे। इण्डियन प्लास्टिक फेडरेशन के आप अध्यक्ष, आल इंडिया प्लास्टिक मेनुफेक्चर्स एसोसिएशन, मुम्बई के उपाध्यक्ष एवं प्लास्टो इंडिया फाउण्डेशन, देश की सबसे बड़ी प्लास्टिक इंडस्ट्रीज की संस्था एवं दिल्ली के प्रगति मैदान में हर दूसरे वर्ष प्रदर्शनी लगती है, उसकी कमेटी के कई वर्षों से सदस्य थे। कलकत्ता के विख्यात एग्रीहार्टिकल्चरल सोसाइटी के कार्यकारिणी सदस्य एवं उसकी फाइनेंस कमेटी के अध्यक्ष भी रहे। विश्व कल्याण आश्रम के कार्यों में निरन्तर विविध प्रकार का आर्थिक सहयोग देते रहे। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति एवं सद्गति प्रदान करें और उनके परिवार को इस असीम दुख को सहने की शक्ति देवे।

कोलकाता : श्री बाबूलाल धनानिया को पत्नीशोक

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की कार्यकारिणी के वरिष्ठ व कर्मठ सदस्य व स्थानीय अनेकों सभा-समितियों के पदाधिकारी व सदस्य श्री बाबूलाल धनानिया की धर्मपत्नी श्रीमती मायादेवी धनानिया का स्वर्गवास १९ मार्च को ७२ वर्ष की अवस्था में हो गया। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने एक शोक सांत्वना पत्र प्रेषित करते हुए श्रीमती धनानिया के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट किया एवं दिवंगत आत्मा की शान्ति लाभ हेतु व उनके शोक सन्तप्त परिजनों को इस दु:ख को सहने की क्षमता प्रदान करने हेतु ईश्वर से प्रार्थना की।

संख्या ....

सदस्यता आवेदन पत्र

तार : APKASAMAJ
फोन: 2268-0319

महामंत्री
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
(ALL INDIA MARWARI FEDERATION)
१५२-बी, महात्मा गांधी रोड,
कोलकाता- ७०० ००७

दि. ....

महोदय,

मैं सम्मेलन का सदस्य बनना चाहता/चाहती हूं और इस हेतु निम्नलिखित शुल्क का चेक/ड्राफ्ट/एम.ओ./नगद भेज रहा/रही हूं।
आजीवन शुल्क रु. २५००/-, साधारण विशिष्ट शुल्क रु. २५०/- प्रतिवर्ष, समाज विकास शुल्क रु. १००/- प्रति वर्ष।
(आजीवन व साधारण विशिष्ट सदस्यों का समाज विकास नि:शुल्क भेजा जाता है।)
संलग्न : दो पासपोर्ट साईज फोटो

भवदीय,

नाम : .... पिता/पत्नी/पति का नाम : ....
शिक्षा : .... व्यवसाय : .... जन्मतिथि : ....
विवाह तिथि : .... पैतृक गांव : ....
कार्यालय का पता : ....
टेलीफोन नम्बर : .... तार : .... फैक्स : ....
ईमेल : .... मोबाइल : ....
निवास स्थान का पता : ....
टेलीफोन नम्बर : .... मोबाइल : .... सदस्य बनाने वाले का नाम : ....

कार्यालय हेतु

पक्की रसीद एक माह के अंदर भेजी जाएगी।

पुस्तक समीक्षा

कोलकाता : भोजपुरी पत्रिका पहरुआ

कोलकाता से एक पत्रिका पहरुआ का प्रकाशन शुरू हुआ है। प्रवेशांक से ही पत्रिका ने यह संकेत दे दिया है कि सुविचारित, गंभीर सरोकारों व विश्व की तमाम चुनौतियों व ज्ञान-विज्ञान पर भोजपुरी में सुगमता से लिखा जा सकता है। भाषा बंधन नहीं साधन होती है, इस अंक में जहां आगत लोकसभा चुनाव को आवरण कथा बनाया गया है वहीं असम व बिहार में भोजपुरी भाषियों के साथ विदेशी घुसपैठियों जैसे हो रहे व्यवहार की पड़ताल व उसके कारणों की चर्चा, विमलराय व श्री प्रभाकर मणि तिवारी ने की है। इस अंक के विशेष रचनाकार मनोज भावुक हैं जिनकी गजलें व नाटक पर लेख इसमें है। नूर मोहम्मद नूर की कहानी, अंजय होमर व एस आनन्द के समकालीन विषयों पर स्तम्भ लेख, गोपाल प्रसाद, जयनारायण की कविताएं, विवेक राय, कृष्ण गोपाल सिन्हा का आलेख उल्लेखनीय है।

- समीक्षक - अभिज्ञात, पत्रिका- मासिक, पहरूआ/सम्पादक-विमल राय दुर्गालेन, आदर्शनगर (कोन्नगर), पोस्ट- बड़ाबहेरा, जिला- हुगली- ७१२२४६
मूल्य - १० रुपये

प्रपत्र - ४

समाचार पत्र पंजीयन केन्द्रीय कानून १४५६ (संशोधित) के आठवें नियम के साथ पढ़ी जाने वाली प्रेस तथा पुस्तक कानून की धारा १४ डी उपधारा (बी) के अन्तर्गत समाज-विकास (मासिक) कोलकाता, नामक समाचार पत्र से सम्बन्धित तथा स्वामित्व एवं अन्य बातों का ब्यौरा :-

प्रकाशन का स्थान	: १५२ बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७००००७
प्रकाशन की अवधि	: मासिक
मुद्रक का नाम	: श्री भानीराम सुरेका
राष्ट्रीयता	: भारतीय
पता	: ८, कैमक स्ट्रीट, कोलकाता- ७०००१६
सम्पादक का नाम	: श्री नन्दकिशोर जालान
राष्ट्रीयता	: भारतीय
पता	: २६, अमहर्स्ट स्ट्रीट, कोलकाता- ७००००९
मालिक	: अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन १५२बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७००००७

मैं, भानीराम सुरेका, घोषित करता हूँ कि मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सही हैं।

- भानीराम सुरेका
प्रकाशक के हस्ताक्षर

२५.३.२००४

From India's most modern textile complex
ONLY VIMAL

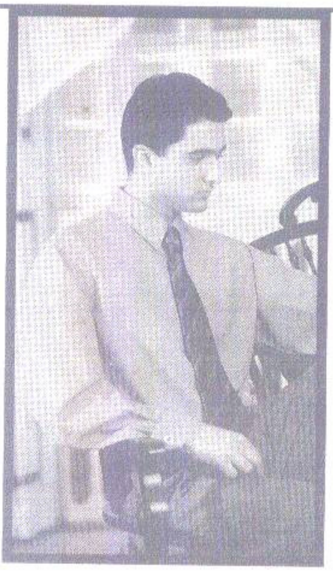

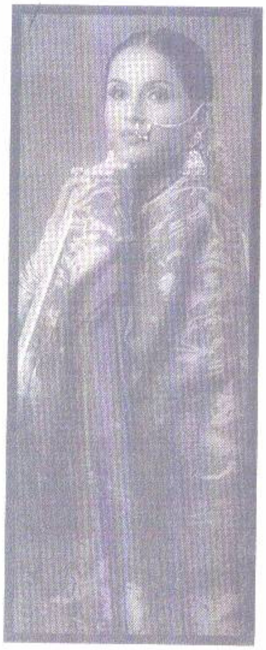

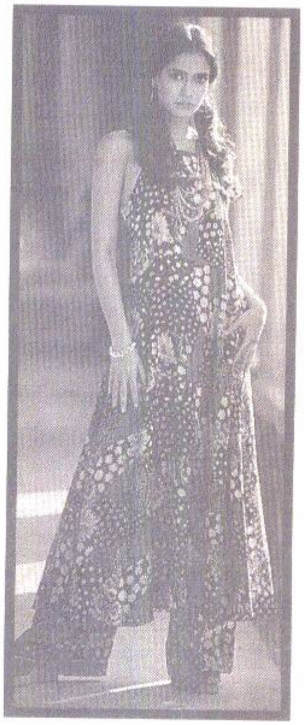

ONLY VIMAL

Mudra:RIL 99/393

VIMAL®
A RELIANCE PRODUCT

Suitings
Shirtings
Sarees
Dress Material

Reliance Industries Limited
Textile Division, Naroda, Ahmedabad 382330.

REGISTERED Postal Registration No. MM&PO/WB/RNP-388/2003 SAMAJ VIKAS - MARCH 2004 RNI Regd. No. 2868/68

देश के प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू की भविष्यवाणी जो आज भी शत प्रतिशत देश के राजनेताओं को मार्गदर्शन कराती है

हम एक नये युग के द्वार पर खड़े हैं। मानवता के सामने विशाल शक्ति-साधन मौजूद हैं जिनसे समूचे समाज का ढांचा ही बदल जायेगा।

बार-बार मुझे उस समय का ध्यान आता है जब दुनिया में पहले पहल बारूद का आविष्कार हुआ। यह मध्य युग की बात है। उससे समाज के आर्थिक और राजनैतिक तंत्र को बदलने में किसी हद तक सहायता मिली। निस्संदेह उस समय और भी बहुत-सी शक्तियां काम कर रही थीं, पर बारूद के आविष्कार का समाज पर गहरा असर पड़ा। इसी के परिणामस्वरूप पूंजीवादी व्यवस्था खड़ी हुई। मुझे लगता है कि अब अणु बम भी उसी नयी समाज-रचना का अग्रदूत बनेगा जो वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार बननी चाहिए।

मुझे विश्वास है कि दुनिया में अब ऐसे बुनियादी परिवर्तन आने वाले हैं जिनसे समाज के ऊपर-ऊपर वाले चंद लोगों को ही नहीं बल्कि प्रत्येक व्यक्ति को विकास पाने का मौका मिलेगा। मेरा विचार है कि अपनी योजनाओं के सहारे हम इन प्रवृत्तियों को ठीक दिशा में और वैज्ञानिक ढंग से आगे ले जा सकते हैं। निस्संदेह, विज्ञान केवल व्यक्ति की सत्य के लिए खोज ही नहीं है। उसका समाज के लिए उपयोग हो सके तभी उसका यथार्थ मूल्य है। विज्ञान का ध्येय ही समाज की बुराइयां दूर करना रहेगा।

भूखे व्यक्ति के सामने सत्य की कोई हस्ती नहीं। उसे तो रोटी चाहिए। भूखे व्यक्ति के सामने ईश्वर का भी कोई मूल्य नहीं। भारत एक भूखा देश है : यहां के करोड़ों व्यक्तियों के सामने सत्य, ईश्वर या अन्य बड़ी-बड़ी और अच्छी बातों का जिक्र करने का मतलब है उनके साथ दिल्लगी करना। हमें उनके लिए रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि जीवन की मूलभूत आवश्यकताएं मुहैय्या करनी हैं। इसलिए विज्ञान का उपयोग समाज के हित के लिए होना चाहिए। यही इस विज्ञान युग की नयी समाज-रचना का आधार और उद्देश्य होना चाहिए।

From :
All India Marwari Federation
152B, M.G. Road, Kolkata-7
Phone : 2268-0319

To,